تقويةُ الإيمان

तक़वीयतुल ईमान

शाह इस्माईल शहीद (रह०)

लेखक

शाह इस्माईल शहीद (रह०)

अनुवादक

अहमद नदीम नदवी
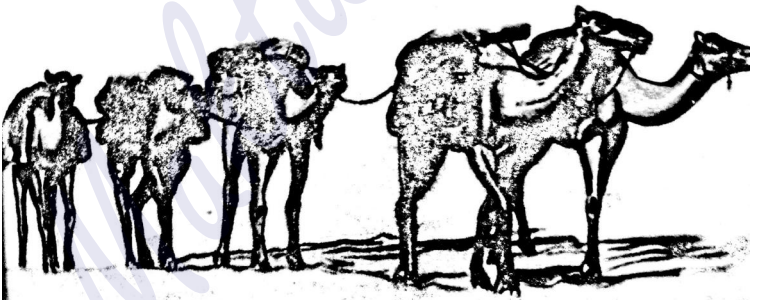
www.idaraimpex.com

पुस्तक का नाम : तक़्वीयतुल ईमान

लेखकः शाह इस्माईल शहीद (रह०)

Taqwiyatul Imaan

प्रकाशन : 2013

ISBN: 81-7101-534-4

TP-184-13

Published by Mohammad Yunus for
IDARA IMPEX
D-80, Abul Fazal Enclave-I, Jamia Nagar
New Delhi-110 025 (India)
Tel.: 2695 6832 Fax: +91-11-6617 3545
Email: **sales@idaraimpex.com**
Visit us at: **www.idarastore.com**

Designed & Printed in India

Typesetted at: **DTP Division**
IDARA ISHA'AT-E-DINIYAT
P.O. Box 9795, Jamia Nagar, New Delhi-110025 (India)

विषय-सूची

बिस्मिल्लाहिर्रहमाननिर्रहीम

तक़्वीयतुल ईमान

पब्लिशर की ओर से

हिन्दुस्तान के अंधेरे माहौल में रुश्द व हिदायत की रोशनी बिखेरने के लि
अल्लाह ने अपने ख़ास फ़ज़्ल से एक ऐसी शख़्सियत को पैदा फ़रमाया, जि
अपने ईमान की ताक़त और इल्म व तक़रीर के ज़ोर से कुफ़्र और गुमराही
बड़े-बड़े बुतकदों को तोड़ -फोड़ डाला और शिर्क और बिदअतों की अपनी ग
हुई मूर्तियों को टुकड़े-टुकड़े कर ख़ालिस तौहीद की बुनियाद डाली। यह श
वलीयुल्लाह देहलवी के पोते शाह इस्माईल शहीद मुहद्दिस देहलवी थे, जो अ
वक़्त के सबसे क़ाबिल और नामी शख़्सियतों में से भरोसे के लायक़ इल
हैसियत के मालिक थे। शैख़ुल इस्लाम इमाम इब्ने तैमिया और मुहम्मद बि
अब्दुल वह्हाब के बाद 'दावत व इस्लाहे उम्मत' के लिए उनकी ख़िदमतें न भूल
के क़ाबिल हैं, ख़ास तौर से इस एतबार से तो उनका दर्जा बढ़ा हुआ है ।
उन्होंने न सिर्फ़ क़लम से जिहाद किया, बल्कि अमली तौर पर हज़रत सैय
अहमद शहीद की सरबराही में मुजाहिदीन की तहरीक में शामिल होकर सिर
के ख़िलाफ़ जिहाद करते हुए बालाकोट के मक़ाम पर शहादत का दर्जा हासि
किया और हिन्दुस्तान के कमज़ोर और महकूम मुसलमानों के लिए तर्बियत व
एक बड़ी मिसाल क़ायम की।

हज़रत शाह इस्माईल शहीद का दौर शिर्क और बिदअतों की ज़हरील
फ़िज़ाओं में लत-पत दौर था, हिन्दुस्तानी मुसलमानों ने ग़ैर-मुस्लिमों के देवमाला
अक़ीदों से मुतास्सिर होकर दीने इस्लाम में ऐसी-ऐसी रस्मों और अक़ीदों क
दाख़िल कर लिया था कि इस्लाम आने से पहले की जिहालत का दौर भी उसके
आगे मात था, हज़रत शाह इस्माईल शहीद की दीनी हैसियत और ईमानी ग़ैरत
कब गवारा कर सकती थी कि इस्लाम, जो बन्दों के ज़रिए अल्लाह के एक होने

का इकरार करने के लिए आया है और रिसालत पर ईमान लाने का असल मक़्सद भी यही है, उसमें किसी ग़ैर की शिर्कत अख़्तियार की जाए। चुनांचे इस बड़े मक़्सद के लिए उन्होंने 'तक़वीयतुल ईमान' लिखी, जिसमें क़ुरआन व हदीस की तर्जुमानी के साथ खालिस इस्लामी अक़ीदे को बयान फ़रमाया और किताब व सुन्नत ही की रोशनी में इन तमाम बिदअतों और रस्मों को जिहालत की जड़ क़रार देते हुए मुसलमानों को उससे बचने की हिदायत फ़रमाई।

अपने इन्हीं मक़्सदों के साथ-साथ इस किताब का अन्दाज़े बयान (अपने वक़्त की ज़रूरत के मुताबिक़) अपनी सादगी, रवानी और दिलनशीनी की वजह से इतना मक़्बूल हुआ कि अब तक यह लाखों की तायदाद में छप कर करोड़ों गुमराहों को हिदायत के नूर से फ़ैज़ पहुंचा चुकी है।

तक़्वीयतुलईमान की कुल मिलाकर ख़ूबियों और उसकी अहमियत भरी तफ़्सील पर मौलाना गुलाम रसूल मेहर (मरहूम) का ज़ोरदार मुक़दमा किताब में शामिल है, इसलिए इसकी मौजूदगी में तक़्वीयतुल ईमान पर कुछ लिखना सिर्फ़ क़लम चलाना होगा।

हम सिर्फ़ इतना अर्ज़ करना चाहते हैं कि किताब को मौलाना मरहूम के ख़्यालात के साथ ही उसकी तमाम पिछली ख़ूबियों के साथ छापा जा रहा है, अलबत्ता आज के दौर की ज़रूरत को देखते हुए कहीं-कहीं लफ़्ज़ और बयान की कुछ एक तब्दीलियां की गई हैं। हमें उम्मीद है कि किताब पढ़ने वाले न सिर्फ़ इन तब्दीलियों को ग़वारा फ़रमाएंगे, बल्कि इस किताब में बयान की हुई हक़ीक़तों को समझाने में उनको और आसानी रहेगी। बहरहाल तक़्वीयतुल ईमान को ज़्यादा से ज़्यादा ख़ूबसूरत और दिलनशीं बनाने की कोशिश की गई है। अल्लाह तआला हमें सीधे रास्ते पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन।

—पाब्लिशर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अपनी बात

तक़्वीयतुल ईमान के लेखक शाह मुहम्मद इस्माईल रहमतुल्लाहि अलैहि, शाह अब्दुल ग़नी रहमतुल्लाहि अलैहि के इकलौते बेटे शाह वलीयुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि मुहद्दिस देहलवी के पोते, शाह अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाहि अलैहि मुहद्दिस, शाह रफ़ीउद्दीन रहमतुल्लाहि अलैहि मुहद्दिस और शाह अब्दुल क़ादिर रहमतुल्लाहि अलैहि मुहद्दिस के भतीजे थे, पाक व हिन्द की फैली सरज़मीन में इल्म व फ़ज़्ल, दरस-तदरीस, तस्नीफ़ व तालीफ़, वाज़ व इर्शाद, तज्दीदे दीन, इस्लाम ज़िंदा करने और उम्मत की इस्लाह की ऐसी बुलन्द निस्बतें शायद ही किसी के हिस्से में आई हों, जो शाह इस्माईल रहमतुल्लाहि अलैहि को मिली और ऐसी क़ीमती मीरास भी बहुत कम लोगों को मिली होगी। शाह इस्माईल ने इन निस्बतों की बुलन्दी और इसकी मीरास की क़ीमत को न सिर्फ़ यह कि क़ायम रखा, बल्कि अमली तौर पर उनकी ज़ीनत व आराइश को कई दर्जे बेहतर और रोशन बना दिया।

शाह इस्माईल रहमतुल्लाहि अलैहि सनद वाली रिवायत के मुताबिक़ 12 रबीउल अव्वल 1193 हि0 (26 अप्रैल 1779 ई0) को पैदा हुए, गोया अपने पीर व मुर्शिद अमीरुलमोमिनीन सैयद अहमद बरेलवी रहमतुल्लाहि अलैहि से कम व बेश सात साल बड़े थे, मां का नाम बीबी फ़ातिमा रहमतुल्लाहि अलैहा था।[1]

---

1. मीर शहामत अली ने, 'तक़्वीयतुल ईमान' के अंग्रेजी तर्जुमे के शुरू में शाह शहीद की पैदाइश की तारीख़ 28 शव्वाल 1195 हि० लिखी है और आपकी मां का नाम फ़ज़ीलतुन्निसा (बिन्त मौलवी अलाउद्दीन फुलती) बताया है। बेशक शाह साहब की ननिहाल फुलत ही में थी और उनकी बहन बीबी रुक़ैया की पहली शादी फुलत ही में उनके मामूं के बेटे मौलवी कमालुद्दीन से हुई, लेकिन शाह साहब की पैदाइश की तारीख और मां के नाम से मुताल्लिक़ सही बयान वही है जो ऊपर दर्ज हुआ। मीर शहामत अली की रिवायत कहां से चली, हमें मालूम न हो सकी। उन्होंने शाह साहब के हालात में और भी कई ऐसी बातें लिखी हैं, जो सही नहीं।

तालीम व तर्बियत

शाह साहब ने शुरूआती तालीम अपने बाप से पाई। आठ साल की उम्र में क़ुरआन के हाफ़िज़ बन गए। 16 रजब 1203 हि0 (12 अप्रैल 1789 ई0) को शाह अब्दुल ग़नी रहमतुल्लाहि अलैहि ने वफ़ात पाई, जब शाह शहीद सिर्फ़ दस वर्ष के थे, तीनों चचा (शाह अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाहि अलैहि, शाह रफ़ीउद्दीन रहमतुल्लाहि अलैहि और शाह अब्दुल क़ादिर रहमतुल्लाहि अलैहि) यतीम भतीजे को मुहब्बत भरी गोद में लाने के लिए एक साथ तैयार थे, लेकिन रस्म के तौर पर यह ज़िम्मेदारी शाह अब्दुल क़ादिर रहमतुल्लाहि अलैहि ने उठाई, जिनकी अपनी औलाद में सिर्फ़ एक लड़की थी। शाह इस्माईल रहमतुल्लाहि अलैहि ने दरसी किताबें उन्हीं से पढ़ीं। तमाम राइज इल्मों में वह दर्जा हासिल कर लिया जो उनके ज़माने में पढ़ने-पढ़ाने का आख़िरी दर्जा समझा जाता था। शाह अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाहि अलैहि से हदीस की सनद ली और 15-16 साल की उम्र में पढ़ कर फ़ारिग़ हो गए।

सर सैयद अहमद ख़ां के बयान के मुताबिक़ शुरू में बेनियाज़ी का यह हाल था कि याद ही न रहता था कि सबक़ कहां से शुरू होगा, कभी असल जगह से बाद की इबारत शुरू कर देते, शाह अब्दुल क़ादिर टोकते तो जवाब में कह देते कि मतलब आसान समझ कर न पढ़ा । शाह अब्दुल क़ादिर छोड़े हुए हिस्से में से कुछ पूछते तो शाह शहीद ऐसी तक़रीर फ़रमाते कि सब लोग सुनकर हैरान रह जाते। कभी असल जगह से पहले सबक़ शुरू कर देते। शाह अब्दुल क़ादिर रहमतुल्लाहि अलैहि की तंबीह होती, तो शाह शहीद रहमतुल्लाहि अलैहि ऐसे शुबहे बयान कर देते कि फ़ाज़िल उस्ताद को भी उनके जवाब में ख़ास तवज्जोह करनी पड़ती।

ग़ैर मामूली ज़हानत की धूम शहर भर में थी। फ़ारिग़ होने के बाद लोग आज़माने के लिए राह चलते सवाल पेश कर देते, ख़्याल यह होता कि किताब पास नहीं, इसीलिए मुतमइन करने वाला जवाब न दे सकेंगे, लेकिन शाह शहीद बे-झिझक तक़रीर शुरू कर देते और मस्अले की ऐसी तशरीह फ़रमाते कि पूछने वाले को अपनी जुर्रात पर शर्मिंदगी होती।

मौलाना मुहम्मद खान आलम मद्रासी रहमतुल्लहि अलैहि ने मौलाना सैयद मुहम्मद अली रामपुरी रहमतुल्लाहि अलैहि के बयान के मुताबिक़ लिखा है कि शाहशहीद ज़बरदस्त आलिम और क़ुरआन के हाफ़िज़ थे। तीस हज़ार हदीसें उनकी जुबान की नोक पर थीं।[1]

सैयद साहब रहमतुल्लाहि अलैहि की बैअ़त

शाह शहीद रहमतुल्लाहि अलैहि के इल्म व फ़ज़्ल की शोहरत अगरचे आम थी, लेकिन उसके साथ तबियत में एक-गूना बे-परवाई पाई जाती थी, यानी उन्होंने कोई मुस्तक़िल मश्ग़ला अख़्तियार न किया था, शायद इसकी वजह यह हो कि खानदान में जिन मश्ग़लों का रिवाज था उन्हें वह इस्लाह के मक़सद के लिए काफ़ी न समझते थे और कोई नया मश्ग़ला सामने न था, यह समझ लीजिए कि वह अपने दिल में एक प्रोग्राम का फ़ैसला कर चुके थे और साथियों और मददगारों की तलाश में रुके हुए थे। यह हालत थी कि 1224 हि0 (1819 ई०) में अमीरुल मोमिनीन सैयद अहमद बरेलवी रहमतुल्लाहि अलैहि, नवाब अमीर खां टौंक के मालिक का साथ छोड़कर राजपूताना से दिल्ली पहुंचे और अकबराबादी मस्जिद में ठहरने से पहले मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ फुलती ने, जो शायद शाह वलीयुल्लाह के भाई अहलुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि के पोते थे, फिर शाह अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाहि अलैहि के दामाद मौलाना अब्दुल हई रहमतुल्लाहि अलैहि और उनके बाद शाह शहीद ने सैयद साहब से बैअत की, उसी वक़्त से शाह शहीद की ज़िंदगी बिल्कुल बदल गई। वह रात दिन इस्लाह व इर्शाद में मसरूफ़ रहने लगे। जुमा और सनीचर को शाही मस्जिद में पाबन्दी से वाज़ फ़रमाते। सर सैयद ने लिखा है कि नमाज़ जुमा के लिए लोग इतनी बड़ी तायदाद में आने लगे, जैसे दोनों ईदों की नमाज़ में आते थे। सुनने वालों की गिनती न हो सकती थी, वाज़ का तरीक़ा ऐसा था कि जो कुछ फ़रमाते, दिलों में बैठ जाता। अगर किसी बात पर कोई खलिश पैदा भी होती, तो आगे चलकर बिल्कुल दूर हो जाती। सुन्नत को ज़िंदा करना और शिर्क व बिदअत को रद्द करना वाज़ों का खास मौज़ू

1. तंबीहुल ग़ाफ़िलीन अन तरीक़े सैयदिल मुर्सलीन, क़लमी नुसख़ा, पृ० 16

होता। यही दौर था जिसमें दीन के ज़िंदा करने का काम पूरी सरगर्मी से शुरू हुआ। यही दौर था जिसके बारे में मौलाना अबुल कलाम आज़ाद रहमतुल्लाहि अलैहि ने 'तज़्किरा' में लिखा–

'दावत और उम्मत की इस्लाह के जो भेद पुरानी दिल्ली के खंडहरों और कोटला के हुजरों में दफ़न कर दिए गए थे, अब इस वक़्त के सुलतान और सिकन्दर आज़म की बदौलत शाहजहानाबाद के बाज़ारों और जामा मस्जिद की सीढ़ियों पर उनका हंगामा मच गया और हिन्दुस्तान के किनारों से भी गुज़र कर नहीं मालूम, कहां-कहां तक चर्चे और अफ़साने फ़ैल गए, जिन बातों के कहने की, बड़ों-बड़ों को बन्द कमरों के अन्दर भी ताब न थी, वे अब भरे बाज़ार में कही जा रही थीं और हो रही थीं और शहादत के खून की छींटें हर्फ़ व हिकायत के नक़्श व निगार दुनिया के सफ़हे पर बना रही थीं।

हज का सफ़र

शव्वाल 1226 हि० (जुलाई 1821ई०) में अमीरुल मोमिनीन सैयद अहमद रहमतुल्लाहि अलैहि ने हज का इरादा किया। समुद्री सफ़र में हलाकत के ख़तरे की बुनियाद पर अलग-अलग उलेमा ने हज के फ़र्ज़ के ख़त्म होने का फ़त्वा दिया था और कुछ लोग तो यह कहने लगे थे 'व ला तुलक़ू बिऐदी कुम इलत्तहलुकः![1]' की रोशनी में हज का मक़सद (मआज़ल्लाह) मासियत (नाफ़रमानी) है, इस फ़ित्ने के ख़त्म करने की एक शक्ल यह थी कि तहरीर व तक़रीर के ज़रिए इसको रद्द किया जाता, सैयद साहब, शाह इस्माईल रहमतुल्लाहि अलैहि, मौलाना अब्दुल हई रहमतुल्लाहि अलैहि शाह अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाहि अलैहि और दूसरे उलेमा-ए-हक़ ने इस ज़िम्मेदारी को पूरा करने में कोई कसर उठा न रखी। दूसरी शक्ल यह है कि एक अमली क़दम उठा कर इस बड़े देश की फ़िज़ा में हज अदा करने का आम शोर पैदा कर दिया जाता, ताकि लोगों के दिलों में शौक़ व रग़बत के वलवले बेदार हो जाते। हज़रत सैयद अहमद रहमतुल्लाहि अलैहि अज़्म व हिम्मत वाले आदमी थे, उन्होंने पूरी हिम्मत के साथ दूसरे रास्ते में भी क़दम

1. तज़्करा, पहला एडिशन, न0 2, अल-बक़रा 195

उठाया और कमाल यह किया कि हज के लिए मुल्क के तमाम मुसलमानों को दावत दे दी कि किसी के पास रास्ते का ख़र्च हो या न हो, वह तैयार हो जाए। मैं ज़िम्मा लेता हूं कि उसको हज करा लाऊंगा, गोया हज के फ़र्ज़ होने के राज़ को ही सब पर खोल दिया, यानी यह कि यह फ़र्ज़ आसानी से अदा हो सकता है, शर्त यह है कि इसे खुदा का हुक्म समझ कर सच्चे मुसलमान की तरह पूरा करने का इरादा कर लिया जाए।

चुनांचे सैयद साहब साढ़े सात सौ मुसलमानों के क़ाफ़िले के साथ हज के लिए रवाना हुए, शाह शहीद, उनकी बुज़ुर्ग मां और मोहतरमा बहन भी साथ थीं, दस जहाज़ किराए पर लिए। हर जहाज़ की जमाअत के लिए एक अमीर मुक़र्रर फ़रमाया, कलकत्ता से रवाना हुए, हज व ज़ियारत के बाद शाबान 1239 हि० (अप्रैल 1824 ई०) में वापस तशरीफ़ लाए। इस सफ़र में एक जहाज़ की जमाअत के अमीर शाह इस्माईल शहीद रहमतुल्लाहि अलैहि थे।

जिहाद की दावत

हज से वापसी के बाद शाह शहीद अपने मुर्शिद के फ़रमान के मुताबिक़ पूरे तौर पर जिहाद की दावत के लिए वक़्फ़ हो गए। सर सैयद ने लिखा है—

सैयदे अस्फ़िया यानी पीरे तरीक़े हुदा के इर्शाद के मुताबिक़ इस तरह से तक़रीर व वाज़ की बुनियाद डाली कि जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह के बहुत से मस्अले बयान होते, यहां तक कि आपकी मंझी हुई तक़रीर से मुसलमानों के बातिन का आईना साफ़ व सुथरा हो गया और वे इस तरह से राहे हक़ में सरगर्म हुए कि हर आदमी बे-अख़्तियार चाहने लगा कि सर उसका राहे हक़ में फ़िदा रहे और जान उसकी दीने मुहम्मदी का झंडा बुलन्द करने में लगे।

हिजरत

कम व बेश पौने दो साल इस दावत में लगे, जब जगह-जगह मुजाहिदों की जमाअतें तैयार हो गईं तो ग़ौर व फ़िक्र के बाद सरहद से शुरूआत का फ़ैसला हुआ, जहां पंजाब की सिख हुकूमत ने यूरिशें शुरू की थीं।

7 जुमादुल उख़रा सन् 1241 हि० (17 जनवरी 1826 ई०) को शाह शहीद

रहमतुल्लाहि अलैहि के साथ जिहाद की ग़रज़ से हिजरत के रास्ते में क़दम रखा, उस वक़्त सिर्फ़ पांच-छः सौ आदमी साथ लिए थे। फ़ैसला यह था कि तज्वीज़ किए गए मर्कज़ में पहुंच कर हालात के जायज़े के बाद बाक़ी जमाअतों को बुला लेंगे। शाह शहीद इस सफ़र के दौरान आम तंज़ीमी और तब्लीग़ी मक़्सदों के ख़ास ज़िम्मेदार थे।

यह जमाअत रायबरेली से बुन्देलखंड, ग्वालियर, टौंक, अजमेर, मारवाड़ के जंगलों, उमर कोट, हैदराबाद (सिंध), शिकार पुर, कोयटा-कंधार, ग़ज़नी और काबुल होती हुई पेशावर पहुंची, यह कम व बेश 3 हज़ार मील का सफ़र था। इस में तपते हुए सेहरा भी थे, जहां मीलों तक पानी का निशान न मिलता था, बड़े-बड़े दरिया भी थे, दुश्वार गुज़ार पहाड़ और बरफ़िस्तान भी। दस महीने इस सफ़र को तै करने में लगे।

जिहाद

20 जुमादल अव्वल 1242 हि० (20 दिसम्बर 1826) को तलवार से जिहाद की शुरूआत हुई। इस सिलसिले में शाह शहीद के ख़ास और मशहूर कारनामों की थोड़ी सी क़ैफ़ियत नीचे दर्ज है—

1. इन्हीं की कोशिशों से सरहद वालों ने सैयद साहब के हाथ पर जिहाद की इमारत की बैअत की और सरहद में उलेमा या अकाबिर से जितनी बातें हुईं उनमें से अक्सर शाह शहीद ही ने कीं।

2. ज़िला हज़ारा में जिहाद की तंज़ीम उन्हीं ने फ़रमाई। शंक्यारी की लड़ाई में उनके साथ अगरचे सिर्फ़ दस ग्यारह मुजाहिद थे, फिर भी ग़ैर मामूली जमाव से सिखों की ख़ासी बड़ी फ़ौज को हरा दिया। इस लड़ाई में शाह शहीद की क़बा गोलियों से छलनी हो गई और एक उंगली पर गोली का घाव लगा। बाद में उस उंगली की तरफ़ इशारा करते हुए मज़ाक़ में फ़रमाया करते थे कि यह हमारी शहादत की उंगली है।

3. उन्हीं की कोशिशों से शरीअत क़ायम करने के लिए बैअत का इन्तिज़ाम हुआ और सरहद के लोग पहली बार सही शरई हुकूमत की बरकतों से भर उठे।

4. उन्हीं की रहनुमाई में अम्ब, अश्रा, मरदान और मायार की लड़ाइयों में

नुमायां जीतें मिलीं, पेशावर की जीत के बाद सुलतान मुहम्मद खां बारक ज़ई से बातचीत के लिए भी सैयद साहब ने इन्हीं को नामज़द फ़रमाया था।

5. ग़रज़ परस्तों की दुश्मनी की वजह से इलाक़ा सरहद में हालात नाज़ुक शक्ल आख़्तियार कर गए और सैयद साहब ने उस मर्कज़ को छोड़ कर दुश्वार गुज़ार रास्तों से कश्मीर ही का क़स्द फ़रमाया तो शाह शहीद भी साथ थे।

6. कश्मीर के सफ़र के सिलसिले में 26 ज़ीक़ादा 1246 हि० (6 मई 1831 ई०) को बालाकोट की लड़ाई हुई, जिसमें सैयद साहब, शाह शहीद और ज़्यादा तर मुजाहिद शहीद हो गए।

बिना कर दन्द ख़ुश रस्मे बख़ाक व ख़ून ग़लतीदन
ख़ुदा रहमत कुनद ईं आशिक़ाने पाक तीनत रा।

सीरत की एक झलक

जहां तक मालूम हो सका है शाह शहीद ने मईशत (खाने-पीने) के मामले में तकल्लुफ़ात को कभी पसन्द न फ़रमाया। सैयद साहब से जुड़े रहने के बाद तो वह आमदनी के छोटे दर्जे में ही इतना ख़ुश थे, गोया शहंशाही के तख़्त पर बैठे हैं। हज के सफ़र में कलकत्ता पहुंचे तो ईस्ट इंडिया के वकील मुंशी अमीनुद्दीन अहमद रहमतुल्लाहि अलैहि मुलाक़ात के लिए आए। वह उस ज़माने में कलकत्ता के बहुत बड़े रईस माने जाते थे। सैयद साहब से मिलने के बाद उन्होंने पूछा कि शाह इस्माईल रहमतुल्लाहि अलैहि कहां हैं, यह एक नाव से उतर कर सैयद साहब की नाव की तरफ़ आ रहे थे। कपड़े मैले हो चुके थे। लोगों ने उनकी तरफ़ इशारा किया। मुंशी अमीनुद्दीन रहमतुल्लाहि अलैहि ने समझा, यह कोई और इस्माईल होंगे और कहा, मैं शाह इस्माईल रहमतुल्लाहि अलैहि को पूछता हूं जो शाह अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाहि अलैहि के भतीजे हैं। जब उन्हें बताया गया कि शाह साहब यही हैं तो उनकी सादगी और बेतकल्लुफ़ी देख कर मुंशी साहब की आंखों में बे-अख़्तियार आंसू आ गए।

सैयद साहब ने सवारी के लिए शाह साहब को घोड़ा दे दिया था, लेकिन जब किसी काम पर जाते तो अपने घोड़े पर किसी रफ़ीक़ (साथी) को सवार कर देते और ख़ुद पैदल चलते कि दीन का काम है, जितनी ज़्यादा मशक़्क़त उठाएंगे,

ज़्यादा सवाब मिलेगा।

सैयद साहब से उनकी अक़ीदत जग ज़ाहिर है लोगों ने इस सिलसिले में दास्तानें बहुत सी गढ़ रखी हैं। वे सही हों या न हों, लेकिन इसमें शुबहा नहीं कि शाह साहब को सैयद साहब से बे-इंतिहा अक़ीदत थी, इस अक़ीदत के बाद भी शाह साहब की हक़ गोई (सच बोलने) पर कभी असरंदाज़ न हो सकी। एक बार क़िला अम्ब के लिए ख़तरा पैदा हो गया था, उसमें सैयद साहब की बीवी और दूसरी औरतें भी थीं। सैयद साहब को लिखा कि औरतें दूसरी महफ़ूज़ जगहों पर भेज दी जाएं, ताकि लड़ाई के वक़्त मुजाहिदों के लिए कोई परेशानी मुम्किन न रहे। शाह साहब समझते थे कि औरतों को निकाला गया तो आस-पास के आम लोगों पर बुरा असर पड़ेगा और वे समझेंगे कि ख़तरा सिर पर आ गया हैं, इसलिए सैयद सहाब की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि यह क़दम मस्लहत के ख़िलाफ़ है। सैयद सहाब ने अपने हुक्म को दोहराया तो शाह साहब ने साफ़-साफ़ लिख दिया कि इस हुक्म पर चलने से मुसलमानों को चोट पहुंची, तो क़ियामत के दिन, उसके जवाबदेह होंगे। सैयद साहब ने हुक्म वापस ले लिया।

उम्र अगरचे ज़्यादा न थी, लेकिन ख़िदमते दीन की राह में लगातार मशक़्क़तें उठाते-उठाते जिस्म निहायत कमज़ोर हो गया था। आख़िरी दौर के हालात से मालूम होता है, एक बार ज़म्बूरक उठवा कर इस ग़रज़ से इसरार करके अपने कंधे पर रखवाई कि लोगों में अज़ीमत का जज़्बा पैदा हो, मगर बोझ से पांव लड़खड़ाने लगे। पहाड़ पर चढ़ते थे तो कुछ क़दम चलने से सांस फूल जाता था, इस हालत के बावजूद आख़िरी दम तक ऐसा कोई मौक़ा न आया कि वह जंग या सफ़र में किसी से पीछे रहे हों या जंग के मक़्सदों के सिलसिले में उन्होंनें ज़रूरत के वक़्त दो-दो मंज़िलें एक दिन में तै न की हों।

सरहद में अलग-अलग मौक़ों पर बड़े अहम दीनी, जंगी और सियासी मसूअले पेश आए। शाह साहब बे-तकल्लुफ़ उन्हें हल करते रहे, अगरचे मशहूर है कि एक मौक़े पर वह घोड़े को खरेरा कर रहे थे, तो कुछ लोगों ने उनसे कुछ दीनी मामलों के बारे में पूछा। उन्होंने खरेरा जारी रखा और इन पूछने वालों को इत्मीनानबख़्श जवाब दे दिया।

सैयद जाफ़र अली नक़वी रहमतुल्लाहि अलैहि ने लिखा है कि बाला कोट में उनके पीछे दोगाना अदा किया। उन्होंने दोनों रक्अतों में पूरी सूरः बनी इसराईल पढ़ी और इस क़ैफ़ियत में पढ़ी कि छोटी उम्र से आज तक (लिखते वक़्त तक) किसी इमाम के पीछे किसी नमाज़ में वह लज़्ज़त नसीब न हुई। यह नमाज़ उम्र भर न भूलेगी।[1]

फ़ हल मिम मुद्दकिर? (क्या है कोई याददेहानी लेने वाला?)

यह शाह इस्माईल रहमतुल्लाहि अलैहि थे, जिनकी ज़िंदगी का एक-एक लम्हा हक़ के कलिमे को ज़िंदा करने में लगा, जिन्होंने दुनिया के हर आराम को बिना झिझके दीन की ख़िदमत के लिए लगा दिया और पूरे ख़ुलूस के साथ लगा दिया। इस तराज़ू में अगर हम अपने अल्लाह पर ईमान और अपने दीन की हमीयत को तोलें तो नतीजा क्या निकलेगा? फिर इससे बढ़ कर बद-बख़्ती और बद-क़िस्मती क्या हो सकती है कि सैंकड़ों मस्नद नशीनी करने वाले और सैकड़ों सज्जादे इस बुज़ुर्ग मुजाहिद को सवा सौ वर्ष तक हर क़िस्म के तानों (व्यंग्यों) का शिकार बनाते और इस्लाम से उसकी मुहब्बत ही नहीं इस्लाम के लिए भी सवालिया निशान पैदा करते रहे, हम सब ने इन तानों को इस शौक़ और चाहत से सुना कि गोया दीन की हिफ़ाज़त और पारसाई का एक ही कारनामा था।

औलाद

शाह अब्दुल क़ादिर ने अपनी नवासी बीबी कुल सूम रहमुतल्लाहि अलैहि से शाह शहीद का निकाह कर दिया और सिर्फ़ एक बच्चा हुआ, जिसका नाम शाह मुहम्मद उमर रहमतुल्लाहि अलैहि था। उस की पूरी ज़िन्दगी नीम मज्ज़ूब जैसी गुज़री।

1. मंज़ूरा, पृ० नं 1143

किताबें

शाह शहीद की बहुत सी किताबें हैं–

1. उसूले फ़िक़्ह में एक रिसाला, जो छप चुका है,

2. मंतिक़ में एक रिसाला, जिसका ज़िक्र सर सैयद अहमद ख़ां ने किया है।

3. ईज़ाहुल हक़्क़िस्सरीह फ़ी अह्कामिल मैयत वज़्ज़रीह।

तस्क़ीक़ करने वालों का बयान है कि बिदअत की हक़ीक़त के बारे में ऐसी कोई किताब किसी ज़ुबान में न लिखी गई, अफ़सोस यह मुकम्मल न हो सकी। उर्दू तर्जुमे के साथ दो-तीन बार छप चुकी है।

4. 'मंसबे इमामत' यह भी बहुत अच्छी कितब है। फ़ारसी नुस्ख़े (प्रतियां) अब कम मिलते हैं, अलबत्ता उर्दू तर्जुमा मिलता है।

5. तन्वीरुल ऐनैन फ़ी इस्बाति रफ़इलयदैन, इसमें वे हदीसें जमा कर दी गई हैं, जिनसे रफ़अ यदैन का सुन्नत होना साबित है। उर्दू तर्जुमे के साथ कई बार छप चुकी है, और अब हाल में इसका अरबी एडीशन मय हाशिया मर्कज़ी जमीयत अहले हदीस पश्चिमी पाकिस्तान के इदारा इशाअ़तुस्सुन्नः ने बड़े अच्छे ढंग से छापा है।[1]

6. सिराते मुस्तक़ीम, इस किताब के चार बाब हैं, जिनमें से सिर्फ़ पहला बाब शाह शहीद का लिखा हुआ है, मज़ामीन सैयद साहब के हैं, सिर्फ़ इबारत और बयान का उस्लूब शाह साहब का है। इसका उर्दू तर्जुमा भी छप चुका है, फ़ारसी एक बार छपी और बहुत कम पाई जाती है।[2]

7. तक़्वीयतुल ईमान, इसकी तफ़्सील आगे आएगी।

8. यकरोज़ी छोटी सी किताब है, जिसमें तक़्वीयतुल ईमान पर मौलवी फ़ज़्लेहक़ ख़ैराबादी के कुछ एतराज़ों का जवाब दिया गया है। शाह साहब नमाज़ के लिए मस्जिद की तरफ़ जा रहे थे। रास्ते में उन्हें मौलवी फ़ज़्ले हक़ का रिसाला मिला, नमाज़ से फ़ारिग़ होते ही जवाब लिखने बैठ गए और एक बैठक में उसे

1. अल मक्तबतुस्सलफ़ीया ने अनुवाद भी छाप दिया है।

2. अब इसको अलहम्दुलिल्लाह अलमक्तबतुल सलफ़ीया ने छाप दिया।

पूरा कर दिया, इस वजह से एक रोज़ी नाम पाया।

9. मकातीब, इनका बहुत बड़ा मज्मूआ है, जिनमें से कुछ उनके नाम से मशहूर हुए। अक्सर उन्होंने सैयद साहब के इशारे पर लिखे।

10. मंज़ूमात, उनकी कैफ़ियत यह है—

(क) एक फ़ारसी क़सीदा नात में,

(ख) एक फ़ारसी क़सीदा सैयद सहाब की मदह में,

(ग) एक फ़ारसी मस्नवी मौसूम ब 'सिल्के नूरे तौहीद' ही के मज़्मून पर,

(घ) एक उर्दू मस्नवी, मौसूम ब सिल्के नूरे तौहीद ही के मज़्मून पर,

(ङ) एक मस्नवी ब ज़ुबान फ़ारसी, एक हदीस की शरह में,

'तक़्वीयतुल ईमान' की कहानी

तक़्वीयतुल ईमान पहली बार 1243 हि० (1826-27 ई०) में छपी थी, जब शाह शहीद अमीरुल मोमिनीन सैयद अहमद बरेलवी रहमतुल्लाहि अलैहि अमाअत मुजाहिदीन के साथ अपने वतन से हिजरत करके जा चुके थे और हिन्दुस्तान की आज़ादी और ग़ुलामी से बचाव के लिए तलवार से जिहाद की शुरूआत हो रही थी, अब 1410 हि० (1889 ई०) है, पिछले एक सौ सड़सठ वर्ष की लम्बी मुद्दत में अल्लाह ही बेहतर जानता है, यह किताब कितनी बार छपी, सरसरी अन्दाज़ा है कि चालीस पचास लाख से कम न छपी होगी, करोड़ों आदमियों ने उसे पढ़ा और हिदायत की रोशनी हासिल की, यह ऐसा शरफ़ है जो तक़्वीयतुल ईमान के सिवा उर्दू की किसी दूसरी किताब को शायद ही नसीब हुआ हो।

इसके ख़िलाफ़ ग़लत फ़हमियों और ग़लत बयानियों के जो हंगामे बरपा हुए और बरपा किए गए, वे भी शायद किसी दूसरी किताब को पेश न आए, आज तक़्वीयतुल ईमान की कहानी पर नज़र डाली जाए तो आंखों के सामने अजीब मंज़र आता है, गोया एक समुद्र है, जिस पर तूफ़ान का बोहरान छाया हुआ है। उसकी सतह मौजों के जोश, हैजान, टकराव और कशमकश से मह्शर के दौर का नमूना बन रही है। बड़े-बड़े जहाज़ों के खेवैयों पर हरास के बादल छाए हुए हैं और वे लंगर डाल कर साहिल के दामन को मज़बूती से थामे खड़े हैं, सिर्फ़ एक

अज़्म वाला मल्लाह अपने कमज़ोर नाज़ुक जहाज़ के बादबां को खोले हुए सफ़र जारी रखे है। तूफ़ान की हलाकत ख़ेज़ियां और मौजों की उथल-पुथल उसके यक़ीन व हिम्मत को डगमगा नहीं सकीं। जो मस्लहतें अपने फ़ायदों और खिंचाव के जाल दूसरों के सामने बिछा कर उन्हें पाबन्द बना चुकी हैं, वे इस मल्लाह का दामन खींचने और अपना पाबन्द बनाने में नाकाम रही हैं, उसने अपना फ़र्ज़ पूरा करने में हर मस्लहत को ठुकरा दिया। वह आगे बढ़ता गया और अपनी बेमिसाल अज़ीमत से हर मुख़ालिफ़ ताक़त को नाकाम और हर दुश्मनी भरे क़दम को नामुराद बना दिया। वह उस जगह जा पहुंचा जो सिर्फ़ अज़ीमत वाले बुज़ुर्गों ही के हिस्से में आता है।

यह रुत्बा-ए-बुलन्द मिला जिसको मिल गया
हर मुद्दई के वास्ते दार व रसन कहां?

किताब की ख़ास-ख़ास बातें

तक़्वीयतुल ईमान का मौज़ूअ़ तौहीद है, जो दीन की बुनियाद है। इस मौज़ूअ (विषय) पर अल्लाह जाने, अब तक कितनी किताबें और रिसाले लिखे जा चुकें है। शाह शहीद के बहस का अन्दाज़ और दलील का तरीक़ा सबसे निराला है और है सरासर इस्लाही। उलेमा-ए-हक़ की तरह उन्होंने सिर्फ़ किताब व सुन्नत को अपनी बुनियाद बनाया है। आयतें और हदीसें पेश करके वे बड़े ही सादा और आसान अन्दाज़ में उनकी तश्रीह फ़रमा देते हैं और तौहीद को नुक़्सान पहुंचाने वाली जितनी ग़ैर शरई रस्में समाज में रिवाज पा गई थीं, उनकी हक़ीक़ी हैसियत दिल में बिठा देने वाले अन्दाज़ में ज़ाहिर कर देते हैं।

उन्होंने अक़ीदा व अमल की उन तमाम भयानक ग़लतियों को, जो इस्लामी तौहीद की तालीम के ख़िलाफ़ थीं, अलग-अलग उन्वानों के मातहत जमा कर दिया, जैसे शिर्क फ़िल इल्म, शिर्क फ़ित्तसर्रुफ़, शिर्क फ़िल आदत, शिर्क फ़िल इबादत, इस तरह तक़्वीयतुल ईमान तौहीद के मौज़ूअ़ पर एक जामेअ़ और यगाना (मिसाल) किताब बन गई। इनके अलावा—

1. यह किताब शाह शहीद के ज़माने के इल्मी, अमली और तहज़ीबी हालात का एक निहायत अजीब मुरक़्क़ा है। अगर कोई आदमी चाहे कि आज

से सवा सौ साल पहले इस लम्बे-चौड़े मुल्क के मुसलमान किन-किन अक़ीदों के, अमली और अख़्लाक़ी मरज़ों में मुब्तला थे, तो तक़्वीयतुल ईमान इसके लिए एक मुस्तनद मालूमात का अच्छा भंडार साबित होगी।

2. शाह शहीद ने सिर्फ़ तौहीद की नज़री तशरीह और उसके लिए दावत ही को काफ़ी नहीं समझा, बल्कि ऐसा रंग अख़्तियार किया कि पढ़ने वाला उस समाज और माहौल में जा पहुंचा है, जिसमें यह किताब लिखी गई है, इस तरह दावत के असरदार होने और दिलों में उतर जाने में और इज़ाफ़ा हो गया।

3. अगरचे यह किताब बड़े ही अहम मोज़ूअ़ (विषय) पर है, लेकिन शाह शहीद ने दलील देने का तरीक़ा ऐसा अख़्तियार किया कि मामूली पढ़ा-लिखा आदमी और ज़बरदस्त आलिम दोनों अपने ज़ेहनी मेयार के मुताबिक़ इससे पूरी तरह फ़ायदा उठा सकते हैं और फ़ायदा उठाते रहे।

4. अगरचे यह उस ज़माने में लिखी गई थी, जब उर्दू नस्र (गद्य) बिल्कुल शुरू के दौर में थी, लेकिन शाह साहब की इबारत ऐसी सादा, इतनी आसान, और दिल में बैठ जाने वाली है कि कुछ ख़ास लफ़्ज़ों ओर मुहावरों को छोड़कर आज भी ऐसी दिल को खींच लेने वाली किताब लिखना आसान नहीं, यक़ीनन उर्दू ज़ुबान (भाषा) तरक़्क़ी के और दर्जों को तै करने के बाद भी तक़्वीयतुल ईमान को शैली (उस्लूब) के लिहाज़ से अपनी एक इंतिहाई क़ीमती पूंजी समझेगी।

परवाह और बेपरवाही के आपस में टकराते मंज़र

यह बात हद दर्जा ताज्जुब में डालने वाली है कि तक़्वीयतुल ईमान अपनी अलग-अलग ख़ूबियों के बावजूद अक़ीदतमंदों के दायरे में भी एक ही वक़्त में लापरवाही और परवाह के टकराते मंज़रों की तस्वीर बनी रही। इसके प्रिंट होने और छपने की परवाह का यह हाल कि उर्दू की कोई दूसरी किताब इसकी बराबरी का दावा नहीं कर सकती। बहुत से लोगों और दूसरों का तरीक़ा ही यह रहा कि हर साल उसके हज़ारों नुस्ख़े (प्रतियां) छापते और मुफ़्त या लगभग मुफ़्त बांट देते, लेकिन लापरवाही का यह हाल कि किताब के मतन (मूलसामग्री) के सही होने और बाक़ी रखने पर न ज़िक्र के क़ाबिल तवज्जोह की गई, न ज़माने के

पढ़ने-पढ़ाने के ज़ौक़ में बढ़ौतरी का कोई सर व सामान किया गया। मालूम होता है कि अक़ीदतमंदों ने भी इसे ज़्यादा से ज़्यादा 'तबर्रुक' का दर्जा दे दिया था और इस क़ीमती पूंजी से ख़ास रब्त रखने का तक़ाज़ा सिर्फ़ यह समझ लिया था कि यह जिस शक्ल में आई, उसी शक्ल में आगे की नस्लों के हवाले कर दी जाए। लेखक के इल्म के मुताबिक़ मतन ठीक और मतलब के वाज़ेह होने की सिर्फ़ दो कोशिशें अलग-अलग वक़्तों में हुईं, लेकिन वे भी अधूरी रह गईं।

ज़रूरी काम

इस सिलसिले में कई ज़रूरी काम थे जो लिखने-पढ़ने का सुलझा हुआ मज़ाक़ रखने वालों से छिपे न रह सकते थे। 'तक़्वीयतुल ईमान' के पढ़ने से एक ही नज़र में वाज़ेह हो सकता है कि शाह शहीद ने अपनी दूसरी किताबों की तरह इसे भी हाथ के हाथ लिख डाला था। इस धरती पर इस्लाम के ज़िंदा रखने के जिस क़ीमती मक़्सद के लिए वे अपनी ज़िंदगी के बेशक़ीमती वक़्त वक़्फ़ फ़रमा चुके थे, उनमें ग़ैर मामूली तौर पर लगे रहने की वजह से ज़ाहिर में तक़्वीयतुल ईमान के मस्विदे पर दोबारा नज़र डालने की भी मोहलत न मिल सकी, किताब के सिलसिले में जो ज़रूरी काम शाह शहीद ख़ुद न अंजाम दे सके थे, अक़ीदतमंदों का फ़र्ज़ था कि वे ख़ुद पूरा करते।

जैसे–

1. किताब में जगह-जगह सब हेडिंग लगाई जातीं, ताकि उसका पढ़ना ज़्यादा से ज़्यादा आसान और नफ़ा दने वाला बन जाता,

2. शाह शहीद ने ज़रूरत के मुताबिक़ हदीसों की इबारतें नक़ल कर दी हैं, ज़रूरी था कि हाशियों में हदीसों की तख़्रीज की जाती और छपी किताबों के हवाले दिए जाते।

3. शाह शहीद ने अपने आसपास जिन ग़ैर शरई रस्मों और कामों का हुजूम देखा, उनका ज़िक्र थोड़े में कर दिया, बाद के ज़माने में वे रस्में धीरे-धीरे ख़त्म होती गईं। ज़रूरी था कि उनकी कैफ़ियत थोड़े में बयान कर दी जाती, ताकि पढ़ने वालों पर उनका ग़ैर शरई होना छिपा न रहता और वे इस तरह की दूसरी रस्मों से बचते, जिनकी शक्ल हर दायरे में अलग थी।

4. शाह शहीद के ज़माने में इमला का तरीक़ा दूसरा था, ख़ास तौर से वक़्फ़ की अलामतों के इस्तेमाल का कोई क़ायदा न था, बाद में इमला का तरीक़ा धीरे-धीरे इस्लाह पाता रहा और जगह-जगह औक़ाफ़ लगा दिए जाते, ताकि इबारत समझने में आसानी पैदा हो जाए और किताब की इंफ़रादी हैसियत बढ़ जाए।

5. जैसा कि अर्ज़ किया जा चुका है तक़्वीयतुल ईमान अपनी सादगी और रवानी और इबारत के पक्केपन और दिल नशीनी के एतबार से आज भी एक नादिर किताब है, फिर भी इसके कुछ लफ़्ज़ों और जुमलों का मतलब ज़्यादा वाज़ेह न था, उनकी तशरीह ज़रूरी थी।

अफ़सोस इनमें से कोई भी काम न हो सका। कुछ लोगों ने इस तरफ़ तवज्जोह फ़रमाई, तो वे इन कामों को ज़रूरत के मुताबिक़ पूरा न कर सके। इन्हीं मक़सदों को पूरा करने के लिए तक़्वीयतुल ईमान को फिर से तैयार किया गया।

मौजूदा दौर

आज इस किताब से फ़ायदा उठाने वालों का दायरा बहुत फैल गया है। आज शाह शहीद आमतौर से 'वह्हाबियत' नहीं, बल्कि इस्लाम ज़िंदा करने वालों में जाने जाते हैं, जिन्होंने उस वक़्त पाक व हिन्द के फैले हुए इलाक़े में सही इस्लामी हुकूमत क़ायम करने के लिए जिहाद का झंडा उठाया था, जब मुसलमानों की हज़ार-साला हुकमरानी के तमाम निशान मिट रहे थे, उस दौर में यहां नयी ज़िंदगी और आज़ादी का चिराग़ जलाया, जब हर ओर से बेचारगी और मायूसी का अंधेरा छाया हुआ था, इन हालात में मुसलमानों को अज़्म व हिम्मत का रास्ता दिखाया गया, जब उनकी फ़ातेह वाली शान आख़िरी सांस ले रही थी, आज उनके मुजाहिदाना कारनामों का तज़्करा दीन की ख़िदमत और मिल्लत की सही तालीम व तर्बियत का एक सबसे ज़्यादा असरंदाज़ होने वाला ज़रिया समझा जाता है, इसलिए तक़्वीयतुल ईमान को ज़्यादा से ज़्यादा अपनी तरफ़ ख़ींचने वाला और आम तौर पर पढ़ा जाने वाला बनाना एक बहुत बड़ी ख़िदमत है। यह भी हक़ीक़त है कि शाह शहीद ने सवा सौ साल पहले जो कुछ फ़रमाया था, उसकी अहमियत व बरतरी का ठीक-ठीक अन्दाज़ा जिस तरह मौजूदा दौर कर सकता है, पहले दौर न कर सकते थे।

'तक़्वीयतुल ईमान' की तर्तीब

शाह शहीद ने तक़्वीयतुल ईमान की तर्तीब से पहले तौहीद को साबित करने और शिर्क व बिदअ़तों को रद्द करने के लिए आयतें और हदीसें जमा की थीं और इस मज्मूए का नाम 'रद्दुल इशराक़' रखा था। नवाब सिद्दीक़ हसन ख़ां मर्हूम ने इन हदीसों की तख़्रीज की और मज्मूए को 'अल इशराक लि तख़्रीजे अहादीसे रद्दिल इशराक' के नाम से छाप दिया। शाह शहीद ने इस मज्मूए के सिर्फ़ इब्तिदाई हिस्से को उर्दू का जामा पहनाया और यही तक़्वीयतुल ईमान है। बाक़ी हिस्से को मौलवी सुलतान मुहम्मद मरहूम ने 'तज़्कीरुल इख़्वान' के नाम से उर्दू में छापा।

यक़ीनी तौर पर नहीं कहा जा सकता है कि तक़्वीयतुल ईमान किस ज़माने में लिखी गई, उसमें एक मक़ाम पर काबतुल हराम के सेहन का मंज़र पेश किया गया, जिससे दिल पर असर पड़ता है कि यह मंज़र आखों देखा है, इसलिए समझा जा सकता है कि किताब हज के सफ़र से वापस आकर लिखी गई। मुल्ला साहबे बग़दादी ने कुछ लोगों के अभारने से तक़्वीयतुल ईमान पर कुछ एतराज़ किए थें। शाह शहीद ने उसके जवाब में एक ख़त कानपुर से लिखा था, जिस पर 1240 हि० दर्ज है। इससे यही अन्दाज़ा होता है कि किताब हज के सफ़र से लौटने पर 1240 हि० के शुरू में लिखी गई। उस ज़माने में शाह शहीद पूरी तरह दावत, तंज़ीम और जिहाद के लिए वक़्फ़ हो चुके थे और 7 जुमादल उख़्रा 1241 हि० को जिहाद के लिए रवाना हो गए।

मुल्ला साहब बग़दादी ने तो शाह शहीद का ख़त पढ़ कर अपनी ग़लती मान ली। दिल्ली के उलेमा में जिस आदमी ने शाह शहीद की मुख़ालफ़त में ज़्यादा नुमायां हैसियत हासिल की, वह मौलाना फ़ज़्ले हक़ ख़ैराबादी हैं, जिनके बारे में अब आमतौर से मान लिया गया है कि इल्म व फ़ज़्ल में बुलन्द मर्तबा होने के बावजूद उनके एतक़ादी नज़रिए अवामी थे। उन्होंने हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नज़ीर के इम्कान होने का मसला छेड़ दिया और क़ुदरत व मशीयत का फ़र्क़ नज़रों में न रखा। शाह शहीद ने रिसाला यक रोज़ी में उन तमाम एतराज़ों को बे-बुनियाद साबित कर दिया। ये बहसें यहां तफ़्सील से दर्ज नहीं की जा सकतीं।

तक़्वीयतुल ईमान के अलग-अलग नुस्ख़े (प्रतियां)

किताब के नए सिरे से तर्तीब देने के सिलसिले में सबसे पहला काम यह था कि ऐसे नुस्ख़े जमा किए जाते, जिन पर ज़ाहिर में ज़्यादा एतमाद की गुंजाइश थी। जो नुस्ख़े नज़र के सामने रहे, उनकी कैफ़ियत यह है—

1. क़लमी नुस्ख़ा लिखा गया 7 ज़ीक़ादा 1252 हि० (13 फ़रवरी 1837 ई०), को, कुल 114 सफ़हे (पृष्ठ), हर सफ़हे में 14 लाइन, हर लाइन में 16 लफ़्ज़, लेखक के इल्म में यह सबसे पुरना लेख (मख़्तूता) है, कुछ पन्ने किसी क़दर कीड़े खाए हुए हैं। शुरू के आठ सफ़हे ग़ायब हैं।

2. क़लमी नुस्ख़ा (प्रति), पृ० 237, हर सफ़हे (पृष्ठ) पर 8 लाइन हर सतर में 14 लफ़्ज़ (शब्द), किताबत उम्दा, काग़ज़ अच्छा, लिखने की तारीख़ दर्ज नहीं।

ये दोनों नुस्ख़े (प्रतियां) ख़ुलीलुर्रहमान साहब दाऊदी ने दिए।

3. तक़्वीयतुल ईमान, एडीशन मक्तबा दारुल उलूम दिल्ली, 1847 ई०, कुल 92 पृ०, मालूम न हो सका कि यह कौन-सा एडीशन है। हमें अब तक इससे पहले का छपा हुआ नुस्ख़ा (प्रति) नहीं मिल सका।

4. नस्तालीक़ टाइप का नुस्ख़ा—यह मौलना मुहम्मद हसन साहब रहमतुल्लाहि अलैहि की तस्हीह (सही करना), मौलवी अब्दुल्लतीफ़ रहमतुल्लाहि अलैहि और मौलवी कामिल रहमतुल्लाहि अलैहि का एहतिमाम, मुंशी ग़ुलाम मौला रहमतुल्लाहि अलैहि, मुंशी वाजिद साहब रहमतुल्लाहि अलैहि की निगरानी में मुहसनी प्रेस कलकत्ता में छपा था। एडीशन का साल 1845 ई० है, इसमें मतन के सही करने का ख़ास एहतिमाम किया गया था। इबारत के मुक़ाबले से मालूम हुआ कि सही करने वाले ने कुछ इबारतें बदल दी हैं।

इसके अलावा अलग-अलग एडीशन सामने रहे, जिनमें ख़ासतौर से ज़िक्र के क़ाबिल जमीयते दावत व तब्लीग़ का छापा हुआ एडीशन है, जो मौलाना मुहीयुद्दीन अहमद क़ुसूरी रहमतुल्लाहि अलैहि ने तर्तीब दिया था।

तर्तीब के उसूल

किताब की नए सिरे से तर्तीब व तहज़ीब के उसूल और हदों के बारे में उन इल्म व फ़ज़्ल वालों से तफ़्सीली बातें हुईं, जो इस बारे में राय देने के अह्ल थे। कुछ का ख़्याल था कि ऐसे लफ़्ज़ और मुहावरे बदल दिए जाएं, जो रिवाज में नहीं हैं और कुछ पेचीदा इबारतों में इतनी तर्मीम ज़रूर कर दी जाए कि उनका मतलब आज के दौर की किताबों के पढ़ने की आदी तबीयतों पर बेतकल्लुफ़ साफ़ हो जाए और इस तरह की थोड़ी-थोड़ी तर्मीमें पहले भी हो चुकी थीं, लेकिन गहरे ग़ौर व फ़िक्र के बाद यही मुनासिब मालूम हुआ कि किसी हिस्से में कोई घट-बढ़न की जाए और मतन को ज़बरदस्त मेहनत के साथ ठीक-ठाक करके वैसे ही छाप दिया जाए, सिर्फ़ इतना किया जाए कि शाह शहीद के ज़माने के इमला के तरीक़े को छोड़ कर रिवाज में पाये जाने वाले तरीक़े को अख़्तियार कर लिया जाए। जैसे—

1. शाह शहीद के ज़माने में कुछ लफ़्ज़ों को मिला कर लिखने का तरीक़ा चल रहा था, जैसे 'मिलकर' 'हमको', इस किताब में हर लफ़्ज़ अलग-अलग लिखा गया है।

2. शाह शहीद के ज़माने में 'हो' और 'जाए' को 'होवे' और 'जावे' लिखते थे, इस किताब में मौजूदा तरीक़ा अख़्तियार किया गया है।

3. पूरी किताब में जगह-जगह अवक़ाफ़ (Punctuation) लगा दिए हैं, ताकि वाक्य और जुम्ले साफ़ रहें। इस सिलसिले में कुछ जगहों से 'और' या इस क़िस्म के दूसरे लफ़्ज़ों को हटा दिया गया है जो असल में उलटी वाब (कामा) और वक़्फ़े (पेश) का बदल थे।

हमारे नज़दीक इनमें से किसी चीज़ को 'मतन में तब्दीली' क़रार नहीं दिया जा सकता और यह सिर्फ़ इमला के तरीक़े का इख़्तिलाफ़ है।

4. जिन लफ़्ज़ों या जुम्लों का मतलब वज़ाहत चाहता था, उनकी वज़ाहत हाशिए मे कर दी गई है या मतन में क़ौसैन (' ') के अन्दर एक लफ़्ज़ या कुछ लफ़्ज़ बढ़ा दिए गए।

5. जो हदीसें मतन में थोड़ी-थोड़ी करके नक़ल हुई थीं, उन्हें हाशिए में पूरा

कर दिया गया है।

6. शाह शहीद ने कुछ आयतों के तर्जुमे में सिर्फ़ क़ुरआनी मतलब और अपना मक़्सद सामने रखा, ऐसी आयतों के लफ़्ज़ी तर्जुमे के सिलसिले में शाह अब्दुल क़ादिर रहमतुल्लाहि अलैहि का तर्जुमा दर्ज कर दिया गया है।

आख़िरी गुज़ारिश

अपनी नाचीज़ सलाहियत के मुताबिक़ इंतिहाई कोशिश की कि किताब का पढ़ना ज़्यादा से ज़्यादा आसान और नज़र और दिल को खींच लेने वाला बन जाए, अगर इस सिलसिले में कुछ कामियाबी हुई तो उसे हम अल्लाह तआला के बे-इंतिहा फ़ज़्ल व करम का करिश्मा समझते हैं और अगर कहीं-कहीं कमी हुई तो उसे अपने फ़िक्र व नज़र की चूक समझते हुए पाठकों से माज़रत चाहते हैं, मक़्सूद इसके सिवा कुछ नहीं कि शाह शहीद रहमतुल्लाहि अलैहि के इस अहम दीनी कारनामे से फ़ायदा उठाने का दायरा ज़्यादा से ज़्यादा बड़ा हो और मुसलमान सही मानी में मुसलमान बन जाएं।

व आख़िरु दावाना अनिल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन वस्सलातु वस्सलामु अला सैयदिल मुर्सलीन०

—ग़ुलाम रसूल मेह्र

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

तम्हीद

हम्द व सलात

इलाही! तेरा हज़ार बार शुक्र है कि तूने हम पर अनगिनत नेमतें बरसाईं, हमें अपने सच्चे दीन की रहबरी फ़रमाई, सीधी राह पर चलाया, एक ख़ुदा का मानने वाला बनाया, पैग़म्बरे इस्लाम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का उम्मती बनाया, दीन का शौक़ दिया और दीनदारों की मुहब्बत अता फ़रमाई, ऐ रब! हमारी तरफ़ से अपने प्यारे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर, उनके घर वालों पर, उनके सहाबा किराम पर और उनके जानशीनों पर अपनी रहमत व सलामती की बारिश नाज़िल फ़रमा, हमें भी उनमें शामिल फ़रमा और इस्लामी ज़िंदगी बसर करने की तौफ़ीक़ दे और इस्लाम पर हमारा ख़ात्मा फ़रमा और उनके ताबेदारों की फ़ेहरिस्त में हमारा भी नाम लिख ले। आमीन, सुम-म आमीन

बन्दा और बन्दगी

अम्मा बादु! इन्सान सभी अल्लाह के बन्दे हैं। बन्दे का काम बन्दगी बजा लाना है। जो बन्दा बन्दगी से जी चुराए, वह बन्दा नहीं। बन्दगी का दारोमदार ईमान की इस्लाह पर है। जिसके ईमान में ख़लल है, उसकी बन्दगी ग़ैर-मक़्बूल है और जिसका ईमान दुरुस्त है, उसकी थोड़ी सी बन्दगी भी क़द्र के क़ाबिल है, इसलिए हर मुसलमान का फ़र्ज़ है कि ईमान के दुरुस्त करने की कोशिश करे और ईमान की इस्लाह को तमाम चीज़ों पर मुक़द्दम रखे।

ज़माने की हालत

इस ज़माने में लोगों ने अलग-अलग राहें अख़्तियार कर रखी हैं, कुछ बाप-दादा की रस्मों पर चलते हैं, कुछ बुज़ुर्गों के तरीक़ों को अच्छा समझते हैं,

कुछ उलेमा की अपनी गढ़ी बातों को सनद के तौर पर पेश करते हैं. और कुछ अक़्ली घोड़े दौड़ाते हैं और दीनी बातों में अक़्ल को दख़ल देते हैं।

सबसे बेहतर राह

बेहतरीन राह यही है कि क़ुरआन व हदीस को मेयार बनाया जाए। शरई मामलों में अक़्ल को दख़ल न दिया जाए और इन्हीं दो चश्मों (यानी क़ुरआन व हदीस) से रूह को सैराब किया जाए। बुज़ुर्गों की जो बात, उलेमा का जो मसला और बिरादरी की जो राय क़ुरआन व हदीस के मुवाफ़िक़ हो, उसको मान लिया जाए और जो उमके ख़िलाफ़ हो उसे छोड़ दिया जाए।

दीन को समझना मुश्किल नहीं

आम लोगों में यह मशहूर है कि क़ुरआन व हदीस का समझना बड़ा मुश्किल काम है, इसके लिए बड़े इल्म की ज़रूरत है। हम जाहिल किस तरह समझ सकते हैं और किस तरह उसके मुवाफ़िक़ अमल कर सकते हैं, इस पर अमल भी सिर्फ़ वली और बुज़ुर्ग ही कर सकते हैं। उनका यह ख़्याल क़तई बे-बुनियाद है, क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि क़ुरआन पाक की बातें साफ़-साफ़ और सुलझी हुई हैं।

'व लक़द अन-ज़लना इलै-क आयातिम बैयिनातिंव-व मा यक्फ़ुरु बिहा इल्लल फ़ासिक़ून'

(बिला शुबहा हमने आप पर साफ़-साफ़ आयतें उतारी हैं, उनका इंकार फ़ासिक़ ही करते हैं।)

—अल-बक़रः 99

यानी उनका समझना कुछ भी मुश्किल नहीं, निहायत आसान है, अलबत्ता उसपर अमल करना मुश्किल है, क्योंकि नफ़्स को फ़रमांबरदारी मुश्किल मालूम होती है, इसलिए नाफ़रमान उनको नहीं मानते।

रसूल क्यों आए?

क़ुरआन व हदीस को समझने के लिए कुछ ज़्यादा इल्म की ज़रूरत नहीं, क्योंकि पैग़म्बर नादानों को राह बताने के लिए, जाहिलों को समझाने के लिए और बे-इल्मों को इल्म सिखाने के लिए ही आए थे, फ़रमाया—

هُوَ الَّذِیْ بَعَثَ فِی الْاُمِّیّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ یَتْلُوْا عَلَیْهِمْ اٰیٰتِهٖ وَیُزَكِّیْهِمْ
وَیُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ (الجمعه:۲)

'उसी ने अपढ़ों में उन्हीं में से एक रसूल भेजा जो उन्हें (शिर्क व कुफ़्र से) पाक करता है और उन्हें किताब व हिक्मत की तालीम देता है, यक़ीनन पहले वे ख़ुली गुमराही में थे।' —सूरः जुमा 2

यानी अल्लाह तआला की यह बड़ी जबरदस्त नेमत है कि उसने ऐसा रसूल भेजा, जिसने अनजानों को जानकार, नापाकों को पाक, जाहिलों को आलिम, नादानों को दाना और गुमराहों को राह पाया हुआ बना दिया। इस आयत को समझने के बाद अब भी अगर कोई आदमी यह कहने लगे की क़ुरआन समझना आलिमों का और उस पर अमल करना बड़े-बड़े बुज़ुर्गों का ही काम है तो उसने इस आयत को ठुकरा दिया और रब की उस शानदार नेमत की नाक़द्री की, बल्कि यह कहना चाहिए कि उसको समझ कर जाहिल, आलिम और गुमराह अमल करके बुज़ुर्ग बन जाते हैं।

हकीम और बीमार की मिसाल

मिसाल के तौर पर यों समझो कि एक दाना हकीम है और एक आदमी किसी बड़ी बीमारी में मुब्तला है। एक आदमी उस बीमार से हमदर्दी के तौर पर कहता है कि तुम फ़्लां हकीम के पास जाकर अपना इलाज करा लो, लेकिन बीमार कहता है कि उनके पास जाना और उससे इलाज कराना उन तन्दुरुस्तों का काम है, जिनकी सेहत बहुत अच्छी है, मैं तो सख़्त बीमार हूं, भला मैं किस तरह जाकर इलाज क़रा सकता हूं। क्या तुम उस बीमार को ख़बती न समझोगे कि नादान उस हाज़िक़ हकीम की हिक्मत को नहीं मानता, क्योंकि हकीम तो बीमारों ही के लिए होता है, जो तन्दुरुस्तों का इलाज करे, हकीम कैसे हुआ? मतलब यह है कि जाहिल और गुनाहगार को भी क़ुरआन व हदीस को समझने और शरई हुक्मों पर इंतिहाई सरगर्मी से अमल करने की उतनी ही ज़रूरत है, जितनी एक आलिम और बुज़ुर्ग को, इसलिए यह ख़ास व आम का फ़र्ज़ है कि किताब व सुन्नत ही की तहक़ीक़ में लगा रहे, उन्हीं को समझने की कोशिश करे,

उन्हीं पर अमल करे और उन्हीं के सांचों में ईमान ढाले।

तौहीद और रिसालत

याद रखो ईमान के दो हिस्से हैं–

1. अल्लाह को इलाहे मुतलक़ समझना,
2. रसूल को रसूल तस्लीम करना,

अल्लाह को इलाहे मुतलक़ समझने का मतलब यह है कि उसके साथ किसी को शरीक न किया जाए और रसूल को रसूल तस्लीम करना यह है कि उन्हीं की राह अख़्तियार की जाए। पहला हिस्सा तौहीद है और दूसरा हिस्सा सुन्नत की पैरवी है। तौहीद का उल्टा शिर्क है और सुन्नत का उलटा बिदअत है। हर मुसलमान का फ़र्ज़ है कि तौहीद और सुन्नत की पैरवी पर मज़बूती से क़ायम रहे, उन्हें सीने से लगाए रखे और शिर्क और बिदअत से बचता रहे। शिर्क व बिदअत ही ईमान-पूंजी के घुन हैं, जिनसे ईमान जाता रहता है। दूसरे गुनाहों से सिर्फ़ ईमान में रुकावट पैदा होती है, इसलिए जो आदमी तौहीद का मानने वाला और सुन्नत का पैरोकर हो, शिर्क और बिदअत से उसे नफ़रत हो और उसके पास बैठने से तौहीद और सुन्नत की पैरवी का शौक़ पैदा होता हो, उसी को उस्ताद और पीर समझना चाहिए।

रिसाला तक़्वीयतुल ईमान

हमने इस रिसाले में कुछ आयतें और हदीसें, जिनमें तौहीद और सुन्नत की पैरवी का बयान है और शिर्क व बिदअत की बुराई है, जमा कर दी हैं, जिनका तर्जुमा खुल कर आसान उर्दू में कर दिया गया है और उन पर मुख़्तसर नोट भी वज़ाहत के लिए दे दिए गए हैं, ताकि हर ख़ास व आम उससे फ़ायदा उठा सके और जिसको अल्लाह तआला चाहे सीधी राह ले आए। अल्लाह करे हमारा यह काम हमारी आख़िरत की निजात की वजह बन जाए, आमीन, इसका नाम तक़्वीयतुल ईमान है। इसमें दो बाब हैं, पहले बाब में तौहीद का बयान और शिर्क की बुराई है और दूसरे बाब में सुन्नत की पैरवी का बयान और बिदअत की बुराई है।

पहला बाब

तौहीद का बयान

अवाम की बेख़बरी

आम तौर से लोगों में शिर्क फैला हुआ है, तौहीद नायाब है। अक्सर ईमान के दावेदार तौहीद व शिर्क के मानी नहीं समझते। मुसलमान हैं, मगर बे-शऊरी में शिर्क में गिरफ़्तार हैं, इसलिए पहले तौहीद व शिर्क के मानी को समझने की कोशिश करनी चाहिए, ताकि क़ुरआन और हदीस से उनकी भलाई और बुराई मालूम हो सके।

शिर्क के काम

आमतौर से लोग आड़े वक़्त में पीरों को, पैग़म्बरों को, इमामों को, शहीदों को, फ़रिश्तों को और परियों को पुकारा करते हैं, उन्हीं से मुरादें मांगते हैं, उन्हीं की मन्नतें मानते हैं, मुरादें पूरी करने के लिए उन्हीं पर नज़्र व नियाज़ चढ़ाते हैं और बीमारियों से बचने के लिए अपने बेटों को उन्हीं की तरफ़ मंसूब कर देते हैं, किसी का नाम अब्दुन्नबी, किसी का अली बख़्श, किसी का हुसैन बख़्श, किसी का पीर बख़्श, किसी का मदार बख़्श, किसी का सालार बख़्श, किसी का ग़ुलाम मुहीयुद्दीन और किसी का ग़ुलाम मुईनुद्दीन वग़ैरह है, कोई किसी के नाम की चोटी रखता है, कोई किसी के नाम के जानवर ज़िब्ह करता है, कोई मुश्किल पड़ने पर किसी को पुकारता है और किसी की क़सम खाता है। ग़ैर मुस्लिम जो मामला देवी-देवताओं से करते हैं, वही ये नाम के मुसलमान, नबियों, वलियों, इमामों, शहीदों, फ़रिश्तों और परियों से करते हैं, इसके बावजूद मुसलमान होने का दावा करते हैं। अल्लाह पाक ने सच फ़रमाया—

'अक्सर लोग अल्लाह पर ईमान ला कर भी शिर्क करते हैं।'

—सूरः यूसुफ़ 106

दावा ईमान का, काम शिर्क के

यानी अक्सर ईमान का दावा करने वाले शिर्क की दलदल में फंसे हुए हैं। अगर कोई उनसे कहे कि तुम दावा तो ईमान का करते हो, मगर शिर्क में गिरफ़्तार रहते हो, क्यों शिर्क और ईमान की टकराने वाली राहों को मिला रहे हो, तो वे यह जवाब देते हैं कि हम शिर्क नहीं कर रहे, बल्कि नबियों और वलियों से मुहब्बत रखते हैं और उनके अक़ीदतमंद हैं। शिर्क तो तब होता जब उन्हें हम अल्लाह के बराबर समझते, हम तो उन्हें अल्लाह के बन्दे और मख़्लूक़ ही समझते हैं। अल्लाह ने उन्हें क़ुदरत व तसर्रुफ़ बख़्शा है, ये अल्लाह ही की मर्ज़ी से दुनिया में तसर्रुफ़ करते हैं। उनको पुकारना अल्लाह ही को पुकारना है, और उनसे मदद मांगना अल्लाह ही से मदद मांगना है। ये लोग अल्लाह के प्यारे हैं, जो चाहें करें। ये हमारे सिफ़ारिशी और वकील हैं। इनके मिलने से रब मिल जाता है और इनके पुकारने से रब का तक़र्रुब हासिल होता है। जितना हम इन्हें मानेंगे, उसी निस्बत से हम अल्लाह से नज़दीक़ होते जाएंगे और इसी क़िस्म की फ़िज़ूल बातें की जाती हैं।

क़ुरआन का फ़ैसला

इन सब बातों की एक ही वजह है, वह यह है कि ये लोग क़ुरआन व हदीस छोड़ बैठे, शरीअ़त में अक़्ल से काम लिया। झूठी कहानियों के पीछे लगे हुए हैं और ग़लत रस्मों को दलीलों में पेश करते हैं। अगर इनके पास क़ुरआन व हदीस का इल्म होता, तो इनको मालूम हो जाता कि पैग़म्बरे इस्लाम अलैहिस्सलातु वस्सलाम के सामने भी मुश्रिक इसी क़िस्म की दलीलों को पेश किया करते थे, अल्लाह पाक का उन पर ग़ुस्सा नाज़िल हुआ और उन्हें झूठा बताया। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं—

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَالَا يَضُرُّهُمْ وَلَايَنْفَعُهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ هٰٓؤُلَآءِ
شُفَعَآؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ قُلْ اَتُنَبِّـُٔوْنَ اللّٰهَ بِمَا لَايَعْلَمُ فِى السَّمٰوٰتِ وَلَا فِى
الْاَرْضِ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ○ (يونس:١٨)

'वे अल्लाह को छोड़ कर ऐसी चीज़ों को पूजते हैं, जो उन्हें न नुक़्सान पहुंचा सकें और न नफ़ा और कहते हैं कि ये अल्लाह के यहां हमारे सिफ़ारिशी हैं। आप फ़रमा दें कि तुम अल्लाह को वह ख़बर दे रहे हो, जिसे वह आसमान व ज़मीन में नहीं जानता (यानी जिसकी कोई हक़ीक़त नहीं है) वह इनके शरीक़ों से पाक व बरतर है।' (सूरः यूनुस : 18)

अल्लाह के सिवा कोई क़ुदरत वाला नहीं

यानी मुश्रिक जिन चीज़ों के परस्तार हैं, वे बिल्कुल बेबस हैं। इनमें न किसी को फ़ायदा पहुंचाने की क़ुदरत है और न नुक़्सान की और उनका यह कहना कि अल्लाह के पास हमारी सिफ़ारिश करेंगे, ग़लत है, क्योंकि अल्लाह ने यह बात बताई नहीं, फिर क्या तुम आसमान व ज़मीन की बातों को अल्लाह से ज़्यादा जानते हो, जो तुम कहते हो कि वे हमारे सिफ़ारिशी होंगे। मालूम हुआ कि कायनात में कोई किसी का ऐसा सिफ़ारिशी नहीं कि अगर उसको माना जाए तो वह फ़ायदा पहुंचाए और न माना जाए तो नुक़्सान पहुंचाए, बल्कि नबियों और वलियों की सिफ़ारिश भी अल्लाह ही के अख़्तियार में है, आड़े वक़्त में उनके पुकारने से कुछ नहीं होता और यह भी मालूम हुआ कि जो कोई किसी को अपना सिफ़ारिशी समझ कर पूजे, वह भी मुश्रिक है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया—

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖ اَوْلِيَآءَ مَانَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى ط
اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِىْ مَاهُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ اِنَّ اللّٰهَ لَايَهْدِىْ مَنْ هُوَ
كٰذِبٌ كَفَّارٌ ۝ (الزمر:٣)

'देखो अल्लाह ही के लिए ख़ालिस दीन है और जो अल्लाह को छोड़ कर दूसरों को हिमायती बनाते हैं कि हम उनकी सिर्फ़ इन लिए इबादत करते हैं कि वे हमको रुत्बे में उनके नज़दीक कर दें, यक़ीनन अल्लाह उनके इख़्तिलाफ़ों में फ़ैसला फ़रमाएगा। याद रखो कि अल्लाह झूठे और नाशुक्रे की रहबरी नहीं फ़रमता।' —सूरः ज़ुमर : 3

अल्लाह के सिवा कोई हिमायती नहीं

यानी हक़ बात तो यह थी कि अल्लाह इंसान से बहुत ही क़रीब है, लेकिन उसको छोड़ कर यह बात तराशी कि बुत हमें अल्लाह के क़रीब कर देंगे और उनको अपना हिमायती समझा और अल्लाह की इस नेमत को कि वह सीधे-सीधे सबकी सुनता है और सबकी उम्मीदें पूरी करता है, ठुकरा दिया और ग़ैरों से दुआएं करने लगे कि उनकी उम्मीदें पूरी करें और फिर लुत्फ़ की बात यह कि ग़लत और नामाक़ूल राह से अल्लाह का क़ुर्ब भी तलाश किया जाता है, भला इन एहसान फ़रामोशों और झूठों को कैसे हिदायत हो सकती है, ये तो उस टेढ़ी राह पर जिस क़दर चलेंगे, उसी क़दर सीधी राह से दूर होते जाएंगे।

अल्लाह के सिवा कोई कारसाज़ नहीं

इससे मालूम हुआ कि जो कोई ग़ैरों को यह समझ कर पूजे कि उनके पूजने से अल्लाह की नज़दीकी मिल जाएगी, वह मुश्रिक, झूठा और अल्लाह तआला की नेमत को ठुकरा देने वाला है। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं—

قُلْ مَنْۢ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ يُجِيْرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ۝ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ قُلْ فَاَنّٰى تُسْحَرُوْنَ۝ (المومنون:٨٨،٨٩)

'आप फ़रमा दें कि ऐसा अदमी कौन है जिसके हाथ में हर चीज़ का तसर्रुफ़ व अख़्तियार है और पनाह देने वाला भी हो और उसके मुक़ाबले पर कोई और पनाह भी न दे सके। अगर तुम्हें इल्म हो (तो जवाब दो)? वे यही जवाब देंगे कि अल्लाह ही है। आप फ़रमा दें कि तुम फिर क्यों दीवाने बने जाते हो?'

—सूरः मोमिनून 88-89

यानी अगर मुश्रिकों से भी पूछा जाए कि काइनाते आलम में वह कौन है जिसका तसर्रुफ़ व अख़्तियार है और जिसके मुक़ाबले पर कोई ख़ड़ा न हो सके, तो वे अल्लाह ही को बताएंगे, फिर ग़ैरों का मानना दीवानापन नहीं तो और क्या है? मालूम हुआ कि अल्लाह ने किसी को कायनात में तसर्रुफ़ करने की क़ुदरत नहीं बख़्शी और न ही कोई किसी का हिमायती हो सकता है। इसके अलावा

रिसालत के दौर के मुश्रिक भी बुतों को अल्लाह के बराबर नहीं जानते थे, बल्कि उन्हें उसी के बन्दे और मख़्लूक़ समझते थे और यह भी जानते थे कि उनमें इलाही क़ूवतें नहीं हैं, मगर उन्हें पुकारना, उनकी मन्नतें मानना, उन पर भेंटें चढ़ाना और उन्हें वकील और सिफ़ारिशी समझना ही उनका शिर्क था। यहां से मालूम हुआ कि जो कोई किसी से ऐसा ही बर्ताव करे अगरचे वह उसे बन्दा और मख़्लूक़ ही समझता हो, वह और अबू जहल दोनों शिर्क में बराबर हैं।

शिर्क की हक़ीक़त

शिर्क यही नहीं है कि किसी को अल्लाह के बराबर या उसके मुक़ाबले का माना जाए, बल्कि, शिर्क यह भी है कि जो चीज़ें अल्लाह ने अपनी ज़ात वाला सिफ़ात के लिए ख़ास फ़रमा ली हैं और बन्दों पर बन्दगी की निशानियां क़रार दी हैं, उन्हें ग़ैरों के आगे बजा लाए जाया, जैसे सज्दा, अल्लाह के नाम की क़ुरबानी, मन्नत, मुश्किल के वक़्त पुकारना, अल्लाह तआला को अपने आप हर जगह हाज़िर समझना, क़ुदरत व तसर्रुफ़ वग़ैरह में दूसरों का भी कुछ हिस्सा जानना, सब शिर्क की मुख़्तलिफ़ शक्लें हैं। सज्दा सिर्फ़ अल्लाह की पाक ज़ात के लिए ख़ास है, क़ुरबानी उसी के लिए की जाती है, मन्नत उसकी मानी जाती है, मुश्किल के वक़्त उसी को पुकारा जाता है, वही हर जगह हावी और निगरां है और हर तरह का तसर्रुफ़ व अख़्तियार उसी के क़ब्ज़े में है, अगर इनमें से कोई सिफ़त ग़ैर-अल्लाह में मानी जाए तो शिर्क है, चाहे उसको अल्लाह से छोटा ही समझा जाए और अल्लाह की मख़्लूक़ और उसका बन्दा ही माना जाए, फिर इस मामले में नबी, वली, जिन्न, शैतान, भूत-प्रेत और परी वग़ैरह सब बराबर हैं, जिससे यह मामला किया जाए, शिर्क होगा और करने वाला मुशिरक हो जाएगा। चुंनाचे अल्लाह पाक ने बुतपरस्तों की तरह यहूदियों और ईसाइयों पर भी इताब किया है, हालांकि वे बुतपरस्त न थे, अलबत्ता नबियों और वलियों से ऐसा ही मामला रखते थे। फ़रमाया—

اِتَّخَذُوْٓا اَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَالْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوْٓا اِلٰهًا وَّاحِدًا، لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ، سُبْحٰنَهٗ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ

(التوبه)

'उन्होंने अल्लाह के बजाए अपने उलेमा और दरवेशों को रब बना लिया और मसीह बिन मरयम को भी, हालांकि उन्हें एक ही अल्लाह की इबादत का हुक्म दिया गया था, जिसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, जो मुश्रिकों के शिर्क से पाक और बुलन्द व बरतर है।' (सूरः तौबा)

यानी अल्लाह को तो सबसे बड़ा मालिक जानते हैं और उससे छोटे दूसरे मालिक के भी क़ायल हैं जो उनके मौलवी और दरवेश हैं उन्हें इस बात का हुक्म नहीं मिला, वे शिर्क कर रहे हैं। अल्लाह पाक तो तने तंहा है। उसका कोई शरीक नहीं, चाहे वह छोटा या बड़ा, सब उसके बेबस बन्दे हैं कि अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया—

اِنْ كُلُّ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اِلَّآ اٰتِى الرَّحْمٰنِ عَبْدًا۝ لَقَدْ اَحْصٰهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا۝ وَكُلُّهُمْ اٰتِيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَرْدًا۝ (مریم:۹۳،۹۵)

'आसमान व ज़मीन का एक-एक आदमी रहमान के सामने ग़ुलामाना हैसियत में आने वाला है। रब ने उन्हें शुमार कर रखा है और एक-एक को गिन रखा है और सारे उसके सामने एक-एक करके आने वाले हैं।'

—सूरः मरयम, 93-95

यानी इंसान हो या फ़रिश्ता, अल्लाह का ग़ुलाम है, अल्लाह के सामने उसका इससे ज़्यादा कोई रुत्बा नहीं, वह अल्लाह के क़ब्ज़े में है और आजिज़ व बेबस है। उसके अख़्तियार में कुछ नहीं, सब कुछ मालिकुल मुल्क के अख़्तियार में है, उसी का सब पर क़ब्ज़ा है। किसी को किसी के क़ब्ज़े में नहीं देता, उसके सामने हिसाब-किताब के लिए हर आदमी हाज़िर होने वाला है, वहां न कोई किसी का वकील बनेगा और न हिमायती। क़ुरआन मजीद में इन मज़्मूनों के सिलसिले में सैकड़ों आयतें हैं, लेकिन हमने नमूने के तौर पर कुछ आयतें लिख दी हैं। जिस आदमी ने उन्हें समझ लिया, वह इनशाअल्लाह शिर्क और तौहीद को अच्छी तरह समझ जाएगा।

दूसरा बाब

शिर्क की क़िस्में

अब यह जानना ज़रूरी है कि अल्लाह पाक ने कौन-कौन-सी चीज़ें अपनी ज़ात के लिए ख़ास फ़रमाई हैं, ताकि उनमें किसी को शरीक न किया जाए, ऐसी चीज़ें अनगिनत हैं, हम यहां कुछ चीज़ों को बयान करके क़ुरआन व हदीस से साबित करेंगे, ताकि लोग उनकी मदद से दूसरी बातें भी समझ लें।

1. इल्म में शिर्क

पहली चीज़ यह है कि अल्लाह तआला इल्म की हैसियत से हर जगह हाज़िर व नाज़िर है, यानी उसका इल्म हर चीज़ को घेरे में लिए हुए है, यही वजह है कि वह हर चीज़ से हर वक़्त बा-ख़बर है, चाहे वह चीज़ दूर हो या क़रीब, छिपी हो या ज़ाहिर, आसमानों में हो या ज़मीनों में, पहाड़ों की चोटियों पर हो या समुद्र की तह में, यह अल्लाह ही की शान है, किसी और की यह शान नहीं। अगर कोई उठते-बैठते किसी ग़ैर अल्लाह का नाम ले या दूर व नज़दीक से उसे पुकारे कि वह उसकी मुसीबत दूर कर दे या दुश्मन पर उसका नाम पढ़ कर हमला करे या उसके नाम का ख़त्म पढ़े या उसके नाम का विर्द रखे या उसका तसव्वुर ज़ेहन में जमाए और यह अक़ीदा रखे कि जिस वक़्त मैं ज़ुबान से उसका नाम लेता हूं या दिल में तसव्वुर या उसकी सूरत का ख़्याल करता हूं या उसकी क़ब्र का ध्यान करता हूं, तो उसको ख़बर होती है, मेरी कोई बात उससे छिपी हुई नहीं और मुझ पर जो हालात गुज़रते हैं, जैसे बीमारी व सेहत, फ़राख़ी व तंगी, मौत और हयात और ग़म व मसर्रत, उसको इन सब की हर वक़्त ख़बर रहती है, जो बात मेरी ज़ुबान से निकलती है, वह उसे सुन लेता है और मेरे दिल के ख़्यालों और तसव्वुरों से वाक़िफ़ रहता है, इन तमाम बातों से शिर्क साबित हो जाता है, यह इल्म में शिर्क है, यानी अल्लाह तआला जैसा इल्म ग़ैर अल्लाह के लिए साबित करना। बेशक इस अक़ीदे से इंसान मुश्रिक हो जाता है, चाहे यह

अक़ीदा किसी बड़े से बड़े इंसान के मुताल्लिक़ रखे या क़रीबी से क़रीबी फ़रिश्ते के बारे में, चाहे उनको यह इल्म ज़ाती समझा जाए या अल्लाह का अता किया हुआ, हर शक्ल में शिर्किया अक़ीदा (यानी अक़ीदे में शिर्क) है।

2. तसर्रुफ़ में शिर्क

कायनात में इरादे से तसर्रुफ़ व अख़्तियार रखना, हुक्म चलाना, ख़्वाहिश से मारना और ज़िंदा करना, फ़राख़ी व तंगी, तन्दुरुस्ती व बीमारी, हार-जीत, अच्छी क़िस्मत, बुरी क़िस्मत, मुरादें पूरी होना, बलाएं टालना, मुश्किल में सहारा देना और वक़्त पड़ने पर मदद करना, यह सब कुछ अल्लाह की शान है, किसी ग़ैर अल्लाह की यह शान नहीं, चाहे वह कितना ही बड़ा इंसान या फ़रिश्ता क्यों न हो। फिर जो आदमी अल्लाह के बजाए किसी और में ऐसा तसर्रुफ़ साबित करे, उससे मुरादें मांगे और इसी ग़रज़ से उसके नाम की मन्नत माने या क़ुरबानी करे और मुसीबत के वक़्त उसको पुकारे कि वह उसकी बलाएं टाल दे, ऐसा आदमी मुश्रिक है और इसे 'शिर्क फ़ित्तसर्रुफ़' कहा जाता है, यानी अल्लाह का-सा तसर्रुफ़ ग़ैर-अल्लाह में मान लेना शिर्क है, चाहे वह ज़ाती माना जाए या अल्लाह का दिया हुआ, हर शक्ल में यह अक़ीदा शिर्क का अक़ीदा है।

3. इबादत में शिर्क

अल्लाह तआला ने कुछ काम अपनी इबादत के लिए ख़ास फ़रमा दिए हैं जिनको इबादात या इबादतें कहा जाता है, जैसे सज्दा, रुकूअ, हाथ बांध कर खड़ा होना, अल्लाह के नाम पर ख़ैरात करना, उसके नाम का रोज़ा रखना और उसके मुक़द्दस घर की ज़ियारत के लिए दूर-दूर से सफ़र करके आना और ऐसी शक्ल में आना कि लोग पहचान जाएं कि ये हरम की ज़ियारत करने वाले हैं, रास्ते में अल्लाह ही का नाम पुकारना, नामाक़ूल बातों से और शिकार से बचना, पूरी एहतियात से जाकर उसके घर का तवाफ़ करना, उसकी तरफ़ सज्दा करना, उसकी तरफ़ क़ुर्बानी के जानवर ले जाना, वहां मन्नतें मानना, काबे पर ग़िलाफ़ चढ़ाना, काबे की चौखट के आगे खड़े होकर दुआएं मांगना, दीन-दुनिया की

भलाइयां तलब करना, हजरे अस्वद को चूमना, काबे की दीवार से मुंह और छाती लगाना, उसका ग़िलाफ़ पकड़ कर दुआएं मांगना, उसके चारों तरफ़ रोशनी करना, उसमें ख़ादिम बन कर रहना, झाड़ू देना, हाजियों को पानी पिलाना, वुज़ू के लिए और ग़ुस्ल के लिए पानी मुहय्या करना, आबे ज़मज़म को तबर्रुक समझ कर पीना, बदन पर डालना, सेर होकर पीना, आपस में तक़सीम करना, नातेदारें-रिश्तेदारों के लिए ले जाना, इसके आस-पास के जंगल का अदब व एहतराम करना, वहां शिकार न करना, पेड़ न काटना, घास न उखाड़ना, जानवर न चराना ये सब काम अल्लाह ने अपनी इबादत के तौर पर मुसलमानों को बताए हैं।

फिर अगर कोई आदमी नबी को या वली को या भूत व प्रेत को या जिन्न व परी को या किसी सच्ची या झूठी क़ब्र को या किसी के थान या चिल्ले को या किसी के मकान व निशान को, या किसी के तबर्रुक व ताबूत को सज्दा करे या रुकूअ करे या उसके लिए रोज़ा रखे या हाथ बांध कर खड़ा हो जाए या चढ़ावा चढ़ाए या उसके नाम का झंडा लगाए या जाते वक़्त उलटे पांव चले या क़ब्र को चूमे या क़ब्रों या दूसरी जगहों की ज़ियारत के लिए दूर से सफ़र करके जाए या वहां चिराग़ जलाए और रोशनी का इन्तिज़ाम करे या उनकी दीवारों पर ग़िलाफ़ चढ़ाए या क़ब्र पर चादर चढ़ाए या मोरछल झले या शामियाना ताने या उनकी चौखट का बोसा ले या हाथ बांध कर दुआएं मांगे या मुरादें मांगे या मुजाविर बन कर ख़िदमत करे या उसके आस-पास के जंगल का अदब करे, ग़रज़ इस क़िस्म का कोई काम करे तो उसने खुला शिर्क किया, इसको शिर्क फ़िल इबादत कहते हैं, यानी ग़ैर अल्लाह की ताज़ीम अल्लाह की-सी करना, चाहे यह अक़ीदा हो कि वह निजी एतबार से इन ताज़ीमों के लायक़ है, या अल्लाह उनकी इस तरह ताज़ीम करने से ख़ुश होता है और उसकी ताज़ीम की बरकत से बलाएं टल जाती हैं, हर शक्ल में यह शिर्क भरा अक़ीदा है।

4. हर दिन के कामों में शिर्क

अल्लाह तआला ने बन्दों को यह अदब सिखाया है कि वे दुनिया के कामों में अल्लाह को याद रखें और उसकी ताज़ीम बजा लाएं, ताकि ईमान भी संवर जाए और कामों में बरकत भी हो, जैसे मुसीबत के वक़्त अल्लाह की नज़्र मान

लेना और मुश्किल के वक़्त उसी को पुकारना और काम शुरू करते वक़्त बरकत के लिए उस ही का नाम लेना, अगर औलाद हो तो इस नेमत के शुक्रिया के लिए उनके नाम पर जानवर ज़िब्ह करना, औलाद का नाम अब्दुल्लाह, अब्दुर्रहमान, इलाही बख़्श, अल्लाह दिया, अमतुल्लाह और अल्लाह दी वग़ैरह रखना, खेती की पैदावार में से थोड़ा-सा ग़ल्ला उसके नाम का निकालना, थालों में से कुछ फल उनके नाम का निकालना, जानवरों में से कुछ जानवर अल्लाह के नाम के मुक़र्रर करना और उसके नाम के जो जानवर बैतुल्लाह को ले जाए, उनका अदब व एहतराम बजा लाना, यानी न उन पर सवार होना, न उन्हें लादना, खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने में अल्लाह के हुक्म पर चलना, जिन चीज़ों के इस्तेमाल का हुक्म है, सिर्फ़ उन्हें इस्तेमाल करना और जिनसे मना किया गया है, उनसे बाज़ रहना, दुनिया में गरानी और अरज़ानी (मंहगाई और सस्ताई), सेहत व बीमारी, हार-जीत, अच्छा-बुरा, रंज व ख़ुशी जो कुछ भी पेश आती है, सबको अल्लाह के अख़्तियार में समझना, हर काम का इरादा करते वक़्त 'इन शाअल्लाह' कहना, जैसे यों कहना कि इनशाअल्लाह हम फ़्लां काम करेंगे, और अल्लाह तआला के नामों को इस अज़्मत के साथ लेना, जिससे उसकी ताज़ीम मालूम हो और अपनी ग़ुलामी यानी बन्दगी ज़ाहिर होती हो, जैसे यों कहना, हमारा रब, हमारा मालिक, हमारा ख़ालिक़, हमारा माबूद वग़ैरह, अगर किसी मौक़े पर क़सम खाने की ज़रूरत पड़ जाए, तो उसी के नाम की क़सम खाना, ये तमाम बातें और इसी क़िस्म की दूसरी बातें अल्लाह पाक ने अपनी ताज़ीम ही के वास्ते मुक़र्रर फ़रमाई हैं, फिर जो कोई इसी क़िस्म की ताज़ीम ग़ैर अल्लाह की करे, जैसे काम रुका हुआ हो या बिगड़ रहा हो, उसको चालू करने या संवारने के लिए ग़ैर-अल्लाह की नज़्र मान ली जाए, औलाद का नाम अब्दुन्नबी, इमाम बख़्श, पीर बख़्श रखा जाए, खेत व बाग़ की पैदावार में उनका हिस्सा रखा जाए, जब फल तैयार होकर आएं, तो पहले उनके नाम का हिस्सा अलग कर दिया जाए, तब उसे इस्तेमाल में लाया जाए, जानवरों में उनके नाम के जानवर मुक़र्रर कर दिए जाएं, फिर उनका अदब व एहतराम बजा लाया जाए, पानी से या चारे से उन्हें न हटाया जाए, लकड़ी से या पत्थर से उन्हें न मारा जाए और खाने-पीने और पहनने-ओढ़ने

में रस्मों का ख़्याल रखा जाए कि फ़्लां-फ़्लां लोग फ़्लां-फ़्लां खाना न खाएं, फ़्लां-फ़्लां कपड़ा न पहनें। बीवी[1] की सहनक मर्द न खाए, लौंडी न खाए और शौहर वाली औरत न खाए, शाह अब्दुलहक़ का तोशा हुक़्क़ा पीने वाला न खाए, दुनिया की भलाई-बुराई को उन्हीं की तरफ़ मंसूब किया जाए कि फ़्लां-फ़्लां उनकी लामत में गिरफ़्तार है, पागल हो गया है, फ़्लां मुहताज है, उन्हीं का धुत्कारा हुआ तो है और देखो फ़्लां को उन्होंने नवाज़ा था, आज सआदत व इक़बाल उसके पांव चूम रहे हैं, फ़्लां तारे की वजह से अकाल (क़हत) आया, फ़्लां काम फ़्लां साइत में फ़्लां दिन शुरू किया गया था, इस लिए पूरा न हुआ या यह कहा जाए कि अगर अल्लाह और रसूल चाहेगा तो मैं आऊंगा या पीर साहब की मर्ज़ी होगी तो यह बात होगी या बातों-बातों में दाता, बेपरवाह ख़ुदावन्द ख़ुदायगान, मालिकुल मुल्क और शहंशाह जैसे लफ़्ज़ इस्तेमाल किए जाएं, क़सम की ज़रूरत पड़ जाए तो नबी की या क़ुरआन की या अली की या इमाम व परी की या उनकी क़ब्रों या अपनी जान की क़सम खाई जाए, इन तमाम बातों से शिर्क पैदा होता है और इसको 'शिर्क फ़िल आदत' कहते हैं, यानी आम कामों में जैसी अल्लाह की ताज़ीम होनी चाहिए, वैसी ग़ैर-अल्लाह की ताज़ीम की जाए। शिर्क की इन चारों क़िस्मों को क़ुरआन व हदीस में खुल कर बयान किया गया है, इस लिए हमने ये मसले आगे बाबों में ज़िक्र कर दिए हैं।

---

1. बीवी से मुराद हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा हैं। उनके नाम की नियाज़ 'बीबी' की सहनक कहलाती थी, 'सहनक' यानी मिट्टी का छोटा-सा तबाक़, कहा जाता है कि यह नियाज़ जहांगीर के ज़माने में शुरू हुई। बादशाह ने नूर जहां से शादी की और उसका असर व रसूख़ बहुत बढ़ गया, तो जहांगीर की कुछ बेगमों ने यह रस्म ईजाद की और शर्त यह रखी कि इस नियाज़ में वही औरतें शरीक हो सकती हैं, जिन्होंने दूसरा निकाह न किया हो। इन चीज़ों को वे पाकदामनी का कमाल जानती थीं। मक़्सूद इससे सिर्फ़ नूर जहां की सुबकी और तौहीन थी। धीरे-धीरे यह नियाज़ आम हो गई, शाह शहीद रहमतुल्लाहि अलैहि के ज़माने में घर-घर इसका रिवाज हो गया था, उसमें कई शर्तें गढ़ा दी गई थीं और इसमें कई शर्तें बढ़ा दी गई थीं।

तीसरा बाब

शिर्क की बुराई–तौहीद की ख़ूबियां

शिर्क माफ़ नहीं हो सकता

إِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَاءُ ۚ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًاۢ بَعِيْدًا ○ (النساء:١١٦)

'याद रखो, अल्लाह पाक अपने साथ शिर्क किए जाने को माफ़ नहीं फ़रमाता और इसके सिवा जिसे चाहे माफ़ फ़रमा दे और जिसने शिर्क किया, वह राह से बहुत दूर भटक गया।' —सूरः निसा 116

यानी अल्लाह की राह से भटकना यह भी है कि इंसान हलाल व हराम में फ़र्क़ न करे, चोरी करे, बदकारी में मुब्तला रहे, नमाज़-रोज़ा छोड़ बैठे, बीवी-बच्चों का हक़ मारने लगे, मां-बाप की ना-फ़रमानी पर तुला रहे, लेकिन जो शिर्क के दलदल में फंस गया, वह राह से ज़्यादा भटक गया, क्योंकि वह एक ऐसे गुनाह में मुब्तला हो गया, जिसको हक़ तआला बिना तौबा कभी न माफ़ फ़रमाएगा और दूसरे गुनाहों को शायद अल्लाह तआला बिना तौबा माफ़ फ़रमा दे। मालूम हुआ शिर्क न माफ़ किए जाने वाला जुर्म है। इसकी सज़ा हमेशा के लिए जहन्नम है, न उससे निकला जाएगा और न उसमें चैन और आराम मयस्सर आएगा और जो काम कम दर्जे के शिर्क हैं, उनकी सज़ा अल्लाह तआला के यहां मुक़र्रर है। वह ज़रूर मिलेगी।[1]

और दूसरे गुनाहों की अल्लाह तआला के यहां जो सज़ाएं मुक़र्रर हैं, वे अल्लाह की मर्ज़ी पर हैं, चाहे दे या न दे।

---

1. शिर्क बड़ा हो या छोटा, बहरहाल मना है और तौहीद के ख़िलाफ़ है।

शिर्क की मिसाल

यह भी मालूम हुआ कि शिर्क से बड़ा कोई गुनाह नहीं, इसको इस मिसाल से समझो, जैसे बादशाह के यहां पब्लिक के लिए हर क़िस्म की सज़ाएं मुक़र्रर हैं, जैसे चोरी, डकैती, पहरा देते-देते सो जाना, दरबार में देर से पहुंचना, लड़ाई के मैदान से भाग कर आना और सरकार के पैसे पहुंचाने में कोताही करना वग़ैरह-वग़ैरह, इन सब जुर्मों की सज़ाएं मुक़र्रर हैं, अब बादशाह की मर्ज़ी है, चाहे तो सज़ा दे और चाहे माफ़ कर दे, लेकिन कुछ जुर्म ऐसे हैं जिनसे बग़ावत ज़ाहिर होती है, जैसे किसी अमीर को या वज़ीर को या चौधरी को या रईस को या भंगी को या चमार को बादशाह की मौजूदगी में बादशाह बना दिया जाए तो इस क़िस्म की हरकत बग़ावत है, या उनमें से किसी के वास्ते ताज या तख़्तेशाही बनाया जाए, या उसे 'ज़िल्लेसुबूहानी' कहा जाए या उसके सामने शाही आदाब बजा लाए जाएं या उसके लिए एक जश्न का दिन ठहराया जाए और बादशाह की-सी नज़्र दी जाए यह जुर्म तमाम जुर्मों से बड़ा है और इस जुर्म की सज़ा यक़ीनन मिलनी चाहिए। जो बादशाह इस क़िस्म के जुर्मों की सज़ाओं से ग़फ़लत बरतता है उसकी सलतनत कमज़ोर हो जाती है। सोचने-समझने वाले इस क़िस्म के बादशाहों को ना अह्ल (अयोग्य) कहते हैं। लोगो! उस मालिकुल मुल्क ग़ैरत मंद बादशाह से डर जाओ, जिसकी ताक़त की हद और गिनती नहीं। वह ऊंचे दर्जे का ग़ैरत वाला है, भला वह मुश्रिकों को क्यों सज़ा न देगा और बे-सज़ा उन्हें क्यों छोड़ देगा। अल्लाह तआला तमाम मुसलमानों पर रहम फ़रमाए और उन्हें शिर्क जैसी ख़तरनाक आफ़त से बचाए रखे। आमीन

शिर्क सबसे बड़ा ऐब है

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं—

وَاِذْ قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَهُوَ يَعِظُهٗ يٰبُنَيَّ لَاتُشْرِكْ بِاللّٰهِ اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ (لقمان:۱۳)

'जब लुक़मान अलैहिस्सलाम ने नसीहत करते वक़्त अपने बेटे से कहा,

'बेटा! अल्लाह के साथ शरीक न करना। शिर्क यक़ीनन बड़ा भारी ज़ुल्म है।'

(लुक़मान 12)

यानी अल्लाह पाक ने हज़रत लुक़मान को बसीरत अता फ़रमाई थी। उन्होंने अक़्ल से मालूम किया कि किसी का हक़ किसी को दे देना बड़ी बे-इंसाफ़ी है। फिर जिसने अल्लाह का हक़ अल्लाह की मख़्लूक़ में से किसी को दिया, उसने बड़े-से-बड़ा हक़ ज़लील से ज़लील आदमी को दे दिया, क्योंकि अल्लाह सबसे बड़ा है और अल्लाह के मुक़ाबले में उसकी मख़्लूक़ की ग़ुलामाना हैसियत है, जैसे कोई शाही ताज एक चमार के सर रख दे, भला इससे बढ़कर और क्या बे-इंसाफ़ी होगी। यक़ीन मानो कि हर आदमी, चाहे वह बड़े से बड़ा इंसान हो या मुक़र्रब फ़रिश्ता, उसकी हैसियत ख़ुदा की शान के मुक़ाबले पर एक चमार की हैसियत से भी ज़्यादा ज़लील है। मालूम हुआ कि जिस तरह शरीअत ने शिर्क को बड़ा भारी गुनाह बताया, उसी तरह अक़्ल भी उसे बड़ा गुनाह मानती है। शिर्क तमाम ऐबों से बड़ा ऐब है, सच्ची बात यही है, क्योंकि इंसान में सबसे बड़ा ऐब यही है कि वह अपने बड़ों की बे अदबी करे। फिर अल्लाह से बढ़ कर बड़ा कौन हो सकता है और शिर्क उसकी शान में बे-अदबी है।

तौहीद ही निजात का रास्ता है

अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया—

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ۝

(انبیاء:۲۵)

'आपसे पहले हमने जो रसूल भी भेजा, हमने उनको यही वह्य की कि मेरे सिवा कोई इबादत का हक़दार नहीं, इसलिए मेरी ही इबादत करो।'

सूरः अंबिया 25

यानी तमाम रसूल अल्लाह के पास यही हुक्म लेकर आए कि सिर्फ़ अल्लाह ही को माना जाए और उसके सिवा किसी को न माना जाए। मालूम हुआ कि तौहीद का हुक्म और शिर्क से रोकना तमाम शरीअतों का एक ही मस्अला है, इसलिए सिर्फ़ यही निजात का रास्ता है, बाक़ी तमाम राहें ग़लत हैं।

अल्लाह तआला शिर्क से बेज़ार है

وَاَخْرَجَ مُسْلِمٌ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: قَالَ اللهُ تَعَالٰى: اَنَا اَغْنَى الشُّرَكَاءِ عَنِ الشِّرْكِ مَنْ عَمِلَ عَمَلاً اَشْرَكَ فِيْهِ مَعِيَ غَيْرِيْ تَرَكْتُهُ وَشِرْكَهُ وَاَنَا مِنْهُ بَرِئٌ.

'हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया, मैं शरीकों में सबसे ज़्यादा शिर्क से बे-परवाह हूं। जिसने कोई ऐसा अमल किया जिसमें उसने मेरे साथ ग़ैर को शरीक किया, तो मैं उसको और उसके शरीक को छोड़ देता हूं और उससे बेज़ार हो जाता हूं।'[1]

यानी जिस तरह और लोग अपनी मुश्तरक चीज़ आपस में बांट लेते हैं, मैं उस तरह नहीं करता, क्योंकि मैं बेपरवाह हूं। जिसने मेरे लिए अमल किया और उसमें ग़ैर को भी शरीक कर लिया, तो मैं अपना हिस्सा भी नहीं लेता, बल्कि सारा अमल दूसरे ही के लिए छोड़ देता हूं और उससे बेज़ार हो जाता हूं। मालूम हुआ कि जो आदमी अल्लाह के लिए कोई काम करे और वही अमल ग़ैर-अल्लाह के वास्ते करे, तो उसने शिर्क किया और यह भी मालूम हुआ कि मुश्रिकों की इबादत, जो अल्लाह के लिए की जाए, क़ाबिले क़ुबूल नहीं है, अल्लाह तआला उससे बेज़ार है।

अज़ल में तौहीद का इक़रार

फ़रमाया अल्लाह तआला ने—

وَاِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْ بَنِيْٓ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَ اَشْهَدَهُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ قَالُوْا بَلٰى شَهِدْنَا اَنْ تَقُوْلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّا كُنَّا عَنْ هٰذَا غٰفِلِيْنَ○ اَوْتَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اَشْرَكَ اٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّنْ بَعْدِهِمْ اَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُوْنَ○ (الاعراف:١٧٢)

---

1. मिश्कात में इसके बाद ये लफ़्ज़ भी हैं, 'मैं उससे बेज़ार हूं । जिस के लिए उसने यह काम किया है, वही इसको उसका बदला दे।' —मिश्कात, एडीशन मुज्तबाई 454

'और जब आपके रब ने बनी आदम की पुश्त से उनकी औलाद निकाली और उनसे इक़रार करवाया (यानी उनसे पूछा) क्या तुम्हारा रब नहीं हूं? वे कहने लगे, क्यों नहीं। हम गवाह हैं (कि तू हमारा रब है)। यह हमने इक़रार इसलिए किया कि कहीं तुम क़ियामत के दिन कहने लगो कि हम तो इस बात से ग़ाफ़िल थे या कहने लगो कि हमारे बाप-दादा ने पहले से शिर्क किया था और हम तो उनकी औलाद थे (जो) उनके बाद (पैदा हुए) तो क्या जो काम बातिल वाले करते रहे, उस के बदले तू हमें हलाक करता है।' —सूरः अल-आराफ़ 173

أَخْرَجَ أَحْمَدُ عَنْ أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ ﷺ فِيْ تَفْسِيْرِ قَوْلِ اللهِ عَزَّوَجَلَّ — وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِنْ بَنِيْ آدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ — قَالَ: جَمَعَهُمْ فَجَعَلَهُمْ أَزْوَاجاً ثُمَّ صَوَّرَهُمْ فَاسْتَنْطَقَهُمْ فَتَكَلَّمُوْا ثُمَّ أَخَذَ عَلَيْهِمُ الْعَهْدَ وَالْمِيْثَاقَ وَ أَشْهَدَهُمْ عَلٰى اَنْفُسِهِمْ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ؟ قَالُوْا بَلٰى، قَالَ: فَإِنِّيْ أُشْهِدُ عَلَيْكُمُ السَّمَاوَاتِ السَّبْعَ وَالْأَرْضِيْنَ السَّبْعَ وَ أُشْهِدُ عَلَيْكُمْ أَبَاكُمْ اٰدَمَ أَنْ تَقُوْلُوْا يَوْمَ الْقِيَامَةِ لَمْ نَعْلَمْ بِهٰذَا اِعْلَمُوْا أَنَّهُ لاَ إِلٰهَ غَيْرِيْ وَلاَرَبَّ غَيْرِىْ وَلاَتُشْرِكُوْا بِيْ شَيْئًا إِنِّيْ سَاُرْسِلُ إِلَيْكُمْ رُسُلِيَ يَذْكُرُوْنَ عَهْدِيْ وَمِيْثَاقِىْ وَأُنْزِلُ عَلَيْكُمْ كُتُبِيْ قَالُوا شَهِدْنَا بِأَنَّكَ رَبُّنَا وَإِلٰهُنَا لاَ رَبَّ لَنَا غَيْرُكَ وَلاَ اِلٰهَ لَنَا غَيْرُكَ۔

'उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस आयत (कि जब आपके रब ने आदम की औलाद से अह्द लिया था) की तफ़्सीर में फ़रमाया कि अल्लाह पाक ने आदम की औलाद को जमा फ़रमाया, फिर उन्हें जोड़ा-जोड़ा बनाया, फिर उनकी शक्लें बनाईं, फिर उन्हें बोलने की ताक़त दी, जब वे बोलने लगे तो उनसे अह्द व पैमान लिया और उन पर ख़ुद उन्हीं को गवाह बना कर फ़रमाया, क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं? उन्होंने जवाब दिया, बेशक आप हमारे रब हैं। फ़रमाया, मैं सातों आसमानों और सातों ज़मीनों को तुम पर गवाह बनाता हूं और तुम्हारे बाप आदम को भी, कहीं क़ियामत के दिन यह न कहने लगो कि हम बेख़बर थे। यक़ीन मानो कि न मेरे सिवा कोई माबूद है और न कोई रब है, मेरे साथ

किसी चीज़ को शरीक न करना। मैं तुम्हारे पास अपने रसूल भेजता रहूंगा जो तुम्हें मेरा यह अह्द व पैमान याद दिलाएंगे और तुम पर अपनी किताबें उतारूंगा। सबने जवाब दिया कि हम इक़रार कर चुके हैं कि आप हमारे रब और माबूद हैं। आपके सिवा न कोई हमारा रब है और न आपके अलावा कोई हमारा माबूद है।'[1]

—मुस्नद अहमद

शिर्क सनद नहीं बन सकता

हज़रत उबई बिन काब ने ऊपर की आयत की तफ़्सीर में फ़रमाया कि अल्लाह पाक ने आदम की तमाम औलाद को एक जगह जमा फ़रमाया, उनके जोड़े-जोड़े लगाए, जैसे— पैग़म्बरों को, वलियों को, शहीदों को, नेक लोगों को, फ़रमांबरदार लोगों को, नाफ़रमानों को और सबको अलग-अलग किया, इसी तरह यहूदियों को, ईसाइयों को, मुश्रिकों को और हर एक दीन वाले को जुदा-जुदा किया, फिर जिस किसी को दुनिया में जो शक्ल देनी थी, उसी शक्ल में उसको वहां ज़ाहिर फ़रमाया, किसी को ख़ूबसूरत, किसी को बद-सूरत, किसी को आंख वाला, किसी को अंधा, किसी को बोलने वाला, किसी को गूंगा, और किसी को लंगड़ा, फिर उन्हें बोलने की ताक़त बख़्शी और उनसे पूछा, क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं? आख़िर सब ने उसके रब होने का इक़रार किया, फिर उनसे यह अह्द व पैमान किया कि मेरे सिवा किसी को हाकिम और मालिक न समझना और मेरे सिवा किसी को माबूद न मानना, इन सब ने अह्द व पैमान लिया। अल्लाह तआला ने आदम अलैहिस्सलाम, सातों आसमानों और सातों ज़मीनों को

---

1. पस उन्होंने इस बात का इक़रार किया और उन पर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को बुलन्द किया, जो इन सबको देख रहे थे। उन्होंने देखा कि उनमें दौलतमंद भी हैं और फ़क़ीर भी, ख़ूबसूरत भी हैं और बद-सूरत भी, तो सवाल किया, ऐ परवरदिगार! तूने क्यों इन सबको एक जैसा नहीं बनाया? फ़रमाया, मैं पसन्द करता हूं कि मेरा शुक्र अदा किया जाए। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने देखा कि इन लोगों में अंबिया किराम भी हैं। वे चिराग़ों की तरह रोशन हैं ओर उनके चेहरों पर नूर है, नबियों से अल्लाह तआला ने रिसालत व नुबूवत के सिलसिले में इक़रार भी लिया। इससे मुराद वह इक़रार जिसका ज़िक्र क़ुरआन में यों आया है (और वह वक़्त भी था) जब हमने पैग़म्बरों से अहद लिया और आपसे और नूह से और इब्राहीम से और मूसा से और मरयम के बेटे ईसा से।

गवाह बनाया और फ़रमाया कि तुम्हारे इस इक़रार को याद दिलाने के लिए पैग़म्बर आएंगे और अपने साथ आसमानी किताबें लाएंगे। शुरू में हर आदमी अकेले-अकेले तौहीद का इक़रार और शिर्क से इंकार कर आया है, इसलिए शिर्क में किसी को नज़ीर के तौर पर न पेश किया जाए, न पीर व फ़क़ीर को, न बाप-दादा को, न बादशाह को, न मौलवी को और न बुज़ुर्ग को।

भूल का उज़्र क़ुबूल न होगा

अगर कोई यह ख़्याल करे कि दुनिया में आकर हमें वह इक़रार याद न रहा, अब अगर हम शिर्क करें तो हमारी पकड़ न होगी, क्योंकि भूल में पकड़ नहीं, तो उसका जवाब यह है कि इंसान को बहुत-सी बातें याद नहीं रहतीं, लेकिन भरोसे लायक़ लोगों के याद दिलाने पर यक़ीन आ जाता है, जैसे किसी को अपनी पैदाइश की तारीख़ याद नहीं, फिर लोगों से सुनकर यक़ीन से कहता है, कि मेरी पैदाइश की तारीख़ फ़्लां साल, फ़्लां दिन और फ़्ला घड़ी है। लोगों को सुनकर ही मां-बाप को पहचानता है, किसी और को मां नहीं समझता। अगर कोई अपनी मां का हक़ अदा न करे और किसी और को मां बता दे, तो दुनिया उस पर थूकेगी और अगर वह यह जवाब दे कि भले आदमियो! मुझे तो अपना पैदा होना याद नहीं कि मैं उसको मां समझूं, तुम बे-वजह मुझे बुरा कह रहे हो, तो लोग उसे परले दर्जे का बेवक़ूफ़ और बड़ा ही बे-अदब समझेंगे। मालूम हुआ कि जब आम लोगों के कहने से इंसान को बहुत सी बातों का यक़ीन हो जाता है, तो नबियों की तो शान ही बड़ी है, उनके बताने से किस तरह यक़ीन नहीं आ सकता?

रसूलों और किताबों की बुनियादी तालीम

मालूम हुआ कि तौहीद अख़्तियार करने की और शिर्क से बचने की रूहों की दुनिया में सबको अलग-अलग ताकीद कर दी गई है, तमाम पैग़म्बर उसी को याद दिलाने और उसी अह्द को नया करने के लिए भेजे गए, एक लाख चौबीस हज़ार पैग़म्बरों का आलीशान फ़रमान और एक सौ चार इलाही किताबों का मर्कज़ी इल्म इसी एक प्वाइंट में है कि ख़बरदार! तौहीद में ख़लल न आने दो और शिर्क के पास भी न फटको। अल्लाह के सिवा किसी को हाकिम व

मुतसर्रिफ़ न समझो, न ग़ैर-अल्लाह को मालिक मानो कि उनसे डर कर अपने ईमान को न बिगाड़ना चाहिए, अपनी मुरादें मांगो और उसके पास अपनी मुरादें ले आओ।

नीचे की हदीस के मालूम होने के बाद तो किसी हालत में भी शिर्क की कोई गुंजाइश बाक़ी नहीं रहती।

وَأَخْرَجَ أَحْمَدُ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ ﷺ قَالَ قَالَ لِي رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ لَاتُشْرِكْ بِاللّٰهِ شَيْئًا وَإِنْ قُتِلْتَ وَحُرِّقْتَ۔

'हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मुझसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक न कर, चाहे तुझे मार डाला जाए या जला दिया जाए।'

(मुस्नद अहमद)

यानी अल्लाह के सिवा किसी को अपना माबूद न तस्लीम कर और इस बात की परवाह न कर कि कोई जिन्न या शैतान तुझे सताएगा, जिस तरह मुसलमानों को ज़ाहिरी मुसीबतों पर सब्र करना चाहिए और उनके डर से अपना ईमान न बिगाड़ना चाहिए, उसी तरह बातिनी तक्लीफ़ों पर भी (जिन्न, भूत वग़ैरह की ईज़ाओं पर भी) सब्र से काम लेना चाहिए, यह अक़ीदा रखना चाहिए कि हक़ीक़त में हर चीज़, भले ही तक्लीफ़ हो या आराम, अल्लाह के अख़्तियार में है, अल्लाह तआला कभी-कभी ईमान वालों की आज़माइश फ़रमाता है, मोमिन को ईमान के मुताबिक़ आज़माया जाता है। कभी बुरों के हाथों नेकों को तक्लीफ़ें पहुंचाई जाती हैं, ताकि मुख़्लिसों और मुनाफ़िक़ों में तमीज़ हो जाए, इसलिए जिस तरह देखने में पारसाओं को नाफ़रमानों से और मुसलमानों को काफ़िरों से अल्लाह के इरादे से तक्लीफ़ पहुंच जाती है और वे सब्र ही से काम लेते हैं, तक्लीफ़ों से घबड़ा कर ईमान नहीं बिगाड़ते, उसी तरह कभी-कभी नेक लोगों को जिन्नों और शैतानों से अल्लाह के इरादे से तक्लीफ़ पहुंच जाती है, इसलिए उस पर सब्र व तहम्मुल से काम लिया जाए और तक्लीफ़ के अंदेशे से उन्हें हरगिज़-हरगिज़ नहीं मानना चाहिए। मालूम हुआ कि अगर कोई आदमी शिर्क से

अलग होकर ग़ैर-अल्लाह को छोड़ दे, उनकी नज़्र व नियाज़ की निन्दा करे और ग़लत रस्मों को मिटाए, फिर इस राह में उसको कुछ माली या जानी नुक़सान पहुंच जाएं या कोई शैतान उसे किसी पीर व शहीद के नाम से सताने लगे, तो वह यह समझ ले कि अल्लाह पाक मेरा ईमान आज़मा रहा है, इसलिए उसे खुले दिल से सह लेना चाहिए और ईमान पर क़ायम रहना चाहिए। याद रखो, जिस तरह अल्लाह पाक ज़ालिमों को ढील देकर पकड़ता है और मज़्लूमों को उनके ज़ुल्म के पंजे से छुड़ाता है, उसी तरह ज़ालिम जिन्नों को भी वक़्त आने पर पकड़ेगा और तौहीद के परस्तारों को उनके ज़ुल्म से निजात बख़्शेगा।

وَأَخْرَجَ الشَّيْخَانُ عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ ﷺ قَالَ قَالَ رَجُلٌ يَارَسُوْلَ اللهِ أَىُّ الذَّنْبِ أَكْبَرُ عِنْدَ اللهِ قَالَ أَنْ تَدْعُوا لِلّٰهِ نِدًّا وَهُوَ خَلَقَكَ۔

'हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक आदमी ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! सबसे बड़ा गुनाह कौन-सा है? फ़रमाया कि तू किसी को अल्लाह जैसा समझकर पुकारे, हालांकि अल्लाह ने तुझे पैदा किया है?'

—बुख़ारी, मुस्लिम

यानी जिस तरह अल्लाह को (उसके इल्म व क़ुदरत के लिहाज़ से) हाज़िर व नाज़िर समझा जाता है और कायनात का तसर्रुफ़ उसी के क़ब्ज़े में बताया जाता है, इसी वजह से हर मुश्किल के वक़्त उसे पुकारा जाता है, इसी तरह ग़ैर-अल्लाह को उसी सिफ़त से मुत्तसिफ़ मान कर पुकारना सबसे बड़ा गुनाह है, इसलिए किसी में भी ज़रूरत पूरी करने की और हर जगह हाज़िर व नाज़िर रहने की सलाहियत नहीं, अलावा इसके कि जब हमारा पैदा करने वाला अल्लाह है, तो हमें अपने मुश्किल वक़्तों में उसी को पुकारना चाहिए, किसी और से हमें क्या वास्ता, जैसे कोई किसी बादशाह का ग़ुलाम हो गया, तो वह अपनी हर ज़रूरत अपने बादशाह ही के पास ले जाएगा, उसे दूसरे बादशाहों से क्या वास्ता। किसी भंगी, चमार का तो ज़िक्र ही क्या है और यहां तो कोई दूसरा है ही नहीं, जो अल्लाह के मुक़ाबले का हो, फिर दूसरे के पास ज़रूरत को ले जाना नादानी नहीं तो और क्या है?

तौहीद और मग़्फ़िरत

أَخْرَجَ التِّرْمِذِیُ عَنْ أَنَسٍ ﷺ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ قَالَ اللهُ تَعَالٰی يَا ابْنَ آدَمَ إِنَّكَ لَوْ اَتَيْتَنِیْ بِقُرَابِ الْأَرْضِ خَطَايَا ثُمَّ لَقِيْتَنِیْ لَاتُشْرِكُ بِیْ شَيْئًا فَاَتَيْتُكَ بِقُرَابِهَا مَغْفِرَةً۔

'हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया, ऐ आदम के बेटे! अगर तू मुझसे दुनिया भर के गुनाह साथ लेकर मिले, मगर मेरे साथ किसी चीज़ को शरीक न ठहराया हो, तो मैं दुनिया भर की बख़्शिश के साथ तुझसे मिलूंगा।'

—तिर्मिज़ी, अहमद, दारमी

यानी दुनिया में बड़े-बड़े गुनाहगार लोग गुज़रे हैं, जिनमें हामान व फ़िरऔन वग़ैरह थे और शैतान भी इस दुनिया में है। इन तमाम गुनाहगारों से दुनिया में जिस क़दर गुनाह हुए और क़ियामत तक होंगे, अगर मान लीजिए एक आदमी कर गुज़रे, लेकिन शिर्क से पाक हो तो जिस क़दर उसके गुनाह हैं, उसी क़दर अल्लाह तआला की रहमत व मग़्फ़िरत उस पर नाज़िल हो जाएगी। मालूम हुआ कि तौहीद की बरकत से सारे गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं।[1]

जिस तरह शिर्क की नहूसत से सारे अच्छे अमल ग़ारत कर दिए जाते हैं, सच भी यही है कि जब इंसान शिर्क से हर तरह पाक व साफ़ होगा और उसका यह अक़ीदा होगा कि अल्लाह के सिवा कोई मालिक नहीं, उसकी हुकूमत से भाग कर कहीं जाने की जगह नहीं, अल्लाह तआला के नाफ़रमानों को कोई पनाह देने वाला नहीं, उसके सामने सब बेबस हैं, उसके हुक्म को कोई टाल नहीं सकता, उसके सामने किसी की हिमायत काम नहीं आती और कोई किसी की सिफ़ारिश उसकी इजाज़त के बग़ैर न कर सकेगा, इन अक़ीदों के बाद उससे जितने गुनाह

---

1. हदीस का मक़सद यह है कि शिर्क की इंतिहाई बुराई नज़रों में आ जाए। इससे यह नहीं समझना चाहिए कि शिर्क से पाक होने के बाद दूसरे गुनाहों के करने में कोई हरज नहीं। गुनाहों की माफ़ी के ताल्लुक़ से शरीअत का आम क़ानून नज़र में रहना चाहिए, यानी तौबा और माफ़ी। शिर्क बग़ैर तौबा के माफ़ नहीं हो सकता।

भी होंगे, बशर होने के तक़ाज़े के तौर पर होंगे या भूल-चूक से। फिर भी इन गुनाहों के बोझ में वह दबा जा रहा होगा और सख़्त बेज़ार होगा, नदामत के मारे सर न उठा सकेगा। बेशक ऐसे आदमी पर अल्लाह की रहमत नाज़िल होती है। जैसे-जैसे ये गुनाह बढ़ते जाएंगे, वैसे-वैसे उसकी नदामत की कैफ़ियत बढ़ती जाएगी और ज्यों-ज्यों यह कैफ़ियत बढ़ेगी, अल्लाह की रहमत बढ़ती जाएगी। यह बात याद रखो कि जो तौहीद में पक्का है, उस का गुनाह भी वह काम करता है जो दूसरों की इबादत नहीं करती। एक फ़ासिक़ तौहीद का मानने वाला, मुत्तक़ी मुशिरक से हज़ार दर्जे अच्छा है, जैसे एक मुज्रिम आदमी, बाग़ी, ख़ुशामदी से हज़ार दर्जे अच्छा है, क्योंकि पहला अपने क़ुसूर पर शर्मिंदा है और दूसरा घमंडी।

चौथा बाब

इल्म में शिर्क की तर्दीद (खंडन)

अल्लाह का फ़रमान है—

وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَايَعْلَمُهَآ اِلَّا هُوَ ط وَيَعْلَمُ مَافِى الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ اِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَاحَبَّةٍ فِىْ ظُلُمٰتِ الْاَرْضِ وَلَارَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ اِلَّا فِىْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿الانعام:٥٩﴾

'अल्लाह ही के पास ग़ैब की कुंजियां हैं, जिन्हें वही जानता है और जो कुछ ख़ुश्की और तरी में है, उसे भी जानता है, जो भी पत्ता गिरता है, उसे भी जानता है, ज़मीन के नीचे अंधेरों में कोई दाना ऐसा नहीं और कोई तर और ख़ुश्क चीज़ ऐसी नहीं, जो खोल कर लिखी हुई न हो।' (सूरः अल-अनआम, 59)

यानी अल्लाह पाक ने इंसान को ज़ाहिरी चीज़ें मालूम करने के लिए कुछ चीज़ें दी हैं, जैसे देखने को आंख, सुनने को कान, सूंधने को नाक, चखने को ज़ुबान, टटोलने को हाथ और समझने को अक़्ल बख़्शी है, फिर ये चीज़ें इंसान के क़ब्ज़ा व अख़्तियार में दे दी हैं कि जब चाहे उनसे काम ले सके, जैसे आंख से देखना चाहा, आंख खोल दी, न चाहा, बन्द कर ली, इसी पर हर एक अंग को सोच ले और इंसानों की ज़ाहिरी चीज़ों को मालूम करने की कुंजियां दे दी हैं, जैसे कुंजी वाले ही के अख़्तियार में ताले का खोलना या न खोलना है, इसी तरह ज़ाहिरी चीज़ों का मालूम करना इंसान के अख़्तियार में है, चाहे मालूम करे या न करे।

ग़ैब का इल्म सिर्फ़ अल्लाह तआला को है

इसके ख़िलाफ़ ग़ैब का मालूम करना इंसान के अख़्तियार से बाहर है। इसकी कुंजियां अल्लाह तआला ने अपने पास रखी हैं। किसी बड़े से बड़े इंसान

या सबसे क़रीबी फ़रिश्ते को भी ग़ैब को मालूम करने का अख़्तियार नहीं दिया गया कि जब चाहें, अपनी मर्ज़ी से ग़ैब मालूम कर लें और जब चाहें, न करें, बल्कि अल्लाह पाक अपनी मर्ज़ी से कभी किसी को ग़ैब की जिस क़दर बात बताना चाहता है, बता देता है। यह ग़ैब का बता देना अल्लाह के इरादे पर मौक़ूफ़ है, किसी की ख़्वाहिश पर नहीं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कई बार ऐसा इत्तिफ़ाक़ हुआ कि आपको ग़ैब की बातें मालूम करने की ख़्वाहिश हुई। मगर वह बात आपको मालूम न हो सकी, फिर जब अल्लाह का इरादा हुआ तो फ़ौरन बता दी गई। रिसालत-दौर में मुनाफ़िक़ों ने उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा पर इलज़ाम लगाया, इससे आपको सख़्त सदमा हुआ। आपने कई दिनों तक मामले की कुरेद की, मगर कुछ भी न मालूम हो सका। फिर जब अल्लाह तआला ने चाहा तो वह्य भेज कर बता दिया कि मुनाफ़िक़ झूठे हैं। हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि0 पाक दामन हैं। अब एक मुसलमान तौहीद परस्त का यह अक़ीदा होना ज़रूरी है कि अल्लाह ने ग़ैब के ख़ज़ानों की कुंजियां अपने ही पास रखी हैं। इन ख़ज़ानों का किसी को ख़ज़ानची नहीं बनाया। वह ख़ुद अपने हाथ से ताला खोलकर जिए किसी को जिस क़दर चाहे दे दे, उसका हाथ कौन पकड़ सकता है।

ग़ैब के इल्म का दावेदार झूठा

इससे मालूम हुआ कि जो यह दावा करे कि मैं ऐसा इल्म जानता हूं, जिससे आगे की बात मालूम कर लेता हूं और माज़ी और मुस्तक़्बिल की बातें बता सकता हूं, वह झूठा है और अल्लाह होने का दावा करता है। अगर किसी नबी या वली या जिन्न या फ़रिश्ते या इमाम या बुज़ुर्ग या पीर या शहीद या नुजूमी या रम्माल या जफ़्फ़ार या फ़ाल खोलने वाला पंडित या भूत-प्रेत या परियों को ऐसा मान लिया जाए, तो मानने वाला मुश्रिक होता है और ज़िक्र की गई आयत का इन्कार करता है। अगर इत्तिफ़ाक़ से किसी नजूम वग़ैरह की बात सही भी हो जाए तो इससे उनकी ग़ैबदानी साबित नहीं होती, क्योंकि ज़्यादा तर उनकी बातें ग़लत ही होती हैं। मालूम हुआ कि इल्मे ग़ैब उनके बसकी बात नहीं। अटकल कभी ठीक, कभी ग़लत भी हो जाता है। कहानत, कश्फ़ और क़ुरआन पाक से भी फ़ाल लेने का यही

हाल है, लेकिन वह्य कभी ग़लत नहीं होती और वह उसके क़ाबू में नहीं, अल्लाह पाक अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ जो चाहता है, बता देता है– किसी की ख़्वाहिश पर वह्य का दारोमदार नहीं, अल्लाह तआला फ़रमाते हैं–

قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الْغَيْبَ اِلَّا اللّٰهُ وَمَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ (النمل:٦٥)

'आप फ़रमा दें अल्लाह के सिवा आसमान व ज़मीन में जो कोई भी है, ग़ैब की बातें नहीं जानता, बल्कि वे तो यह भी नहीं जानते कि वे कब उठाए जाएंगे।'

–सूरः नम्ल 65

यानी ग़ैब को जानना किसी के बस की बात नहीं, चाहे वह बड़े से बड़ा इंसान या फ़रिश्ता ही क्यों न हो, जिसकी दलील यह है कि दुनिया जानती है कि क़ियामत आएगी, लेकिन यह किसी को ख़बर नहीं कि कब आएगी। अगर हर चीज़ का मालूम करना उनके बस में होता तो क़ियामत के आने की तारीख़ भी मालूम कर लेते।

ग़ैब की बातें

اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ وَيَعْلَمُ مَا فِى الْاَرْحَامِ وَمَاتَدْرِىْ نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا وَمَاتَدْرِىْ نَفْسٌ بِاَىِّ اَرْضٍ تَمُوْتُ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ○ (لقمان:٣٤)

'बेशक अल्लाह ही के पास क़ियामत का इल्म है, वही बारिश बरसाता है, वही पेट के बच्चे को जानता है, किसी को नहीं मालूम कि कल क्या कमाएगा और न यह मालूम कि कहां मरेगा। याद रखो, अल्लाह ख़ूब जानने वाला और बड़ा ख़बरदार है।'

(सूरः लुक़मान 34)

यानी ग़ैब की बातों की ख़बर अल्लाह ही को है। उसके सिवा कोई ग़ैब जानने वाला नहीं, चुनांचे क़ियामत की ख़बर भी, जिसका आना आम लोगों में मशहूर है ओर यक़ीनी है, किसी को नहीं मालूम कि कब आएगी, फिर और चीज़ों

का तो क्या कहना, जैसे हार-जीत का सेहरा, मरज़ का और इसी क़िस्म की दूसरी बातों का किसी को भी इल्म नहीं। ये बातें न तो क़ियामत की तरह मशहूर हैं और न यक़ीनी हैं। इसी तरह बारिश से किसी को ख़बर नहीं कि वह कब होगी, हालांकि मौसम भी मुक़र्रर है और अक्सर मौसम में बारिश होती भी है। अक्सर लोगों को इसकी ख़्वाहिश भी रहती है। अगर इसका वक़्त किसी तरह मालूम हो सकता तो किसी न किसी को ज़रूर मालूम हो जाता। फिर जो बे-मौसम की चीज़ें हैं और तमाम लोगों की ख़्वाहिश उनसे वाबिस्ता भी नहीं, जैसे किसी आदमी की मौत व हयात या औलाद का न होना या होना या मालदार व नादार होना या हार-जीत का होना, इन चीज़ों की भला कैसे किसी को ख़बर हो सकती है, पेट के बच्चे को भी कोई नहीं जानता कि[1] एक है या एक से ज़्यादा, नर है या मादा, पूरा है या अधूरा और ख़ुबसूरत है या बदसूरत, हालांकि साइंसदां इन तमाम बातों की वज्हें बताते हैं, लेकिन ख़ुसूसियत से किसी का हाल मालूम नहीं, फिर इंसान के अन्दरूनी हालात भला कैसे कोई मालूम कर सकता है और इंसान जब अपने मरने की जगह नहीं जानता, तो फिर भला मरने का दिन या वक़्त कैसे जान सकता है? बहरहाल अल्लाह के सिवा कोई आगे की बातें अपने अख़्तियार से नहीं जानता। मालूम हुआ कि ग़ैबदानी का दावा करने वाले सब झूठे हैं, कश्फ़, कहानत, रमल, नजूम, जफ़र, फ़ालें, सब झूठ, मक्र और शैतानी जाल हैं, मुसलमानों को इनमें हरगिज़ नहीं फंसना चाहिए। अगर कोई आदमी ग़ैबदानी का दावा न करे और यह दावा करे कि अल्लाह तआला ने जो बात मुझे बताई है, वह मेरे अख़्तियार में न थी कि जब चाहता मालूम कर लेता, तो इसमें दोनों बातें मुम्किन हैं। हो सकता है कि वह सच्चा हो और यह भी मुम्किन है कि वह झूठा हो।

अल्लाह के सिवा किसी को न पुकारो

وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗٓ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَهُمْ عَنْ دُعَآئِهِمْ غٰفِلُوْنَ۝ (الاحقاف:٥)

---

1. आज की डाक्टरी साईंस भी सिर्फ़ उसी वक़्त बच्चे की जिंस का अन्दाज़ा कर सकती है, जब कि वह पैदा होने के आख़िरी मरहले में है।

'उससे बढ़ कर गुमराह कौन होगा जो अल्लाह को छोड़कर ऐसों को पुकार रहा है, जो क़ियामत तक भी उसकी बात का न जवाब दे सकेंगे, बल्कि वे उसकी पुकार ही से बे-ख़बर हैं।' —सूरः अहक़ाफ़ : 5

यानी मुश्रिक परले दर्जे के मूर्ख हैं कि अल्लाह तआला जैसे क़ुदरत और इल्म वाले को छोड़ कर दूसरों को पुकारते हैं, जो न तो उनकी पुकार को सुनते हैं और न किसी बात की उनमें क़ुदरत व सकत है। अगर ये क़ियामत तक भी पुकारते रहें, तो वे कुछ भी नहीं कर सकते। मालूम हुआ कि जो लोग बुज़ुर्गों को दूर से पुकारते हैं और उन्हें पुकार कर सिर्फ़ यही कहते हैं कि या हज़रत! आप दुआ फ़रमा दें कि अल्लाह तआला हमारी ज़रूरत पूरी कर दें, यह भी शिर्क है, चाहे वे इस वजह से उसको शिर्क न समझते हों कि ज़रूरत पूरी करने की दुआ तो अल्लाह ही से की गई है, क्योंकि ग़ालिब आदमी को पुकारने की वजह से उसमें शिर्क आया कि उनके बारे में यह एतक़ाद रखा गया कि वे दूर से और क़रीब से सुनते हैं, हालांकि यह इलाही शान है और इस आयत में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि वे उनके पुकारने से बेख़बर हैं, पुकारने वाले की पुकार सुनते ही नहीं, चाहे वह क़ियामत तक चीख़ता रहे।

नफ़ा व नुक़सान का मालिक सिर्फ़ अल्लाह है

قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِىْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا اِلَّا مَاشَآءَ اللّٰهُ وَلَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ وَمَا مَسَّنِىَ السُّوْٓءُ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ۝ (الاعراف:١٨٨)

'आप फ़रमा दें कि मुझे अपने लिए भलाई-बुराई का अख़्तियार नहीं, मगर जो अल्लाह को मंज़ूर हो। अगर मैं ग़ैब जानता तो कसरत से भलाई जमा कर लेता (यानी अपनी हिफ़ाज़त का सामान पहले से कर लेता) और मुझे कोई तक्लीफ़ प पहुंचती, मैं तो सिर्फ़ ईमान वालों को डराने वाला और ख़ुशख़बरी सुनाने वाला हूं।' —सूरः आराफ़ 188

यानी पैग़म्बरे इस्लाम अलैहिस्सलातु वस्सलाम नबियों के सरदार हैं। आपसे बड़े-बड़े मोजज़े ज़ाहिर हुए। लोगों ने आपसे दीन के असरार व रुमूज़ सीखे, लोगों

को आपकी राह चलने से बुज़ुर्गी नसीब हुई। अल्लाह पाक ने आप ही से फ़रमाया कि लोगों के सामने अपना हाल बयान फ़रमा दें कि मुझे न तो क़ुदरत हासिल है और न ही ग़ैबदां हूं। मेरी क़ुदरत का इस से अन्दाज़ा लगाओ कि मैं अपनी जान तक के लिए नफ़ा व नुक़्सान का मालिक नहीं, दूसरों को तो क्या भलाई-बुराई पहुंचा सकूंगा। अगर में ग़ैबदां होता तो काम से पहले उसका अंजाम मालूम कर लिया करता। अगर उसका अंजाम बुरा मालूम होता, तो उस में कभी हाथ न डालता। ग़ैबदानी अल्लाह की शान है और मैं पैग़म्बर हूं। पैग़म्बर का सिर्फ़ इतना काम होता है कि वह बुरे कामों के अंजाम से ख़बरदार कर दे और नेक कामों पर ख़ुशख़बरी सुना दे। यह बात भी उन्हीं को फ़ायदा पहुंचाती है, जिनके दिलों में यक़ीन हो और यक़ीन पैदा करना अल्लाह ही का काम है।

अंबिया का असल काम

मालूम हुआ कि अंबिया और औलिया में यही बड़ाई है कि वे अल्लाह की राह बताते हैं और जिन अच्छे-बुरे कामों को जानते हैं, उनसे लोगों को आगाह करते हैं। अल्लाह पाक ने उनकी तब्लीग़ में तासीर रखी है। बहुत-से लोग उनकी तब्लीग़ से सीधी राह पर आ जाते हैं। यह कोई बड़ाई नहीं कि उन्हें दुनिया के तसर्रुफ़ की क़ुदरत दी गई हो कि जिसे चाहें मार डालें या बेटा-बेटी दे दें या आई बला टाल दें या मुरादें बर लाएं या फ़त्ह व शिकस्त दे दें या तवंगर बना दें या फ़क़ीर व क़ल्लाश कर दें या किसी को बादशाह बना दें और किसी के हाथ में गदाई का प्याला दे दें या किसी को अमीर या वज़ीर बना दें और किसी को फ़क़ीर व हक़ीर बना दें, किसी को के दिल में ईमान डाल दें और किसी से छीन लें, किसी बीमार को तन्दुरुस्त बना दें या तन्दुरुस्त को बीमार कर दें। यह अल्लाह ही की शान है और अल्लाह तआला के सिवा हर छोटा,बड़ा, यह काम करने से आजिज़ है और इज्ज़ में सब बराबर हैं।

अंबिया ग़ैबदान नहीं

इसी तरह यह कोई बड़ाई नहीं कि अल्लाह तआला ग़ैब की दुनिया उन्हें दे दे कि जब चाहें किसी के दिल की बात मालूम कर लें या जिस ग़ैब की बात को चाहें मालूम कर लें कि फ़्लां के यहां औलाद होगी या नहीं, तिजारत में

फ़ायदा होगा या नहीं या लड़ाई में जीत होगी या हार, इन बातों में सब छोटे-बड़े बराबर बे-ख़बर हैं। फिर जिस तरह कोई बात अक़्ल से या किसी क़रीने से कह दी जाती है और वह उसी तरह हो जाती है, जिस तरह कही गई थी, उसी तरह ये बड़े लोग भी जो बात अक़्ल व क़रीने से कह देते हैं, कभी तो वह ठीक हो जाती है और कभी ग़लत हो जाती है, लेकिन वह्य या इलहाम की बात ग़लत नहीं होती, मगर वह्य अख़्तियार में नहीं होती।

ग़ैब के इल्म के बारे में प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इर्शादात

أَخْرَجَ الْبُخَارِيُّ عَنِ الرَّبِيعِ بِنْتِ مُعَوَّذِ بْنِ عَفْرَاءَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ جَآءَ النَّبِيُّ ﷺ فَدَخَلَ حِيْنَ بُنِيَ عَلَيَّ فَجَلَسَ عَلٰى فِرَاشِيْ كَمَجْلِسِكَ مِنِّيْ فَجَعَلَتْ جُوَيْرِيَاتٌ لَنَا يَضْرِبْنَ بِالدُّفِّ وَيَنْدُبْنَ مَنْ قُتِلَ مِنْ اٰبَآئِيْ يَوْمَ بَدْرٍ اِذْ قَالَتْ اِحْدَاهُنَّ وَفِيْنَا نَبِيٌّ يَعْلَمُ مَافِيْ غَدٍ فَقَالَ دَعِيْ هٰذَا وَقُوْلِيْ بِالَّذِيْ كُنْتِ تَقُوْلِيْنَ۔

'रबीअ बिन्त मुअव्वज़ बिन अफ़रा रज़ियल्लाहु अन्हा'[1] से रिवायत है कि मेरी रुख़्सती के वक़्त अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे पास आए, फिर मेरे बिस्तर पर मेरे पास इतने नज़दीक बैठे जिस तरह तुम बैठे हो। हमारी कुछ बच्चियां दफ़ बजा-बजा कर बद्र के मक़्तूलों का वाक़िया बयान करने लगीं। एक ने यह भी कह दिया कि हमारा नबी कल की बात जानता है। फ़रमाया, यह बात छोड़ दे और जो पहले कह रही थी, वही कहती रह।' —बुख़ारी

यानी रबीअ़ अंसारिया की शादी के मौक़े पर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन के पास आ बैठे। बच्चियों ने गाने में यह भी कह दिया

---

1. अफ़रा, हज़रात औफ़, मुअव्वज़ और मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हुम की मां का नाम है। हज़रत अफ़रा रज़ियल्लाहु अन्हा के छः बेटे थे, जो सबके सब बद्र की लड़ाई में शरीक हुए। उनमें से दो बद्र की लड़ाई में शहीद हो गए और मुआज़ और मुअव्वज़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने मिलकर अबू जह्ल को मारा था।

कि हमारा नबी कल की बात जानता है। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे माना किया और फ़रमाया कि यह बात न कह।

मालूम हुआ कि किसी बड़े से बड़े इंसान के बारे में यह अक़ीदा न रखो कि वह ग़ैबदां है। शायर लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तारीफ़ में जो आसमान व ज़मीन के क़ुलाबे मिलाया करते हैं और कह देते हैं कि मुबालग़े के तौर पर ऐसा कहा गया, यह ग़लत है, क्योंकि आपने अपनी तारीफ़ का इसी क़िस्म का शेर (पद) बच्चियों को भी न पढ़ने दिया, कहां यह कि अक़्ल वाला शायर इस क़िस्म के शेर कहे या सुने।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा का इर्शाद

أَخْرَجَ الْبُخَارِيُّ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ مَنْ أَخْبَرَكَ أَنَّ مُحَمَّدًا يَعْلَمُ الْخَمْسَ الَّتِيْ قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى إِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ فَقَدْ أَعْظَمَ الْفِرِيَّةَ۔

'हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया, जिसने तुम्हें ख़बर दी कि मुहम्मद ररसुलूल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन पांच बातों को जानते थे जिनकी अल्ला:ह पाक ने इस आयत 'इन्नल्ला-ह इन्दहू इल्मु स्साअ़ति' (बेशक अल्लाह के पास क़ियामत का इल्म है) में ख़बर दी है, उसने बड़ा ज़बरदस्त बोहतान बांधा।'

—बुख़ारी

वे पांच बातें सूर: लुक़मान के आख़िर में हैं जिसका बयान गुज़र चुका कि तमाम ग़ैब की बातें इन ही पांच चीज़ों में दाख़िल हैं, इसलिए जो कोई यह कहे कि आप ग़ैब की सब बातें जानते थे, उसने बड़ा भारी बोहतान बांधा। ग़ैब तो अल्लाह के सिवा कोई जानता ही नहीं।

أَخْرَجَ الْبُخَارِيُّ عَنْ أُمِّ الْعَلَاءِ الْأَنْصَارِيَّةِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ وَاللّٰهِ لَا أَدْرِيْ وَأَنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ مَا يُفْعَلُ بِيْ وَلَا بِكُمْ۔

'उम्मे अला रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम मुझे मालूम नहीं,

हालांकि मैं अल्लाह का रसूल हूं कि मेरे साथ क्या पेश आएगा और तुम्हारे साथ क्या होगा?'

—बुख़ारी

यानी अल्लाह पाक बन्दों से दुनिया में या क़ब्र में या आख़िरत में जो मामला करेगा, उसका हाल किसी को भी मालूम नहीं, न नबी को, न वली को, न अपना हाल मालूम, न दूसरों का हाल मालूम। अगर वह्य के ज़रिए किसी को यह मालूम हो जाए कि फ़्लां का अंजाम बख़ैर है, तो वह एक मुज्मल इल्म है, इससे ज़्यादा मालूम करना उनके बस से बाहर है।

पांचवा बाब

तसर्रुफ़ में शिर्क की तर्दीद (खडंन)

قُلْ مَنْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَىْءٍ وَّهُوَ يُجِيْرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ○ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ قُلْ فَاَنّٰى تُسْحَرُوْنَ○ (المومنون:٨٨،٨٩)

'आप फ़रमा दें, कौन है जिसके हाथ में हर चीज़ का अख़्तियार है और वह पनाह देता है और उसके मुक़ाबले में कोई पनाह नहीं दे सकता। अगर तुम जानते हो तो बताओ, वह अल्लाह ही को बताएंगे। आप फ़रमा दें, फिर क्यों दीवाने बन जाते हो?'
—अल-मोमिनून 88-89

यानी जिस मुश्रिक से पूछा जाए कि ऐसी शान किस की है, जिसके अख़्तियार व तसर्रुफ़ में हर चीज़ है, जो चाहे करे, उसका कोई हाथ पकड़ने वाला न हो और कोई उनकी बात टाल न सके तो वे कहेंगे, अल्लाह तआला ही है, तो फिर दूसरों से मुरादें मांगना पागलपन हुआ। मालूम हुआ कि रिसालत के दौर में लोग इस बात के क़ायल थे कि अल्लाह के बराबर और मुक़ाबले का कोई नहीं, मगर बुतों को अपना वकील समझ कर पूजते थे और उनसे मांगते थे, इसी वजह से मुश्रिक हुए। आज भी अगर कोई दुनिया में किसी मख़्लूक़ के तसर्रुफ़ का क़ायल हो और अपना वकील समझ कर इबादत करे तो मुश्रिक कहा जाएगा, चाहे उसको अल्लाह तआला के बराबर न समझता हो और उसके मुक़ाबले की ताक़त उसमें न जानता हो।

नफ़ा व नुक़्सान का मालिक सिर्फ़ अल्लाह है

قُلْ اِنِّىْ لَآ اَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا رَشَدًا○ قُلْ اِنِّىْ لَنْ يُّجِيْرَنِىْ مِنَ اللّٰهِ اَحَدٌ وَّلَنْ اَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا○ (الجن:٢١،٢٢)

'(ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आप फ़रमा दें कि मैं तुम्हारे

लिए नफ़ा व नुक़्सान का अख़्तियार नहीं रखता। आप फ़रमा दें कि मुझे कोई अल्लाह से हरगिज़ हरगिज़ नहीं बचा सकता और मैं उसके सिवा कहीं बचाव नहीं पाता।'

—(अल-जिन्न 21-22)

यानी मैं तुम्हारे नफ़ा व नुक़्सान पर अख़्तियार नहीं रखता। मेरे उम्मती होने की वजह से तुम लोग मग़रूर होकर यह ख़्याल करके हद से आगे न बढ़ना कि हमारा पाया मज़बूत है, हमारा वकील ज़बरदस्त है और हमारा शफ़ीअ़ बड़ा महबूब है। हम जो चाहे करें, वह हमें अल्लाह के अज़ाब से बचा लेगा, क्योंकि मैं तो ख़ुद ही डरता हूं और अल्लाह के सिवा कहीं पनाहगाह नहीं देखता, दूसरों को क्या बचा सकूंगा। मालूम हुआ कि जो अवाम पीरों पर भरोसा करके अल्लाह को भूल जाते हैं और हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी करते हैं, वाक़ई में गुमराह हैं, क्योंकि सरकारे रिसालत दिन-रात अल्लाह से डरते थे और उसकी रहमत के सिवा कहीं अपना बचाव नहीं जानते थे, भला किसी और का तो कहना ही क्या है।

अल्लाह के सिवा कोई रोज़ी देने वाला नहीं

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللهِ مَالَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
شَيْئًا وَّلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ۝ (النحل:٧٣)

'मुश्रिक अल्लाह को छोड़कर उनकी इबादत करते हैं, जो आसमान व ज़मीन से रोज़ी पहुंचाने में कुछ भी दख़ल नहीं रखते और न रख सकते हैं।'

—अन-नह्ल 72

यानी ऐसे लोगों की अल्लाह की-सी ताज़ीम करते हैं जो क़तई बेबस हैं, रोज़ी पहुंचाने में उनका कुछ भी दख़ल नहीं, न आसमान से पानी बरसा सकें, न ज़मीन से कुछ उगा सकें, उन्हें किसी भी तरह की सकत नहीं। मालूम नहीं, आम लोगों में यह जो बात मशहूर है कि बुज़ुर्गों को दुनिया में तसर्रुफ़ की क़ुदरत हासिल है, मगर अल्लाह की तक़दीर पर शुक्र बजा लाने की वजह से अदब से दम नहीं मारते, वरना अगर चाहें तो कायनात को तह व बाला कर दें, लेकिन शर की अज़्मत का ख़्याल करके चुप हैं, यह क़तई ग़लत है, कायनात में न इन्हें अमल से दख़ल है, न ताक़त से, यानी अनमें इस क़िस्म के तसर्रुफ़ की सलाहियत व क़ुदरत ही नहीं।

सिर्फ़ अल्लाह को पुकारो

وَلَاتَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَالَا يَنْفَعُكَ وَلَايَضُرُّكَ فَإِنْ فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذًا مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ○ (يونس:١٠٦)

'अल्लाह को छोड़ कर उसको मत पुकारिए, जो आपको न नफ़ा पहुंचा सके और न नुक़्सान अगर, आप ऐसा करेंगे तो आप ज़ालिम बन जाएंगे।'

--यूनुस 106

यानी इज़्ज़त व जलाल वाले अल्लाह तआला के होते हुए ऐसे नाकारा लोगों को पुकारना जो न नफ़ा के मालिक हैं और न नुक्सान के, सरासर ज़ुल्म है, क्योंकि इस तरह तो सबसे बड़ी हस्ती का दर्जा सिर्फ़ नाकारा लोगों को दिया जा रहा है।

قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَايَمْلِكُوْنَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِى السَّمٰوٰتِ وَلَا فِى الْاَرْضِ وَمَالَهُمْ فِيْهِمَا مِنْ شِرْكٍ وَّمَالَهٗ مِنْهُمْ مِنْ ظَهِيْرٍ ۝ وَلَاتَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا لِمَنْ اَذِنَ لَهٗ حَتّٰى إِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوْبِهِمْ قَالُوْا مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ قَالُوا الْحَقَّ وَهُوَ الْعَلِىُّ الْكَبِيْرُ

'आप फ़रमा दीजिए कि इन्हें पुकार कर देखो तो सही, जिनको तुमने अल्लाह के सिवा माबूद ख़्याल कर रखा है, वे तो आसमानों में और ज़मीन में ज़र्रा बराबर भी अख़्तियार नहीं रखते, न इनमें उनका कोई हिस्सा है और न इनमे कोई अल्लाह का मददगार है। उसके आगे किसी की सिफ़ारिश काम नहीं आने की, मगर जिसको वह इजाज़त दे दे, यहां[1] तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर हो जाती है, तो कहते हैं तुम्हारे रब ने क्या फ़रमाया और जवाब देते हैं कि हक़ ही फ़रमाया है, वही सबसे बुलन्द व आला है।'

---

1. मतलब यह है कि शाफ़ेअ् और मश्फ़ूअ् दोनों शफ़ाअत की इजाज़त के इन्तिज़ार में बेचैन थे। जब इजाज़त मिल गई तो फिर वे एक दूसरे से सवाल करते थे कि तुम्हारे पालनहार ने क्या फ़रमाया, यह नफ़्सियाती (मनोवैज्ञानिक) क़ैफ़ियत है जो इजाज़त मिलने के बाद सब पर छा जाएगी, यानी क्या इजाजत्त मिल गई?

बग़ैर इजाज़त शफ़ाअत नहीं

यानी आड़े वक़्त किसी से मुराद मांगना और जिससे मुराद मांगी है, उसकी मुराद का पूरा होना कई तरह है— जिससे मुराद मांगी है, वह ख़ुद मालिक हो या उसका साझी हो या उसका मालिक पर दबाव हो, जैसे बादशाह दूसरे सरदारों का कहना मान लेता है, क्योंकि वे राज्य के अहम बुनियादी लोग हैं और उनके नाराज़ होने से हुकूमत का इन्तिज़ाम बिगड़ता है, या वह मालिक से सिफ़ारिश करे और मालिक को उसकी सिफ़ारिश माननी ही पड़ती है, चाहे दिल से माने या न माने, जैसे शाहज़ादियों से या बेगमों से बादशाह को मुहब्बत होती है और उनकी मुहब्बत की वजह से उनकी सिफ़ारिश रद्द नहीं की जा सकती। अब ग़ौर करो कि मुश्रिक अल्लाह तआला को छोड़ कर जिन बुज़ुर्गों को पुकारते हैं और उनसे मुरादें मांगते हैं, तो वे कायनात में न मच्छर के एक पर के मालिक हैं, न उनका रत्ती भर साझा है, न इलाही सलतनत के रुक्न हैं और न अल्लाह के मुईन व मददगार कि उनसे दब पर अल्लाह तआला उनकी बात मान ले और न वे इजाज़ते इलाही के बग़ैर सिफ़ारिश के लिए लब हिला सकते हैं कि ख़ामाख़ाही उससे कुछ दिला दें, बल्कि बारगाहे इलाही में उनका हाल यह है कि उसके हुक्म के आगे सब के होश उड़ जाते हैं और बदहवास और मऊब हो जाते हैं। एहतराम और दहशत की वजह से दूसरी बार पूछने की भी जुर्रात नहीं होती, बल्कि आपस में एक दूसरे से पूछते हैं कि रब ने क्या कहा और तहक़ीक़ के बाद आमन्ना व सद्दक़ना ही कहना पड़ता है, कहां यह कि बात उलटी जाए या कोई वकालत व हिमायत की जुर्रात करे।

शफ़ाअत की क़िस्में

यहां एक बात बड़ी अहम है, इसको याद रखा जाए कि अवाम नबियों और वलियों की शफ़अत पर नाज़ करते हैं और शफ़ाअत के ग़लत मानी समझ कर अल्लाह को भूल गए हैं। हक़ीक़त में शफ़ाअत के मानी सिफ़ारिश के हैं। दुनिया में सिफ़ारिश की कई शक्लें हैं, जैसे बादशाह की निगाह में चोर की चोरी साबित हो जाए और कोई अमीर या वज़ीर उसकी सिफ़ारिश करके सज़ा से बचा ले।

बादशाह तो चोर को सज़ा ही देना चाहता था, जैसा कि हुकूमत का क़ानून है, मगर अमीर से दब कर उसे छोड़ देता है, क्योंकि अमीर सल्तनत का रुक्न है और उसकी वजह से सल्तनत में दिन रात तरक़्क़ी हो रही है। बादशाह यह ख़्याल करके कि उस अमीर को नाराज़ नहीं करना चाहिए, वरना हुकूमत के नज़्म व नस्क़ में गड़बड़ी पैदा हो जाएगी और ग़ुस्से को पी जाना ही मुनासिब है, चोर को माफ़ फ़रमा देता है। इस क़िस्म की सिफ़ारिश को शफ़ाअते वजाहत कहा जाता है, यानी अमीर की जाह व इज़्ज़त की वजह से उसकी बात मानी गई।

'शफ़ाअते वजाहत' मुम्किन नहीं

अल्लाह तआला के हुज़ूर शफ़ाअते वजाहत क़तई तौर पर नामुम्किन है। जो आदमी किसी ग़ैर-अल्लाह को इस क़िस्म की शफ़ाअत करने वाला मान ले, वह क़तई मुश्रिक है और बड़ा जाहिल है, उसने 'इलाह' के मानी समझे नहीं और शहंशाह की क़द्र व मंज़िलत पहचानी ही नहीं। इस शहंशाह (अल्लाह) की तो यह शान है कि अगर चाहे तो लफ़्ज़ 'कुन' (हो जा) से करोड़ों नबी, वली, जिन्न, फ़रिश्ते, जिब्रील और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बराबर एक आन में पैदा कर दे और एक दम में अर्श से फ़र्श तक सारी कायनात को ज़ेर व ज़बर कर दे और दूसरी दुनिया पैदा कर दे। उसके इरादे से ही हर चीज़ पैदा हो जाती है। उसे माद्दे की और सामान की हाजत ही नहीं। अगर आदम से लेकर क़ियामत तक के तमाम इंसान और जिन्न, जिब्रील और पैग़म्बर जैसे हो जाएं तो उनकी वजह से अल्लाह तआला की सलतनत में कुछ भी रौनक़ न बढ़ेगी और अगर सब शैतान व दज्जाल बन जाएं तो उसकी हुकूमत की कुछ रौनक़ भी न घटेगी, वह हर हाल में तमाम बड़ों का बड़ा और तमाम बादशाहों का बादशाह है, न कोई उसका कुछ बिगाड़ सके और न बना सके।[1]

---

1. 'ऐ मेरे बन्दो : अगर तुममें से सब इंसान और जिन्न, जो पहले गुज़र चुके और जो आगे पैदा होंगे, उस आदमी की तरह नेक हो जाते जो तुममें सबसे ज़्यादा मुत्तक़ी है, तो याद रखो इससे मेरी सलतनत (राज्य) में कुछ भी बढ़ौतरी न होती। ऐ मेरे बन्दो! अगर तुम सब इंसान और जिन्न जो पहले गुज़र चुके और जो आगे होंगे, उस आदमी की तरह बदकार हो जाते जो तुममें ज़्यादा बदकार है, तो उससे मेरी सलतनत में कुछ भी कमी न होती।'

'शफ़ाअते मुहब्बत' मुम्किन नहीं

सिफ़ारिश की दूसरी शक्ल यह है कि कोई शाहज़ादाया, बेगम का महबूब खड़ा हो जाए और चोर को सज़ा न देने दे, बादशाह उनकी मुहब्बत की वजह से उसे नाराज़ न करना चाहे और चोर को माफ़ फ़रमा दे, उसकी सिफ़ारिश को 'शफ़ाअते मुहब्बत' कहा जाता है। बादशाह ने उसकी मुहब्बत से मजबूर होकर, इस ख़्याल से कि महबूब की नाराज़ी से ख़ुद मुझे तक्लीफ़ पहुंचेगी, महबूब की बात मान ली, अल्लाह तआला के दरबार में यह भी नामुम्किन है। अगर कोई किसी नबी या वली को इस क़िस्म का शफ़ीअ़ समझे, वह भी पक्का मुशिरक और निरा जाहिल है। वह शहंशाह अपने बन्दों को कितना ही नवाज़े, किसी को हबीब, किसी को ख़लील, किसी को हकीम, किसी को रूहुल्लह और किसी को वज़ीर का ख़िताब अता फ़रमाए और किसी को रसूले करीम, मकीन, रूहुलक़ुदस, और रूहुल अमीन के इज़्ज़तदार लक़ब से नवाज़े, मगर मालिक-मालिक ही है और ग़ुलाम-ग़ुलाम ही है, हर एक का अपना मक़ाम है, जिससे आगे वह नहीं बढ़ सकता। ग़ुलाम जिस तरह उसकी रहमत से मुतास्सिर होकर मसर्रत से झूमता है, उसी तरह उसकी शक्ल व सूरत से भी उसका पित्ता पानी हो जाता है।

शफ़ाअत बिल इज़्न (इजाज़त पर शफ़ाअत)

सिफ़ारिश की तीसरी शक्ल यह है कि चोर की चोरी तो साबित हो गई, मगर वह पेशेवर चोर नहीं है, बदक़िस्मती से उससे चोरी हो गई, शर्म के मारे पानी-पानी है, नदामत से सर झुका हुआ है, दिन-रात सज़ा का ख़ौफ़ उसे खा रहा है। क़ानून के एहतराम को सर आंखों पर रखता है और ख़ुद को स्याहकार, गुनाहगार और सज़ा का हक़दार समझ रहा है, बादशाह से भाग कर किसी अमीर या वज़ीर का वह रुख़ नहीं करता और उसके मुक़ाबले में किसी की हिमायत का क़ायल नहीं, दिन व रात बादशाह ही का मुंह तक रहा है कि सरकारे आली के यहां से उस ख़ताकार, गुनाहगार के लिए क्या सज़ा तज्वीज़ होती है, बादशाह को उसके हालेज़ार पर तरस आ जाता है और उससे दरग़ुजर करना चाहता है, मगर क़ानून के एहतराम का ख़्याल रखना चाहता है कि कहीं क़ूनन का एहतराम

लोगों की नज़र से गिर न जाए, अब कोई अमीर या वज़ीर बादशाह का इशारा पाकर सिफ़ारिश के लिए खड़ा हो जाता है। बादशाह उस उमीर की इज़्ज़त बढ़ाने के लिए, ज़ाहिर में उसकी सिफ़ारिश का नाम करके चोर का क़सूर माफ़ फ़रमा देता है। अमीर ने चोर की इसलिए सिफ़ारिश नहीं की कि वह उसका रिश्तेदार है या जानकार दोस्त है या उसकी हिमायत का उसने ज़िम्मा ले लिया था, बल्कि सिर्फ़ बादशाह की मर्ज़ी देख कर सिफ़ारिश के लिए खड़ा हुआ है, क्योंकि वह तो बादशाह का अमीर है, न कि चोरों का हिमायती, क्योंकि चोर का हिमायती भी चोर होता है। इस क़िस्म की सिफ़ारिश को शफ़ाअत बिलइज़्नि (इजाज़त व मर्ज़ी से सिफ़ारिश) कहा जाता है। कहा जाता है दरबारे इलाही में इस क़िस्म की सिफ़ारिश होगी। क़ुरआन पाक में जिस नबी या वली की शफ़ाअत का बयान है, वह यही शफ़ाअत है।

सीधा रास्ता

हर इंसान का फ़र्ज़ है कि अल्लाह ही को पुकारे, उसी से हर वक़्त डरता रहे, उसी से गुनाहों की माफ़ी मांगता रहे, उसी के आगे गुनाहों का एतराफ़ करे, उसी को अपना मालिक और हिमायती समझे, अल्लाह के सिवा अपना ठिकाना न जाने और कभी किसी की हिमायत पर एतमाद न करे, क्योंकि हमारा रब बड़ा ही माफ़ करने वाला और इंतिहाई मेहरबान है। वह अपने फ़ज़्ल व करम से सब बिगड़े काम बना देगा और अपनी मेहरबानी से सारे गुनाह माफ़ फ़रमा देगा और जिसको चाहेगा, अपने हुक्म से तुम्हारा शफ़ीअ़ (शफ़ाअत करने वाला) बना देगा, जिस तरह तुम अपनी हर हाजत उसी को सौंपते हो, उसी तरह यह हाजत भी उसी को सौंप दो कि वह जिसे चाहे, तुम्हारा शफ़ीअ़ बना कर खड़ा कर दे, किसी की हिमायत पर कभी भरोसा न करो, उसी को अपनी हिमायत के लिए पुकारो, हक़ीक़ी मालिक को कभी न भूलो, उसके शरई हुक्मों की क़द्र करो और उसके आगे रस्म व रिवाज को ठुकरा दो और शरई हुक्मों को छोड़ कर रस्म व रिवाज की पाबन्दी बड़ा भारी जुर्म है। सारे वली और नबी उससे नफ़रत करते हैं, वे हरगिज़-हरगिज़ ऐसे लोगों को शफ़ीअ़ नहीं बनाते, जो रस्म व रिवाज को न छोड़ें

और शाही हुक्मों को पामाल करें, बल्कि वे उलटे उनके दुश्मन हो जाते हैं और उनसे नाराज़ हो जाते हैं, क्योंकि उनकी बुज़ुर्गी इस बात पर टिकी हुई थी कि वे अल्लाह की ख़ातिर को सब पर मुक़द्दम रखते थे, बीवी-बच्चों को, मुरीदों को, शागिर्दों को, नौकर-चाकर को और यार-दोस्तों को अल्लाह के लिए छोड़ देते थे और जब वे लोग अल्लाह की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ काम करते थे तो ये उनके दुश्मन बन जाते थे। भला ग़ैर-अल्लाह को पुकारने वालों में क्या ख़ूबी है कि बड़े-बड़े लोग उनके हिमायती बन कर अल्लाह तआला की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ उनकी तरफ़ से अल्लाह तआला से झगड़ें। ऐसा हरगिज़ न होगा, बल्कि वे तो उनके दुश्मन हैं। अल्लाह ही के लिए मुहब्बत और अल्लाह ही के लिए दुश्मनी उनकी शान है। अगर किसी के बारे में अल्लाह की यही रिज़ा है कि वह जहन्नम ही का कुन्दा बने तो ये उसको और दो चार धक्के देकर जहन्नम में गिराने को तैयार हैं। ये तो अल्लाह तआला की मर्ज़ी के ताबे हैं, जिधर उसकी रिज़ा होगी, उधर ही झुकेंगे—

أَخْرَجَ التِّرْمِذِيُّ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ ؓ قَالَ كُنْتُ خَلْفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ يَوْمًا فَقَالَ يَا غُلَامُ احْفَظِ اللّٰهَ يَحْفَظْكَ، اِحْفَظِ اللّٰهَ تَجِدْهُ تُجَاهَكَ وَإِذَا سَأَلْتَ فَاسْأَلِ اللّٰهَ وَإِذَا اسْتَعَنْتَ فَاسْتَعِنْ بِاللّٰهِ وَاعْلَمْ أَنَّ الْأُمَّةَ لَوِ اجْتَمَعَتْ عَلٰى أَنْ يَنْفَعُوْكَ بِشَيْءٍ لَمْ يَنْفَعُوْكَ إِلَّا بِشَيْءٍ قَدْ كَتَبَهُ اللّٰهُ لَكَ وَلَوِ اجْتَمَعُوْا عَلٰى أَنْ يَضُرُّوْكَ بِشَيْءٍ لَمْ يَضُرُّوْكَ إِلَّا بِشَيْءٍ كَتَبَهُ اللّٰهُ عَلَيْكَ رُفِعَتِ الْأَقْلَامُ وَجَفَّتِ الصُّحُفُ۔

'इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने कहा कि एक दिन मैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे था। आपने फ़रमाया कि ऐ बच्चे! अल्लाह को याद रख, अल्लाह तुझे याद रखेगा, अल्लाह को याद रख, उसको अपने सामने देख लेगा और जब तू सवाल करे तो अल्लाह ही से कर और जब मदद मांगे तो अल्लाह ही से मांग। यक़ीन मान कि अगर तमाम लोग तुझे कुछ नफ़ा पहुंचाने पर इत्तिफ़ाक़ कर लें तो उसी क़दर नफ़ा पहुंचाएंगे जो अल्लाह ने तेरे लिए लिख दिया है और अगर सब मिलकर नुक़्सान पहुंचाने पर इत्तिफ़ाक़ कर लें, तो उसी क़दर नुक़्सान पहुंचा सकेंगे जो तेरे लिए लिखा हुआ है, क़लम उठा

लिए गए और किताबें ख़ुश्क हो गईं।' —तिर्मिज़ी

यानी अल्लाह तआला हक़ीक़ी शहंशाह है, ज़मीनी बादशाहों की तरह घमंडी नहीं कि कोई कितना ही सर मारे, मगर घमंड के मारे उसकी तरफ़ तवज्जोह ही न दे, इसी लिए लोग बादशाहों से सवाल नहीं करते, बल्कि सरदारों के वास्ते से (माध्यम से) सवाल करते हैं, ताकि उन्हीं की ख़ातिर दरख़्वास्त मंज़ूर हो जाए, मगर अल्लाह की शान यह नहीं, वह तो इंतिहाई लुत्फ़ व करम वाला और बड़ा ही मेहरबान है, उस तक पहुंचने में किसी की वकालत की ज़रूरत ही नहीं कि अल्लाह तआला को उसका ख़्याल आए। वह तो अलग-अलग हर एक का ख़्याल रखता है, सबको याद रखता है, चाहे कोई सिफ़ारिश करे या न करे, वह पाक व बुलन्द व बरतर है और उसका दरबार दुनिया के बादशाहों जैसा नहीं कि पब्लिक की वहां तक पहुंच न हो सके और अमीर लोग (सरदार) ही पब्लिक पर हुक्म चलाएं और पब्लिक को उनके हुक्म मानने ही पड़ें, बल्कि यह अल्लाह का दरबार है और वह अपने बन्दों से क़रीब तर है, जो मामूली से मामूली इंसान उनकी तरफ़ दिल से मुतवज्जह हो, वही अपने सामने उसको पा ले। अपनी ही ग़फ़लत के परदे के सिवा और कोई परदा नहीं।

अल्लाह सबसे नज़दीक है

अगर कोई उससे दूर है, तो सिर्फ़ अपनी ग़फ़लत की वजह से दूर है, वरना मालिक सबसे नज़दीक है। फिर जो कोई किसी नबी या वली को इसलिए पुकारता है कि वह उसको अल्लाह तआला से क़रीब कर दें तो यह नहीं समझता कि नबी वली तो फिर भी उससे दूर हैं, अल्लाह तआला तो उससे बहुत ही क़रीब है। इसकी मिसाल यों समझो कि एक ग़ुलाम बादशाह के पास तंहा है। बादशाह उसकी दरख़्वास्त सुनने के लिए पूरी तरह मुतवज्जह है, लेकिन वह किसी अमीर (सरदार) को आवाज़ देकर पुकारता है कि जनाब बादशाह के हुज़ूर में मेरी अर्ज़ी पेश फ़रमा दें, तुम्हारा उस ग़ुलाम के बारे में क्या ख़्याल है? ज़ाहिर है कि यह ग़ुलाम या तो अंधा है या दीवाना। फ़रमाया, हर आदमी अल्लाह ही से मांगे और आड़े वक़्त उसीसे मदद चाहे और यह बात यक़ीन से समझ ले कि तक़्दीर का लिखा हरगिज़ नहीं मिट सकता। अगर तमाम दुनिया मिलकर किसी को नफ़ा या

नुक़्सान पहुंचाए तो भाग्य के लिखे से आगे नहीं बढ़ सकते। मालूम हुआ कि तक़्दीर के बदलने की किसी में ताक़त नहीं।[1] जिसके मुक़द्दर में औलाद नहीं, उसे कौन औलाद दे और जिसके मुक़द्दर में उम्र का पैमाना भर चुका, कौन है जो उसकी ज़िंदगी की मुद्दत में इज़ाफ़ा कर दे? फिर यह कहना कि अल्लाह ने अपने वलियों को तक़्दीर बदल डालने की ताक़त बख़्शी है, ग़लत है। बात यह है कि अल्लाह तआला कभी अपने हर बन्दे की दुआ क़ुबूल फ़रमाता है और नबियों और वलियों की अक्सर दुआएं क़ुबूल फ़रमा लेता है, दुआ की तौफ़ीक़ भी वही देता है और क़ुबूल भी वही फ़रमाता है। दुआ करना, इसके बाद मुराद पुरी हो जाना, दोनों बातें तक़्दीर में लिखी हुई हैं, दुनिया का कोई काम तक़्दीर से बाहर नहीं। किसी में कोई काम करने की ताक़त नहीं, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, नबी हो या वली, अल्लाह से दुआ मांगे, बस उसे उतनी ही ताक़त है, इसके बाद मालिक व मुख़्तार को अख़्तियार है चाहे मेहरबानी करके क़ुबूल फ़रमा ले और चाहे तो हिक्मत के तौर पर क़ुबूल न फ़रमाए।

सिर्फ़ अल्लाह पर भरोसा करो

أَخْرَجَ ابْنُ مَاجَةَ عَنْ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ ﷺ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِنَّ قَلْبَ ابْنِ آدَمَ بِكُلِّ وَادٍ شُعْبَةٌ فَمَنِ اتَّبَعَ قَلْبُهُ الشُّعُبَ كُلَّهَا لَمْ يُبَالِ اللهُ بِأَيِّ وَادٍ أَهْلَكَهُ وَمَنْ تَوَكَّلَ عَلَى اللهِ كَفَاهُ الشُّعُبَ۔

‘हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, इंसान के लिए हर मैदान में एक राह है, फिर जिसने अपने दिल को तमाम राहों के पीछे लगा दिया तो अल्लाह पाक इसकी परवाह न करेगा कि कौन से मैदान में जिहाद किया गया और जो अल्लाह पर भरोसा करे, अल्लाह पाक उसे तमाम मैदानों में काफ़ी हो जाएगा।’

—इब्ने माजा

---

1. तक़्दीर इल्मे इलाही का दूसरा नाम है। कोई इंसान नहीं जान सकता कि उसकी या किसी दूसरे की तक़्दीर में क्या लिखा है। इसलिए हर इंसान का पहला और आख़िरी फ़र्ज़ यह है कि अल्लाह के हुक्मों (करने, न करने दोनों) का पाबन्द रहे और उसकी मेहरबानी से भलाई की उम्मीद रखे।

यानी जब इंसान किसी मुसीबत में गिरफ़्तार होता है या उसे किसी चीज़ की तलब होती है तो उसके ख़्यालात चारों तरफ़ दौड़ते हैं कि फ़्लां नबी को या फ़्लां इमाम को या फ़्लां पीर को या फ़्लां शहीद को या फ़्लां परी को पुकारा जाए या फ़्लां नजूमी से या फ़्लां रुम्माल से या काहिन से या जफ़्फ़ार से पूछा जाए या फ़्लां मौलवी से फ़ाल खोलवाई जाए। फिर जो कोई हर ख़्याल के पीछे दौड़ता हैं, अल्लाह पाक उससे अपनी क़ुबूलियत वाली निगाह फेर लेता है, उसको अपने मुख़्लिस बन्दों में नहीं गिनता और उसके हाथ से अल्लाह की तर्बियत और हिदायत की राह जाती रहती है, यहां तक कि वह इन ख़्यालों के पीछे दौड़ता-दौड़ता तबाह हो जाता है, कोई दहरिया बन जाता है, कोई मुलहिद, और कोई मुश्रिक और कोई सबसे मुन्किर हो जाता है और जो कोई अल्लाह तआला ही पर परोसा रखता है, किसी ख़्याल के पीछे नहीं दौड़ता, वह अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का मक़बूल बन्दा है, उस पर हिमायत की राहें खुल जाती हैं और उसके क़ल्ब को चैन और आराम मयस्सर आ जाता है कि ख़्यालात के पीछे दौड़ने वालों को वह चैन हरगिज़ नसीब नहीं होता। तक़्दीर का लिखा तो पूरा ही होता है, मगर ख़्यालात के पीछे लपकने वाला ख़ामाखाही पेच व ताब खाता रहता है और तवक्कुल वाले को आराम मिल जाता है।

أَخْرَجَ التِّرْمِذِيُّ عَنْ أَنَسٍ ﷺ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ لِيَسْئَلْ أَحَدُكُمْ رَبَّهُ حَاجَتَهُ كُلَّهَا حَتّٰى يَسْأَلَهُ الْمِلْحَ وَحَتّٰى يَسْئَلَهُ شِسْعَ نَعْلِهِ إِذَا انْقَطَعَ۔

'हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, हर एक मुसलमान को अपने रब से अपनी सारी ज़रूरतें मांगनी चाहिए, यहां तक कि नमक भी उसी से मांगे और जूते का फ़ीता (तस्मा) जब टूट जाए, वह भी उसी से मांगे।' (तिर्मिज़ी)

अल्लाह पाक को दुन्यवी बादशाहों की तरह न समझो कि बड़े काम ख़ुद करते हैं और छोटे-छोटे काम नौकरों से करवाते हैं, इसलिए लोगों को छोटे-छोटे कामों में नौकरों से इल्तिजा करनी पड़ती है। अल्लाह तआला का कारख़ाना ऐसा नहीं है, वह क़ादिरे मुतलक़ तो पलक झपकते अनगिनत छोटे-बड़े काम ठीक फ़रमा देता है। उसकी सलतनत में कोई शरीक और साझी नहीं, इसलिए छोटी

से छोटी चीज़ भी सीधे-सीधे उसी से मांगो, क्योंकि उसके सिवा तो कोई और न छोटी चीज़ दे सकता है और न बड़ी।

रिश्तेदारी काम नहीं दे सकती

وَأَخْرَجَ الشَّيْخَانِ عَنْ أَبِیْ هُرَيْرَةَ ﵁ قَالَ لَمَّا نَزَلَتْ وَأَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ دَعَا النَّبِیُّ ﷺ قَرَابَتَهُ فَعَمَّ وَخَصَّ فَقَالَ يَا بَنِیْ كَعْبِ بْنِ لُوَیٍّ أَنْقِذُوْا أَنْفُسَكُمْ مِنَ النَّارِ۔ فَإِنِّیْ لَا أَمْلِكُ لَكُمْ مِنَ اللّٰهِ شَيْئًا أَوْ قَالَ فَإِنِّیْ لَا أُغْنِیْ عَنْكُمْ مِنَ اللّٰهِ شَيْئًا وَيَابَنِیْ مُرَّةَ بْنِ كَعْبٍ أَنْقِذُوْا أَنْفُسَكُمْ مِنَ النَّارِ فَإِنِّیْ لَا أُغْنِیْ عَنْكُمْ مِنَ اللّٰهِ شَيْئًا وَيَابَنِیْ عَبْدِ شَمْسٍ أَنْقِذُوْا أَنْفُسَكُمْ مِنَ النَّارِ فَإِنِّیْ لَا أُغْنِیْ عَنْكُمْ مِنَ اللّٰهِ شَيْئًا وَيَابَنِیْ عَبْدِ مُنَافٍ أَنْقِذُوْا أَنْفُسَكُمْ مِنَ النَّارِ فَإِنِّیْ لَاأُغْنِیْ عَنْكُمْ مِنَ اللّٰهِ شَيْئًا وَيَابَنِیْ عَبْدِهَاشِمٍ انْقِذُوا اَنْفُسَكُمْ مِنَ النَّارِ فَإِنِّیْ لَاأُغْنِیْ عَنْكُمْ مِنَ اللّٰهِ شَيْئًا وَيَاعَبْدَ الْمُطَّلِبِ أَنْقِذُوا اَنْفُسَكُمْ مِنَ النَّارِ فَإِنِّیْ لَا أُغْنِیْ عَنْكُمْ مِنَ اللّٰهِ شَيْئًا وَيَافَاطِمَةُ أَنْقِذِیْ نَفْسَكِ مِنَ النَّارِ سَلِيْنِیْ مَاشِئْتِ مِنْ مَالِیْ فَإِنِّیْ لَا أُغْنِیْ عَنْكِ مِنَ اللّٰهِ شَيْئًا۔

'हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जब आयत 'व अन्ज़िर अशी-रत-कल अक़रबीन' (अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डराओ) उतरी, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने रिश्तेदारों को बुला कर फ़रमाया, ऐ काब बिन लुई की औलाद! अपनी जानों को आग से बचाओ, मैं अल्लाह के अज़ाब से बचाने में तुम्हारे कुछ काम न आ सकूंगा। ऐ मुर्रा बिन काब की औलाद! अपनी जानों को आग से बचाओ, मैं अल्लाह के अज़ाब से तुम्हारे कुछ काम न आ सकूंगा। ऐ अब्दे शम्स की औलाद! अपनी जानों को आग से बचाओ, मैं अल्लाह के अज़ाब से तुम्हारे कुछ काम न आ सकूंगा। ऐ अब्दे मनाफ़ की औलाद! अपनी जानों को आग से बचाओ, मैं अल्लाह के अज़ाब से तुम्हारे कुछ काम न आ सकूंगा। ऐ हाशिम की औलाद! अपने नफ़्सों को आग से बचाओ, मैं अल्लाह के अज़ाब से तुम्हारे कुछ काम न आ सकूंगा। ऐ अब्दुल मुत्तलिब की

औलाद! अपनी जानों को आग से बचाओ, मैं अल्लाह के अज़ाब से तुम्हारे कुछ काम न आ सकूंगा। ऐ फ़ातमा! अपनी जान को अज़ाब से बचा ले, मुझसे मेरा माल ले ले, जो कुछ तुझे चाहिए, क्योंकि मैं अल्लाह के अज़ाब से तुम्हारे कुछ काम नहीं आऊंगा। (बुख़ारी-मुस्लिम)

यानी जो लोग किसी बुज़ुर्ग के रिश्तेदार होते हैं, उन्हें बुज़ुर्गों की हिमायत का भरोसा होता है, इसी वजह से वे मग़रूर होकर निडर हो जाते हैं, इसी लिए अल्लाह पाक ने अपने महबूब पैग़म्बर से फ़रमाया कि अपने रिश्तेदारों को होशियार कर दें। आपने एक-एक को, यहां तक कि अपनी लाडली साहबज़ादी को भी साफ़-साफ़ बता दिया कि रिश्तेदारी का हक़ उसी चीज़ में मुम्किन है, जो इंसान के अख़्तियार में है, मेरे अख़्तियार में मेरा माल है, उसके देने में बुख़्ल से काम नहीं लेता, लेकिन अल्लाह तआला के यहां का मामला मेरे अख़्तियार से बाहर है, वहां किसी की भी हिमायत नहीं कर सकता और किसी का भी वकील नहीं बन सकता। हर आदमी क़ियामत के लिए अपनी-अपनी तैयारी कर ले और दोज़ख़ से बचने की आज ही फ़िक्र कर ले। मालूम हुआ कि किसी बुज़ुर्ग की रिश्तेदारी अल्लाह तआला के यहां काम आने वाली नहीं, जब तक इंसान ख़ुद नेक अमल न करे, बेड़ा पार होना मुश्किल है।

छठा बाब

इबादतों में शिर्क की हुर्मत

इबादत की तारीफ़

इबादत उन कामों को कहा जाता है जो अल्लाह तआला ने अपनी ताज़ीम के वास्ते मुक़र्रर फ़रमा कर बन्दों को सिखाए हैं, यहां हमें यह बताना है कि अल्लाह तआला ने अपनी ताज़ीम के वास्ते कौन-कौन से काम बताए हैं, ताकि ग़ैर अल्लाह के लिए वे काम न किए जाएं और शिर्क से बचा जाए।

इबादत सिर्फ़ अल्लाह ही के लिए है

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖٓ اِنِّىْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ○ اَنْ لَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنِّىْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ اَلِيْمٍ○ (هود:٢٥،٢٦)

'बेशक हमने नूह को उनकी क़ौम की तरफ़ भेजा। उन्होंने कहा कि ऐ क़ौम! मैं तुम्हें एक खुला डराने वाला हूं इस बात से कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, मुझे तुम पर क़ियामत के दिन के दर्दनाक अज़ाब का अन्देशा है।' (सूरः हूद, 25-26)

यानी मुसलमानों और काफ़िरों में हज़रत नूह अलैहिस्लाम के ज़माने से झगड़ा चला आ रहा है। अल्लाह के मक़्बूल बन्दे यही कहते आए हैं कि अल्लाह की-सी ताज़ीम ग़ैर-अल्लाह की न करो और जो काम उसकी ताज़ीम के लिए मुक़र्रर हैं, किसी और के लिए न करो।

सज्दा सिर्फ़ अल्लाह के लिए है

لَاتَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَلَالِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِىْ خَلَقَهُنَّ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ○ (حم السجدہ:٣٧)

'सूरज को और चांद को सज्दा न करो, उस अल्लाह को सज्दा करो जिसने उन्हें पैदा किया, अगर तुम उसकी इबादत करते हो।' (हामीम सज्दा : 27)

इस आयत से मालूम हुआ कि इस्लाम में सज्दा, पैदा करने वाले ही का हक़ है, इसलिए किसी मख़्लूक़ को सज्दा न किया जाए, चाहे वे चांद-सूरज हों, नबी या वली हों या जिन्न और फ़रिश्ते हों। अगर कोई कहे कि पहले दीनों में मख़्लूक़ को भी सज्दा सही था, जैसे फ़रिश्तों ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को और हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को सज्दा किया था, इसलिए अगर हम भी किसी बुज़ुर्ग को ताज़ीमी सज्दा करें तो क्या हरज है। याद रखो इससे शिर्क साबित होता है, ईमान निकल जाता है। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की शरीअ़त में बहनों से निकाह करना जायज़ था, इसे दलील समझ कर ये लोग अगर बहनों से निकाह कर लें तो क्या हरज है, मगर सख़्त हरज है, क्योंकि बहनें हमेशा की मुहरमात (यानी जिससे निकाह हराम है) में दाख़िल हैं, जो किसी शक्ल में हलाल नहीं। बात यह है कि इंसान को अल्लाह तआला के हुक्म के आगे सर झुका देना चाहिए। अल्लाह के फ़रमान को बिला चून व चरा दिल व जान से मान लेना चाहिए, ख़ामख़ाह की हुज्जत नहीं पेश करनी चाहिए कि पहले लोगों के लिए तो यह हुक्म न था, हम पर क्यों मुक़र्रर किया गया। ऐसी बातों से इंसान काफ़िर हो जाता है। इस मज़्मून की मिसाल यों समझो कि एक बादशाह के यहां मुद्दत तक एक-एक क़ानून पर अमल होता रहा, फिर क़ानून बनाने वालों ने उसे मंसूख़ करके उसकी जगह और क़ानून बना दिया, अब उस नये क़ानून पर अमल ज़रूरी है। अब अगर कोई यह कहने लगे कि हम तो पहले क़ानून को मानेंगे, नए क़ानून को नहीं मानते वह बाग़ी है, और बाग़ी की सज़ा जेलख़ाना है। इसी तरह अल्लाह के बाग़ियों के लिए सज़ा जहन्नम है।

ग़ैर-अल्लाह को पुकारना शिर्क है

وَّ اَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَاتَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا ۔ وَّاَنَّهٗ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ يَدْعُوْهُ كَادُوْا يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِ لِبَدًا ۔ قُلْ اِنَّمَآ اَدْعُوْا رَبِّيْ وَلَآ اُشْرِكُ بِهٖٓ اَحَدًا

(الجن:١٨،١٩،٢٠)

'यक़ीन मानो मस्जिदें अल्लाह ही की हैं, इसलिए अल्लाह के साथ किसी और को न पुकारो और जब अल्लाह का बन्दा उसकी इबादत के लिए खड़ा हुआ तो क़रीब था कि वह भीड़ की भीड़ बन कर उस पर झुक पड़ें। आप फ़रमा दें कि मैं तो अपने रब ही को पुकारता हूं और उसके साथ किसी को शरीक नहीं बनाता।' (अल-जिन्न 18-19-20)

यानी जब कोई अल्लाह का बन्दा अपने पाक व साफ़ दिल से अल्लाह तआला को पुकारता है, तो ये नादान समझते हैं कि बड़ा पहुंचा हुआ है, ग़ौस व क़ुतुब है, जिसको चाहे दे दे और जिससे जो चाहे छीन ले। इसलिए ठठ के ठठ उनके पास इस उम्मीद पर जमा हो जाते हैं कि बिगड़ी बना देगा, अब उस बन्दे का फ़र्ज़ है कि सही-सही बात बता दे कि आड़े वक़्त में अल्लाह तआला ही को पुकारना चाहिए, यह हक़ किसी और का नहीं है, अल्लाह ही से नफ़ा व नुक़्सान की उम्मीद रखनी चाहिए, क्योंकि इस तरह का मामला ग़ैर अल्लाह से करना शिर्क है। मैं शिर्क और शिर्क करने से बेज़ार हूं अगर कोई मुझसे इस क़िस्म का मामला करना चाहे तो मैं उससे राज़ी नहीं और देना-लेना अल्लाह तआला ही का काम है। वही देता है और वही लेता है, मेरे हाथ में कुछ नहीं। वही मेरा और तुम्हारा रब है, इसलिए आओ और बातिल माबूदों को छोड़ कर उसी एक वह्दहू ला शरीक को पुकारो, जो अपने एक होने में, माबूद होने में, रब होने में और हाकिम होने में अकेला है। इससे मालूम हुआ कि (हाथ बांध कर) अदब से खड़ा होना, पुकारना और नाम का वज़ीफ़ा पढ़ना उन कामों में से है, जिनको अल्लाह तआला ने अपनी ताज़ीम के लिए ख़ास फ़रमा दिया है। यह मामला ग़ैर-अल्लाह से करना शिर्क है।

وَاَذِّنْ فِى النَّاسِ بِالْحَجِّ يَاْتُوْكَ رِجَالًا وَّعَلٰى كُلِّ ضَامِرٍ يَّاْتِيْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ۝ لِّيَشْهَدُوْا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ فِىْٓ اَيَّامٍ مَّعْلُوْمٰتٍ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا الْبَآئِسَ الْفَقِيْرَ۝ ثُمَّ لْيَقْضُوْا تَفَثَهُمْ وَلْيُوْفُوْا نُذُوْرَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوْا بِالْبَيْتِ الْعَتِيْقِ۝

(الجن:٢٧،٢٩)

'आप लोगों में हज का एलान कर दें कि वे आपके पास पैदल और हर

दुबली सवारी पर सबार होकर आएंगे जो दूर-दराज़ से आएंगे, ताकि अपने फ़ायदों की जगहों में हाज़िर हों और अल्लाह तआला ने चौपायों में से जो मवेशी उन्हें अता फ़रमाए हैं, उन पर अल्लाह का नाम लें, उसमें से खाओ भी और बदहाल मुहताजों को खिलाओ भी, फिर अपना मैल-कुचैल साफ़ करो, नज़्रों को पूरा करो और बैतुल्लाह का तवाफ़ करो। —अल-हज्ज 27-28-29

अल्लाह के शआइर की ताज़ीम की जाए

यानी अल्लाह तआला ने अपनी ताज़ीम के लिए कुछ जगहें मुक़र्रर फ़रमाई हैं, जैसे काबा, अरफ़ात, मुज़दलफ़ा, मिना, सफ़ा, मर्वः, मक़ामे इब्राहीम, मस्जिदे हराम, सारा मक्का मुअज़्ज़मा, बल्कि सारा हरम, लोगों को इन जगहों की ज़ियारत का शौक़ दिया है कि दुनिया के कोने-कोने से सिमट कर, चाहे सवार होकर, चाहे पैदल दूर से बैतुल्लाह की ज़ियारत के लिए आएं, सफ़र की मशक़्क़तें उठा कर, एक ख़ास बे-सिले लिबास में ख़ास शक्ल में वहां पहुंचें और अल्लाह तआला के नाम की क़ुरबानियां करें, अपनी मन्नतें पूरी करें, बैतुल्लाह का तवाफ़ करें और दिलों में मालिक की ताज़ीम की जो उमंगें करवटें ले रही हैं, बैतुल्लाह आकर उन्हें पूरी करें, उसकी चौखट को चूमें, उसके दरवाज़े के सामने बिलख-बिलख कर दुआएं मांगें। फिर कोई बैतुल्लाह का परदा थाम कर, रो-रो कर अल्लाह सुबहानहू व तआला से दुआएं मांग रहा है, कोई वहां एतकाफ़ में बैठ कर रात दिन ज़िक्रे इलाही कर रहा है, कोई अदब से ख़ामोश खड़ा है, उसे देख कर आंखें ठंडी कर रहा है[1], बहरहाल ये सब काम अल्लाह तआला की ताज़ीम व इकराम के लिए किए जाते हैं। अल्लाह तआला उनसे इन कामों की वजह से ख़ुश होता है और इससे दोनों दुनिया में फ़ायदा होता है, इसलिए इस क़िस्म के काम ग़ैर-अल्लाह की ताज़ीम के लिए हराम व शिर्क हैं, किसी क़ब्र की ज़ियारत के लिए या किसी थान या चिल्ले पर दूर दराज़ से सफ़र की मशक़्क़तें उठा कर आना और मैले-कुचैले होकर वहां पहुंचना, वहां जाकर जानवरों की

1. हज़रत शाह शहीद के इस बयान से इस ख़्याल की ताईद होती है कि किताब 'तक़्वियतुल ईमान' हजसे तशरीफ़ लाने के बाद लिखी गई है, क्योंकि ऐसी सराहत (खोल कर लिखना) हज से आने के बाद ही मुम्किन थी।

क़ुरबानी करना, मन्नतें पूरी करना, किसी घर या क़ब्र का तवाफ़ करना, उसके आस-पास के जंगल का अदब करना, वहां शिकार न करना, वहां के पेड़ों को न काटना और घास के तिनके को न तोड़ना और न उखाड़ना और इसी क़िस्म के और काम करना और उनसे दोनों जहां की भलाइयों की उम्मीद रखना सब शिर्क हैं, इनसे बचना चाहिए, क्योंकि शरीअत ने जिन जगहों की ताज़ीम करने का हुक्म दिया है, उनके अलावा और जगहों पर ऐसा करना और अपनी तरफ़ से उनको दीन में दाख़िल करना बिदअत है। इताअत व फ़रमांबरदारी का मामला अल्लाह ही से करना चाहिए, न कि मख़्लूक़ से।

ग़ैर अल्लाह के नाम की चीज़ हराम है

قُلْ لَّا اَجِدُ فِیْ مَاۤ اُوْحِیَ اِلَیَّ مُحَرَّمًا عَلٰی طَاعِمٍ یَّطْعَمُهٗۤ اِلَّاۤ اَنْ یَّكُوْنَ مَیْتَةً اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا اَوْ لَحْمَ خِنْزِیْرٍ فَاِنَّهٗ رِجْسٌ اَوْ فِسْقًا اُهِلَّ لِغَیْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَیْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ رَبَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ (الانعام:١٤٥)

'आप फ़रमा दीजिए कि मैं इस वह्य में जो मुझ पर नाज़िल हुई है, खाने वाले पर किसी को हराम नहीं पाता कि वह उसे खाए, मगर वह चीज़ जो मुरदार है या बहने वाला ख़ून है या सुअर का गोश्त है, क्योंकि यह नापाक है या गुनाह की चीज़ है कि उसे ग़ैर-अल्लाह के नाम पर मशहूर किया गया हो और अगर कोई मजबूर हो जाए, न तो नाफ़रमानी करे, न हद से बाहर निकल जाए तो तुम्हारा परवरदिगार बख़्शने वाला मेहरबान है।' —अल-अनआम 145

यानी जिस तरह सुअर, ख़ून, मुरदार हराम है, उसी तरह वह जानवर हराम है जो गुनाह की शक्ल में हो कि अल्लाह के नाम का नहीं, बल्कि किसी और नाम का है। मालूम हुआ कि जो जानवर किसी मख़्लूक़ के नाम पर नामज़द कर दिया जाए, वह हराम और नापाक है, जैसे यह कह दिया जाए कि यह सैयद अहमद कबीर[1] की गाय, यह शेख़सद्दू का बकरा है वग़ैरह वग़ैरह। इस आयत में इस बात का बयान नहीं कि वह जानवर जभी हराम होगा, जब ज़िब्ह करते वक़्त

1. औरतों का एक फ़र्ज़ी पीर जिसके नाम पर बकरा ज़िब्ह किया जाता है।

उस पर ग़ैर-अल्लाह का नाम लिया जाए, बल्कि सिर्फ़ नामज़द करने से ही हराम हो गया। अगर कोई जानवर मुर्ग़ी हो या बकरी, ऊंट हो या गाय, किसी मख़्लूक़ के नाम का कर दिया जाए, चाहे वली के नाम का हो या नबी के बाप व दादा के नाम का हो या पीर व शेख़ के नाम का हो, या परी के नाम का, वह क़तई नापाक व हराम है और नाम का करने वाला मुशिरक है।

हुक्म सिर्फ़ अल्लाह के लिए है

अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का वाक़िया बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि उन्होंने जेल के साथियों से फ़रमाया—

يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ خَيْرٌ اَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ○
مَاتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلَّآ اَسْمَآءً سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ
بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ، اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ اَمَرَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ، ذٰلِكَ الدِّيْنُ
الْقَيِّمُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَايَعْلَمُوْنَ○ (يوسف:٣٩،٤٠)

'ऐ जेल के साथियो! क्या अगल-अलग रब बेहतर हैं या एक अल्लाह, जो बड़ा ज़बरदस्त है। उसको छोड़कर तुम सिर्फ़ नामों को पूजते हो, तुमने और तुम्हारे बाप दादा ने नाम रख लिए हैं। अल्लाह पाक ने इसकी कोई दलील नहीं उतारी। हुक्म सिर्फ़ अल्लाह ही का है। उसने तुम्हें हुक्म दिया है कि सिर्फ़ उसी की इबादत करो। यही मज़बूत दीन है, लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं।'

(यूसुफ़ 39-40)

एक ग़ुलाम के लिए कई आक़ाओं का होना तक्लीफ़देह है, अगर उसका एक ही आक़ा हो जो सबसे ज़बरदस्त हो, तो क्या ही अच्छा है, इसलिए मालिक एक ही है जो इंसान की सारी मुरादें पूरी करता है और उसके बिगड़े काम बना देता है, उसके सामने झूठे मालिकों की कोई हैसियत नहीं, बल्कि क़तई बे-बुनियाद ख़्याल है कि बारिश करना किसी के अख़्तियार में है, ग़ल्ला पैदा करना किसी और का काम है, कोई औलाद देता है, कोई तन्दुरुस्ती बख़्शता है, फिर आप ही आप उनके

नाम मुक़र्रर कर लिए हैं कि फ़्लां काम के मुख़्तार का नाम यह है और फ़्लां के मुख़्तार का यह नाम है और ख़ुद ही उन्हें इन कामों के वक़्त पुकारते हैं। धीरे-धीरे एक मुद्दत के बाद इसी तरह की रस्म पड़ जाती है।

मन गढ़त नाम शिर्क हैं

हालांकि अल्लाह के सिवा कौन है और न किसी का यह नाम पाया जाता है और अगर किसी का यह नाम है तो उसको अल्लाह की मशीयत में कोई दख़ल नहीं। सब कामों के मुख़्तार का नाम अल्लाह है और जिसका नाम मुहम्मद या अली है, उसको किसी बात का अख़्तियार नहीं। इस क़िस्म के ख़्यालात बांधने का अल्लाह पाक ने हुक्म नहीं दिया और मख़्लूक़ का हुक्म एतबार के क़ाबिल नहीं, बल्कि अल्लाह पाक ने इस क़िस्म के ख़्यालात के क़ायम करने से रोक दिया है, फिर अल्लाह के सिवा वह कौन है जिसके कहने का इन बातों में एतबार किया जाए। ख़ालिस और असल दीन यही है कि अल्लाह के हुक्म पर चला जाए और उसके आगे हर हुक्म ठुकरा दिया जाए, लेकिन अक्सर लोग इस राह से भटक गए और अपने पीरों, इमामों और बुज़ुर्गों की राह को अल्लाह की राह से मुक़द्दम समझ बैठे।

ख़ुद गढ़ी हुई रस्में शिर्क हैं

मालूम हुआ कि किसी राह व रस्म का न मानना और अल्लाह तआला ही का क़ानून मानना उन्हीं चीज़ों में से है जिनको अल्लाह पाक ने अपनी ताज़ीम के लिए मुक़र्रर फ़रमाया है,[1] अब अगर कोई यही मामला किसी मख़्लूक़ से करेगा तो पक्का मुशिरक होगा। इंसानों तक अल्लाह के हुक्मों का पहुंचना रसूलों ही के वास्ते से मुम्किन है। अगर कोई इमाम, मुज्तहिद या ग़ौस व क़ुतुब या मौलवी, मुल्ला या पीर व मशाइख़ या बाप-दादा या किसी बादशाह या वज़ीर या पादरी या पंडित की बात को या उनकी रस्मों को शरई हुक्मों पर मुक़द्दम समझे और

1. मतलब यह है कि अल्लाह के हुक्म के सिवा किसी का हुक्म सनद नहीं बन सकता। जो आदमी मख़्लूक़ में से किसी के हुक्म या राह व रस्म को सनद समझे, उन पर शिर्क साबित होता है। अगर मरने से पहले उसने सच्ची तौबा न की, तो वह हमेशा जहन्नम की आग में जलता रहेगा।

क़ुरआन व हदीस के होते हुए पीरों-बुज़ुर्गों और इमामों के क़ौलों को पेश करे या पैग़म्बर के बारे में यह अक़ीदा रखे कि शरीअत उन्हीं के हुक्म हैं, वह अपनी मर्ज़ी से जो जी चाहता था, कह देते थे और उसका मानना उम्मत पर फ़र्ज़ हो जाता था, इन बातों से शिर्क साबित हो जाता है! अक़ीदा यह होना चाहिए कि हक़ीक़ी हाकिम अल्लाह है और नबी सिर्फ़ लोगों को अल्लाह का हुक्म बताने वाला होता है और क़ुरआन व हदीस के मुवाफ़िक़ बात को मान लिया जाए और जो बात क़ुरआन व हदीस के ख़िलाफ़ हो उसे छोड़ दिया जाए।

लोगों की ताज़ीम में सामने खड़ा रखना मना है

أَخْرَجَ التِّرْمِذِيُّ عَنْ مُعَاوِيَةَ ﷺ قَالَ قَالَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ مَنْ سَرَّهُ أَنْ يَتَمَثَّلَ لَهُ الرِّجَالُ قِيَامًا فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ۔

'हज़रत मुआविया (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिसको इस बात से ख़ुशी हो कि लोग उसके सामने तस्वीर की तरह खड़े रहें, तो वह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।' —तिर्मिज़ी

यानी जिस आदमी की यह ख़्वाहिश हो कि लोग उसके सामने अदब के साथ हाथ बांधे हुए खड़े रहें, न हिलें-जुलें, न इधर-उधर देखें और न बोलें-चालें, बल्कि बुत बने हुए खड़े रहें, वह दोज़ख़ी है, क्योंकि वह इलाह होने का दावेदार है कि जो ताज़ीम अल्लाह की ज़ात के साथ ख़ास है, वही अपने लिए चाहता है। नमाज़ में नमाज़ी हाथ बांध कर चुप-चाप इधर-उधर देखे बग़ैर खड़े होते हैं और क़ियाम अल्लाह की ज़ात के साथ ख़ास है। मालूम हुआ कि किसी के सामने अदब व ताज़ीम की ग़रज़ से खड़ा होना नाजायज़ और शिर्क है।

बुतों और थानों की पूजा शिर्क है

أَخْرَجَ التِّرْمِذِيُّ عَنْ ثَوْبَانَ ﷺ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ لَاتَقُوْمُ السَّاعَةُ حَتّٰى تَلْحَقَ قَبَائِلُ مِنْ أُمَّتِيْ بِالْمُشْرِكِيْنَ وَحَتّٰى تَعْبُدَ قَبَائِلُ مِنْ أُمَّتِيْ الْأَوْثَانَ۔

'हज़रत सौबान रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क़ियामत नहीं आएगी जब तक मेरी उम्मत के क़बीले मुश्रिकों में न जा मिलें और बुतपरस्ती न अख़्तियार कर लें।'

—तिर्मिज़ी

बुत दो तरह के होते हैं। किसी के नाम की तस्वीर या मूर्ति बना कर उसकी पूजा की जाए, इसको अरबी में सनम कहा जाता है। किसी जगह, पेड़, पत्थर या लकड़ी या काग़ज़ को किसी के नाम का मुक़र्रर करके पूजा जाए, उसको वस्न कहा जाता है। क़ब्र, चिल्ला, लहद, छड़ी, ताज़िया, अलम, शद्दा[1], इमाम क़ासिम और शेख अब्दुल क़ादिर की मेंहदी, इमाम का चबूतरा और उस्तादों और बुज़ुर्गों के बैठने की जगहें, ये सब वस्न में दाख़िल हैं। इसी तरह शहीद के नाम ताक़, निशान और तोप जिस पर बकरा चढ़ाया जाता है और इसी तरह कुछ मकान बीमारियों के नाम से मशहूर हैं, जैसे सीतला, मसानी, भवानी, काली, कालका और बराही[2] वग़ैरह की तरफ़ कुछ जगहें जोड़ दी गई हैं, ये सब वस्न हैं, सनम और वस्न दोनों की पूजा से शिर्क साबित होता है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़बर दी कि क़ियामत के क़रीब मुसलमानों का शिर्क इसी क़िस्म का होगा, दूसरे मुश्रिकों के ख़िलाफ़, जैसे हिन्दू या अरब के मुशिरक कि अक्सर मुर्तियों को मानते हैं, ये दोंनों क़िस्म के लोग मुश्रिक हैं और अल्लाह के और रसूल के दुश्मन हैं।

---

1. वह झंडा जो करबला के शहीदों की याद में ताज़ियों के साथ निकालते हैं।

2. ये हिन्दुओं की अलग-अलग देवियां हैं—सीतला चेचक की देवी, चेचक निकल आने पर मरज़ दूर करने के लिए इस देवी की पूजा की जाती है।

मसानी— हिन्दुओं के अक़ीदे के मुताबिक सीतला की सात बहनें थीं, जिनमें से एक का नाम मसानी था। उसे खसरा या छोटी बहन की देवी समझा जाता था। भवानी, काली और कालका भी हिन्दुओं की अलग-अलग देवियां हैं।

बराही— हिन्दुओं में बीमारी की एक देवी का नाम है, जिसक़ी पूजा की जाती है, ताकि बीमारियां दूर हो जाएं,

मुम्किन है किसी आदमी के दिल में सवाल पैदा हो कि शाह शहीद रहमतुल्लाहि अलैहि ने हिन्दुओं की रस्मों का ज़िक्र क्यों किया है? जवाब यह है कि रस्में हिन्दुओं की पैरवी में जगह-जगह मुसलमानों ने भी अपना ली थीं, जैसा कि आगे चल कर खुद लिखा है।

ग़ैर-अल्लाह का ज़िब्ह लानत की वजह है

أَخْرَجَ مُسْلِمٌ عَنْ أَبِي الطُّفَيْلِ أَنَّ عَلِيًّا ﷺ أَخْرَجَ صَحِيفَةً فِيهَا لَعَنَ اللهُ مَنْ ذَبَحَ لِغَيْرِ اللهِ۔

'हज़रत अबुत्तुफ़ैल रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक किताब निकाली, जिसमें यह हदीस थी कि जिसने जानवर को ग़ैर-अल्लाह के नाम पर ज़िब्ह किया, उस पर अल्लाह की लानत है।'

—मुस्लिम

यानी जो आदमी अल्लाह के सिवा किसी मख़्लूक़ के नाम का जानवर ज़िब्ह करे, वह मलऊन है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक कापी में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कई हदीसें लिख रखी थीं, उनमें यह हदीस भी थी, मालूम हुआ कि जानवर अल्लाह ही का नाम लेकर ज़िब्ह करने से हलाल होता है, ग़ैर-अल्लाह के नाम पर जानवर ज़िब्ह करना शिर्क है और जानवर भी हराम हो जाता है, इसी तरह वह जानवर भी हराम होता है जो ग़ैर-अल्लाह के लिए नामज़द कर दिया जाए, भले ही उस पर ज़िब्ह के वक़्त अल्लाह का नाम लिया गया हो।

क़ियामत के क़रीब होने की निशानियां

أَخْرَجَ مُسْلِمٌ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ، يُعْبَدُ اللاَّتُ وَالْعُزَّى فَقُلْتُ يَارَسُوْلَ اللهِ إِنْ كُنْتُ لَاَظُنُّ حِيْنَ أَنْزَلَ اللهُ هُوَ الَّذِىْ أَرْسَلَ رَسُوْلَهُ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ○ إِنَّ ذٰلِكَ تَامًّا قَالَ إِنَّهُ سَيَكُوْنُ مِنْ ذٰلِكَ مَاشَآءَ اللهُ ثُمَّ يَبْعَثُ اللهُ رِيْحًا طَيِّبَةً فَتُوَفّٰى كُلَّ مَنْ كَانَ فِيْ قَلْبِهِ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِنْ خَرْدَلٍ مِنْ إِيْمَانٍ فَيَبْقٰى مَنْ لَاخَيْرَ فِيْهِ فَيَرْجِعُوْنَ إِلٰى دِيْنِ آبَائِهِمْ۔

'हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना, आप फ़रमा रहे थे कि दिन-रात ख़त्म न

होंगे, जब तक लात व उज़्ज़ा को दोबारा न पूजा जाएगा। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! जब अल्लाह पाक ने यह आयत (उसी ने अपना रसूल हिदायत और दीने हक़ के साथ भेजा, ताकि उसे दीनों पर ग़ालिब कर दे, अगरचे मुश्रिकों को बुरा मालूम हो) उतारी थी, तो मेरा गुमान ग़ालिब यही था कि आख़िर तक दीन यों ही रहेगा, फ़रमाया, जब तक अल्लाह पाक को मंज़ूर होगा, दीन इसी हालत पर रहेगा, फिर अल्लाह पाक एक पाकीज़ा हवा भेजेगा, वह उस आदमी को फ़ौत कर देगी, जिसके दिल में राई के दाने के बराबर भी ईमान होगा, फिर बुरे लोग ही रह जाएंगे और अपने बाप-दादा के दीन की तरफ़ लौट जाएंगे।' —मुस्लिम

यानी हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा सिद्दीक़ा ने सूरः बरात (तौबा) वाली इस आयत से यह समझा कि इस्लाम का ग़लबा क़ियामत तक रहेगा, आपने फ़रमाया कि ग़लबा उस वक़्त तक रहेगा, जब तक अल्लाह तआला को मंज़ूर होगा, फिर अल्लाह पाक एक पाकीज़ा हवा चलाएगा जिससे सब नेक लोग, जिनके दिलों में थोड़ा-सा भी ईमान होगा, ख़त्म हो जाएंगे और बे-दीन बाक़ी रह जाएंगे, न उनके दिलों में रसूल की अज़्मत होगी, न दीन का शौक़ होगा, वे बाप-दादा की रस्मों पर लपकेंगे, जो जाहिल और मुश्रिक गुज़रे हैं, फिर जो मुश्रिकों की राह अख़्तियार करेगा, ला महाला मुश्रिक हो जाएगा। मालूम हुआ कि आख़िरी ज़माने में पुराना शिर्क भी फैल जाएगा। आज मुसलमानों में पुराना और नया हर क़िस्म का शिर्क मौजूद है। आपकी पेशीनगोई सही हो रही है, जैसे ये मुसलमान नबी, वली, इमाम, शहीद वग़ैरह के साथ शिर्क के मामले कर रहे हैं, उसी तरह पुराना शिर्क भी फैल रहा है, काफ़िरों के बुतों को मानते हैं और उनकी रस्मों पर चल रहे हैं, जैसे पंड़ित से तक़्दीर का हाल पूछना, बुरी फ़ाल लेना, साइत मानना, सीतला और मसानी को पूजना, हनुमान, नोना चमारी[1] और कलुवा पीर को पुकारना, होली, दीवाली, नवरोज़ और मेहरजान[2] के त्यौहारों को मानना, 'अक़रब में चांद'[3] और 'तहतशशुआअ' को मानना, ये सारी रस्में हिंदुओं

1. लोना या नोना चमारी, बंगाल की मशहूर जादूगरनी थी।
2. नवरोज़ और मेहरजान परासियों की ईदें हैं।
3. चांद का अक़रब बुर्ज में दाख़िल होना मनहूस समझा जाता था।

और मुश्रिकों की हैं जो मुसलमानों में फैली हुई हैं। मालूम हुआ कि मुसलमानों में शिर्क का दरवाज़ा इस तरह खुलेगा कि वे क़ुरआन व हदीस को छोड़ कर बाप-दादा की रस्मों के ताबे हो जाएंगे।

थान पूजा बहुत बुरे लोगों का काम है

أَخْرَجَ مُسْلِمٌ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَخْرُجُ الدَّجَّالُ فَيَبْعَثُ اللهُ عِيْسَى بْنَ مَرْيَمَ فَيَطْلُبُهُ فَيُهْلِكُهُ ثُمَّ يُرْسِلُ اللهُ رِيْحًا بَارِدَةً مِنْ قِبَلِ الشَّامِ فَلَايَبْقَى عَلٰى وَجْهِ الْأَرْضِ أَحَدٌ فِي قَلْبِهِ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ مِنْ إِيْمَانٍ إِلَّا قَبَضَتْهُ فَيَبْقَى شَرَارُ النَّاسِ فِي خِفَّةِ الطَّيْرِ وَأَحْلَامِ السِّبَاعِ وَلَايَعْرِفُوْنَ مَعْرُوْفًا۔

'हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब दज्जाल ज़ाहिर होगा, अल्लाह तआला हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को मबूऊस फ़रमाएगा। आप उसको तलाश करके मार डालेंगे, फिर अल्लाह पाक शाम की जानिब से ठंडी हवाएं भेजेगा, धरती पर जिसके दिल में राई के दाने के बराबर भी ईमान होगा, उसको वह फ़ौत कर देगी, फिर बुरे लोग परिन्दों की तरह बे-अक़्ल और दरिंदों की तरह फाड़ खाने वाले[1] रह जाएंगे, न अच्छी बात को अच्छा समझेंगे और न बुरी बात को बुरा, फिर इंसानी रूप में उनके पास शैतान आकर कहेगा, तुम्हें शर्म नहीं आती? ये पूछेंगे कि आपका क्या इर्शाद है, वह इन्हें बुत परस्ती का हुक्म देगा कि थानों को पूजो। वे इन्हीं कामों में मगन होंगे और उन्हें रोज़ी ज़्यादा से ज़्यादा मिल रही होगी और ज़िंदगी आराम से गुज़र रही होगी।' —मुस्लिम

यानी आख़िरी ज़माने में ईमानदार ख़त्म हो जाएंगे, बेईमान और बेवक़ूफ़ रह

1. शेख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी ने 'फ़ी हिफ़्क़ि हित्तैर व अहलामिस्सबाअ़' का तर्जुमा किया है– 'सुबकी (हल्केपन) में परिंदे और गरानी (भारीपन) में दरिन्दे। इसकी शरह में फ़रमाते हैं कि लोग फ़िस्क़ का फ़साद फैलाने और नफ़्सानी ख़्वाहिशों को पूरा करने में परिन्दों की तरह तेज़ नफ़्तार और सुबुक (हल्के) होंगे और ज़ुल्म व ख़ूरेज़ी में दरिंदे की तरह गरां और सुस्त।

जाएंगे, जो दूसरों का माल हड़प कर जाएं और ज़रा न शर्माएं और उससे भलाई-बुराई की तमीज़ जाती रहेगी, फिर शैतान बुज़ुर्ग की शक्ल में आकर उन्हें समझाएगा कि देखा, बे-दीनी बड़ी बुरी बात है, दीनदार बनो। आख़िर उसके कहने-सुनने से दीन का शौक़ पैदा होगा, मगर क़ुरआन व हदीस पर नहीं चलेंगे, बल्कि अपनी अक़्ल से दीनी बातें तराशेंगे और शिर्क में गिरफ़्तार हो जाएंगे, मगर इस हालत में उनकी रोज़ी में और फ़राख़ी होगी और ज़िंदगी बड़े चैन और आराम से गुज़र रही होगी, वे समझेंगे कि हमारी राह दुरुस्त है, अल्लाह तआला हमसे राज़ी है, तभी तो हमारी हालत संवर गई। आख़िरकार और शिर्क में डूबेंगे कि ज्यों-ज्यों रस्मों को मानते हैं, हमारी मुरादें पुरी होती हैं, इसलिए मुसलमानों को अल्लाह से डरना चाहिए कि वह कभी ढील देकर पकड़ता है, कभी-कभी ऐसा होता है कि इंसान शिर्क में मुब्तला होता है और ग़ैर अल्लाह से मुरादें मांगता है, लेकिन उस पर हुज्जत तमाम करने के लिए उसकी मुरादें पूरी करता है, और वह यह ख़्याल कर बैठता है कि मैं सच्ची राह पर हूं, ग़ैर-अल्लाह का मानना सही है, वरना मुरादें पूरी न होतीं, इसलिए मुरादों के मिलने-न मिलने पर भरोसा मत करो और इस वजह से अल्लाह तआला का सच्चा दीन यानी तौहीद न छोड़ो।

इस हदीस से मालूम हुआ कि इंसान कितना ही ढीठ बन जाए, कितने ही गुनाहों में डूब जाए, सर से पैर तक बेहया बन जाए, पराया माल डकार जाने में ग़ैरत न महसूस करे और बुराई और भलाई में तमीज़ न करे, मगर फिर भी शिर्क क़रने से और ग़ैर-अल्लाह को मानने से बेहतर है, क्योंकि शैतान वे बातें छुड़ा करके ये बातें सिखाता है।[1]

बुतों का तवाफ़

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क़ियामत नहीं आएगी जब तक ज़ुल खलसा (बुत) के इर्द-गर्द दौस की औरतों की सुरीन न हिलेंगी (जब तक वे

1. इस इबारत से मक़्सूद यह है कि शिर्क की इंतिहाई बुराई वाज़ेह हो जाए। यह मक़्सूद नहीं कि शिर्क से बचने के साथ गुनाह करने में हरज नहीं।

उसका तवाफ़ न करेंगी) —बुख़ारी व मुस्लिम

अरब में एक क़ौम थी, जिसको दौस कहा जाता था। जाहिलियत में उनका एक बुत था, जिसको ज़ुल ख़लसा कहा जाता था। रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दौर में उसको तोड़ दिया गया था। आपने पेशीनगोई की कि क़ियामत के क़रीब लोग उस बुत को फिर मानने लगेंगे और दौस की औरतें उसका तवाफ़ करेंगी। आपको उनके सुरीन हिलते हुए नज़र आए। मालूम हुआ कि बैतुल्लाह के अलावा किसी और घर का तवाफ़ करना शिर्क और काफ़िराना रस्म है।

सतवां बाब

रस्म व रिवाज में शिर्क की हुर्मत

इस बाब में उन आयतों और हदीसों का बयान है जिनसे साबित होता है कि जिस तरह इंसान दुनिया के कामों में तरह-तरह से अल्लाह की ताज़ीम बजा लाता है, ऐसा मामला ग़ैर-अल्लाह से न किया जाए।

शैतान की वस्वसा अंदाज़ी

اِنْ يَّدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلَّآ اِنٰثًا وَاِنْ يَّدْعُوْنَ اِلَّا شَيْطٰنًا مَّرِيْدًا ۝ لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَقَالَ لَاَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ۝ وَّلَاُضِلَّنَّهُمْ وَلَاُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ اٰذَانَ الْاَنْعَامِ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللّٰهِ وَمَنْ يَّتَّخِذِ الشَّيْطٰنَ وَلِيًّا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِيْنًا ۝ يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيْهِمْ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ۝ اُولٰٓئِكَ مَاْوٰهُمْ جَهَنَّمُ وَلَايَجِدُوْنَ عَنْهَا مَحِيْصًا ۝ (النساء:١١٧،١١٨،١١٩،١٢٠)

'ये मुश्रिक अल्लाह को छोड़ कर औरतों को पुकारते हैं, बल्कि सरकश शैतान ही को पुकारते हैं, जिसपर अल्लाह ने फिटकार डाल दी है, उसने कह रखा है कि मैं तेरे बन्दों से एक मुक़र्रर हिस्सा अलग रखूंगा, मैं उन्हें गुमराह किए बग़ैर न रहूंगा। मैं उन्हें ज़रूर आरज़ूमंद रखूंगा और उन्हें ज़रूर हुक्म दूंगा तो वे जानवरों के कान काट डालेंगे और मैं उन्हें हुक्म दूंगा, तो अल्लाह की बनाई शक्ल को बदल डालेंगे। जो अल्लाह को छोड़ कर शैतान को दोस्त बनाए, वह ज़बरदस्त घाटे में पड़ गया। शैतान उनसे वायदा करता है और उम्मीदें बंधाता है। शैतान उनसे वायदा करके सिर्फ़ धोखा कर रहा है। इन्हीं लोगों का ठिकाना जहन्नम है, जहां से वे रिहाई न पा सकेंगे।' — अन-निसा 117,118-119, 120,

यानी जो ग़ैर अल्लाह को पुकारते हैं, वे अपने ख़्याल में औरतों के पुजारी हैं, कोई तो हज़रत बीबी को, कोई बीबी आसिया को, कोई बीबी उतावली को,

कोई लालपरी को, कोई काली परी को, कोई सीतला को, कोई मसानी को और कोई काली को पूजता है। ये सिर्फ़ ख़्याल हैं, वरना इनकी हक़ीक़त कुछ भी नहीं, न कोई औरत, न कोई मर्द, सिर्फ़ ख़ाम ख़्याली और शैतानी वस्वसा है, जिसको माबूद बना लिया है और यह जो बोलता है और कभी कोई तमाशा भी दिखा देता है, शैतान है।

इन मुश्रिकों की तमाम इबादतें शैतान के लिए हो रही हैं, यह अपने ख़्याल में नज़्र व नियाज़ औरतों को देते हैं, मगर हक़ीक़त में शैतान ले लेता है, उन्हें इन बातों से न दीनी फ़ायदा है और न दुन्यवी, क्योंकि शैतान रांदा-ए-दरगाह है, उससे दीनी फ़ायदा तो होने से रहा, क्योंकि यह इंसान का दुश्मन भला कैसे उसका भला चाहेगा, यह तो अल्लाह तआला के सामने कह चुका है कि मैं तेरे बहुत से बन्दों को अपना बन्दा बना लूंगा, उनकी अक़्लें ऐसी मारूंगा कि अपने ख़्यालात ही को मानने लगेंगे। मेरे नाम के जानवर मुक़र्रर करेंगे जिन पर मेरी नियाज़ का निशान होगा, जैसे उसका कान चीर डालेंगे या काट डालेंगे या उसके गले में कमर बन्द डाल देंगे। माथे पर मेंहदी लगा देंगे, मुंह पर सेहरा बांध देंगे, मुंह के अन्दर पैसा रख देंगे। बहरहाल वह निशानी जो यह बताए कि यह जानवर फ़्लां की नियाज़ का है, उसी में दाख़िल है।

शैतान यह भी कह कर आया है कि मेरे असर से लोग अल्लाह तआला की बनाई हुई शक्ल को बिगाड़ डालेंगे, कोई किसी के नाम की चोटी रख लेगा, कोई किसी के नाम पर नाक या कान छिदवा लेगा, कोई दाढ़ी मुंडवाएगा, कोई चार अबरू साफ़ करके फ़क़ीरी का इज़्हार करेगा, ये सब शैतानी बातें हैं और इस्लाम के ख़िलाफ़ हैं। फिर जिसने अल्लाह जैसे करीम को छोड़ कर शैतान जैसे दुश्मन की राह अख़्तियार की, उसने खुला धोखा खाया, क्योंकि एक तो शैतान दुश्मन है, दूसरे उसमें वस्वसे डालने के अलावा और कोई क़ुदरत भी नहीं। झूठे वायदों से इंसान को वक़्ती तौर पर बहला देता है कि फ़्लां को मानोगे तो यह होगा और फ़्लां को मानोगे तो यह होगा और लम्बी-लम्बी आरज़ूएं दिलाता है कि अगर इतने पैसे हों तो ऐसा बाग़ तैयार हो जाएगा, ख़ुब सूरत महल बन जाएगा, चूंकि ये उम्मीदें पूरी होती नहीं, इसलिए इंसान घबरा कर अल्लाह तआला को भूल कर ग़ैरों की तरफ़ दौड़ने लगता है और होता वही है जो मुक़द्दर में है कि किसी के

मानने या न मानने से कुछ नहीं होता। यह तो एक शैतानी वस्वसा है और उसका मक्र व फ़रेब है। इन बातों का अंजाम यह होता है कि इंसान शिर्क में गिरफ़्तार होकर जहन्नमी बन जाता है और शैतानी जाल में इस बुरी तरह फंस जाता है कि लाख हाथ-पांव मारे, मगर रिहाई नसीब नहीं होती।

औलाद के सिलसिले में शिर्क की रस्में

هُوَ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ اِلَيْهَا فَلَمَّا تَغَشّٰهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيْفًا فَمَرَّتْ بِهٖ فَلَمَّآ اَثْقَلَتْ دَّعَوَا اللهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ اٰتَيْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ○ فَلَمَّآ اٰتٰهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَآءَ فِيْمَآ اٰتٰهُمَا فَتَعٰلَى اللهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ○ (الاعراف:١٨٩،١٩٠)

'उसने तुमको एक जान से पैदा किया और उससे उसकी बीवी पैदा की, ताकि उससे चैन पाए। फिर जब उसने उससे हम बिस्तरी कर ली तो उसको हमल रह गया, वह उसे लेकर चलती-फिरती रही। फिर जब भारी हो गई, तो दोनों ने अपने परवरदिगार को पुकारा कि अगर तू हमें नेक औलाद देगा तो हम तेरे शुक्र गुज़ार होंगे, फिर जब उसने उनको नेक बच्चा दिया तो उस बच्चे में अल्लाह के शरीक बनाने लगे। उनके शिर्क से अल्लाह बुलन्द व बरतर है।'

—अल-आराफ़ 189-190

यानी शुरू में भी अल्लाह ने इंसान को बनाया, उसे बीवी दी और दोनों में मुहब्बत पैदा की, फिर जब औलाद की उम्मीद हुई तो दोनों अल्लाह से दुआएं मांगने लगे कि अगर सही सालिम और तन्दुरुस्त बच्चा पैदा हो जाए तो हम अल्लाह तआला का बहुत ही एहसान मानेंगे, फिर जब ख़्वाहिश के मुताबिक़ बच्चा पैदा हो गया तो ग़ैर-अल्लाह को मानने लगे और उनकी नज़्र व नियाज़ करने लगे। कोई बच्चे को किसी क़ब्र पर ले गया, कोई थान पर, किसी ने किसी के नाम की चोटी रख ली, किसी ने बद्धी पहना दी और किसी ने बेड़ी[1] डाल दी।

1. मन्नत का डोरा या ज़ंजीर। जब मन्नत का वक़्त पूरा हो जाता है तो नज़्र व नियाज़ के बाद बेड़ी उतारते हैं। इस्तिलाह में इसे 'बेड़ी बढ़ाना' कहते हैं।

किसी ने किसी को फ़क़ीर बना दिया और नाम भी रखे तो शिर्क में सने हुए, जैसे नबी बख़्श, अली बख़्श, पीर बख़्श, गंगा बख़्श, जमुना दास वग़ैरह। अल्लाह तो इन बेनियाज़ों से बेपरवाह है, मगर इन नादानों का ईमान जाता रहता है।

खेती-बाड़ी में शिर्क की रस्में

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ مِمَّا ذَرَاَمِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَآ لِشُرَكَآئِنَا فَمَا كَانَ لِشُرَكَآئِهِمْ فَلَايَصِلُ اِلَى اللّٰهِ وَمَاكَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ يَصِلُ اِلٰى شُرَكَآئِهِمْ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ (الانعام:١٣٧)

'और मुश्रिक उन चीज़ों में से जो अल्लाह ने पैदा की हैं यानी खेती और जानवरों में से एक हिस्सा मुक़र्रर कर चुके हैं और अपने ख़्याल में कहते हैं कि यह तो अल्लाह का है और यह हमारे शरीकों का, फिर जो इनके शरीकों का है, वह अल्लाह को नहीं पहुंचता और जो अल्लाह का है, वह उनके शरीकों को मिल जाता है। ये जो फ़ैसला कर रहे हैं, बुरा है।' —अल-अनआम 137

यानी तमाम ग़ल्ले और जानवर अल्लाह ही ने पैदा किए हैं, फिर मुश्रिक जिस तरह इनमें से अल्लाह तआला की नियाज़ निकालते हैं, उसी तरह ग़ैर-अल्लाह की भी नियाज़ निकालते हैं, जबकि ग़ैर-अल्लाह की नियाज़ में जो अदब व एहतराम बजा लाते हैं, वह अल्लाह की नियाज़ में नहीं बजा लाते।

चौपायों में शिर्क की रस्में

'कहते हैं कि यह जानवर और खेती अछूती है, इसे कोई न खाए अलावा उसके जिसे हम चाहें (महज़ अपने ख़्याल से) कुछ जानवरों की सवारी मना है और कुछ जानवरों पर अल्लाह का नाम नहीं लेते। यह सब अल्लाह पर बोहतान है। वह उनके बोहतान की सज़ा जल्दी दे देगा।' —अल-अनआम 139

कुछ लोग सिर्फ़ अपने ख़्याल से कह देते हैं कि फ़्लां चीज़ अछूती है, उसको फ़्लां आदमी खा सकता है, कुछ जानवरों को लादते नहीं, सवारी भी नहीं करने देते कि यह फ़्लां की नियाज़ का जानवर है, उसका अदब करना चाहिए और कुछ

जानवरों को ग़ैर-अल्लाह के नाम पर नामज़द कर देते हैं कि इन कामों से अल्लाह ख़ुश होगा और मुरादें पूरी करेगा, मगर उनके ये ख़्यालात और काम झूठे हैं, जिनकी वे ज़रूर सज़ा पाएंगे।

مَاجَعَلَ اللّٰهُ مِنۢ بَحِيْرَةٍ وَّلَا سَآئِبَةٍ وَّلَا وَصِيْلَةٍ وَّلَاحَامٍ وَّلٰكِنَّ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَاَكْثَرُهُمْ لَايَعْقِلُوْنَ۝ (المائدہ:۱۰۳)

'अल्लाह ने न बहीरा को, न साइबा को, न वसीला को और न हामी को जायज़ क़रार दिया, लेकिन काफ़िर झूठी बातें अल्लाह के ज़िम्मे लगाते हैं और अक्सर नासमझ हैं।'

—अल-माइदा 103

जो जानवर किसी के नाम का नामज़द किया जाता है, तो उसका कान चीर दिया जाता है, उसको बहीरा कहते हैं, सांड को साइबा कहा जाता था, जिस जानवर के बारे में यह मन्नत मानी जाए कि उसका बच्चा नर पैदा हो, तो उसको नियाज़ में दे दिया जाएगा, फिर उसके नर और मादा दोनों बच्चे पैदा होते हैं, तो नर को भी नियाज़ में न ही देते, इन दोनों बच्चों को वसीला कहा जाता था और जिस जानवर से दस बच्चे पैदा हो जाते थे, उस पर सवार होना और लादना छोड़ देते थे, उसको हामी कहा जाता था, फ़रमाया ये बातें शरई नहीं है, रस्मी हैं। मालूम हुआ कि किसी जानवर को किसी के नाम का ठहरा देना और उस पर निशान लगा देना और यह मुक़र्रर करना कि फ़्लां की नियाज़ गाय, फ़्लां की बकरी और फ़्लां की मुर्ग़ी ही होती है, ये सब जाहिलाना रस्में हैं और पाक शरीअ़त के ख़िलाफ़ हैं।

हलाल व हराम में अल्लाह पर झूठ बांधना

وَلَاتَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا حَلٰلٌ وَّهٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا
عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَايُفْلِحُوْنَ۝

(النحل:۱۱۶)

'झूठ न कहो जिसको तुम्हारी ज़ुबानें बयान करती हैं कि यह हलाल है और यह हराम है, ताकि अल्लाह तआला पर झूठ बांधो। यक़ीन मानो जो लोग अल्लाह पर झूठ बांधते हैं, वे फ़लाह को नहीं पहुंचते।' —अन-नह्ल 116

यानी अपनी तरफ़ से हलाल व हराम मुक़र्रर न करो। यह अल्लाह तआला ही की शान है और इस तरह कहने से अल्लाह पर झूठ बांधना है, यह ख़्याल करना कि अगर फ़्लां काम इस तरह किया जाएगा तो ठीक हो जाएगा, वरना इसमें गड़बड़ हो जाएगी, ग़लत है, क्योंकि अल्लाह तआला पर झूठ बांध कर कामियाबी हासिल नहीं कर सकता। मालूम हुआ कि यह अक़ीदा कि मुहर्रम में पान न खाया जाए, लाल कपड़े न पहने जाएं, हज़रत बीबी का सहनक मर्द न खाएं, उनकी नियाज़ में फ़्लां-फ़्लां तरकारियों का होना ज़रूरी है, मिस्सी भी हो, हिना भी हो, उसको लौंडी, पहले ख़ाविंद की वफ़ात या तलाक़ के बाद दूसरा निकाह कर लेने वाली औरत, नीच क़ौम और बदकार न खाए, शाह अब्दुल हक़ साहब का तोहफ़ा हलवा ही है, उसको एहतियात से बनाओ, और हुक़्क़ा पीने वाले को न खिलाओ। शाह मदार की नियाज़ मलीदा है, बू अली क़लन्दर की सिवइयां और अस्हाबे कह्फ़ की गोश्त-रोटी है, शादी के मौक़े पर, फ़्लां-फ़्लां मौत व ग़मी के मौक़े पर फ़्लां-फ़्लां रस्मों का अंजाम देना ज़रूरी है। शौहर की मौत के बाद न शादी करो, न शादी में बैठो, न अचार डालो, फ़्लां आदमी नीला कपड़ा और फ़्लां लाल कपड़ा न पहने। ये सब बातें शिर्क हैं। मुश्रिक अल्लाह की शान में अपना दख़ल देते हैं और अपनी एक शरीअत गढ़ रहे हैं।

सितारों में तासीर (असर डालना) मानना शिर्क है

أَخْرَجَ الشَّيْخَانُ عَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدِ نِالْجُهَنِى ﷺ قَالَ صَلَّى بِنَا رَسُوْلُ اللهِ صَلَاةَ الصُّبْحِ بِالْحُدَيْبِيَّةِ عَلٰى اِثْرِ سَمَاءٍ كَانَتْ مِنَ اللَّيْلِ فَلَمَّا انْصَرَفَ اَقْبَلَ عَلَى النَّاسِ فَقَالَ هَلْ تَدْرُوْنَ مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ قَالُوْا اللهُ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَمُ قَالَ قَالَ اَصْبَحَ مِنْ عِبَادِىْ مُؤْمِنٌ بِىْ وَكَافِرٌ فَاَمَّا مَنْ قَالَ مُطِرْنَا بِفَضْلِ اللهِ وَرَحْمَتِهٖ فَذٰلِكَ مُؤْمِنٌ بِىْ وَكَافِرٌ بِالْكَوَاكِبِ وَاَمَّا مَنْ قَالَ مُطِرْنَا بِنَوْءِ كَذَا وَكَذَا فَذٰلِكَ كَافِرٌ بِىْ وَمُؤْمِنٌ بِالْكَوَاكِبِ۔

'हज़रत ज़ैद बिन ख़ालिद जोहनी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक दिन हुदैबिया में रात की बारिश के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमको सुबह की नमाज़ पढ़ाई, नमाज़ से फ़ारिग़ होकर लोगों की तरफ़

मुतवज्जह हो कर फ़रमाया, जानते हो, तुम्हारे रब ने क्या कहा? सहाबा रिज़्वानुल्लाहि अलैहिम अजमईन ने जवाब दिया कि अल्लाह और उसका रसूल ख़ूब जानता है। फ़रमाया कि उसने कहा, मेरे बन्दों ने सुबह की, कुछ तो मोमिन थे और कुछ काफ़िर थे, उसने कहा अल्लाह के फ़ज़्ल से और उसकी रहमत से बारिश हुई, वह अल्लाह पर ईमान लाया और तारों के साथ कुफ़्र किया और जिसने कहा कि फ़्लां-फ़्लां तारे[1] से बारिश हुई, उसने मेरे साथ कुफ़्र किया और तारों पर ईमान लाया।'

—बुख़ारी-मुस्लिम

यानी जो आदमी कायनात में मख़्लूक़ की तासीर समझता है, उसे अल्लाह तआला अपने इंकारियों में गिनता है कि वह सितारा परस्त है, और जो यह कहता है कि सारा कारख़ाना अल्लाह के हुक्म से चल रहा है, वह उसका मक़्बूल बन्दा है, सितारा परस्त नहीं, मालूम हुआ कि नेक व बद साइतों के मानने, अच्छी-बुरी तारीख़ों के या दिन के पूछने और नजूमी की बात पर यक़ीन करने से शिर्क का दरवाज़ा खुलता है, क्योंकि इन सबका ताल्लुक़ तारों से है और तारों का मानना सितारा परस्तों का काम है।

नजूमी, जादूगर और काहिन काफ़िर हैं

وَأَخْرَجَ رَزِيْنَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ مَنِ اقْتَبَسَ بَابًا مِنْ عِلْمِ النُّجُوْمِ لِغَيْرِ مَا ذَكَرَ اللّٰهُ فَقَدِ اقْتَبَسَ شُعْبَةً مِنَ السِّحْرِ اَلْمُنَجِّمُ كَاهِنٌ وَالْكَاهِنُ سَاحِرٌ وَالسَّاحِرُ كَافِرٌ۔

'हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० अन्हुमा से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिसने इल्मे नजूम (तारा विज्ञान) का कोई मसला सीखा, बग़ैर ऐसी सूरत के, जो अल्लाह ने बयान की है, तो उसने

1. 'बिनौइ' का तर्जुमा उर्दू में 'नक्षत्र' किया जाता है, यानी तालेअ़, नसीबा, बुर्ज, मंज़िल 'बिनौइ कज़ा' से मुराद है 'क़मर की मंज़िलों की तासीर' इस्तिलाह (पारिभाषिक शब्दों) में नक्षत्र से मुराद वे सितारे या चांद की मंज़िलें हैं जो रात-दिन गर्दिश में रहती हैं और हर साइत के लिए उनकी ख़ासियतें अलग-अलग मुक़र्रर हैं। इन्हीं को देख कर साद व नहस का हुक्म लगाया जाता है, जो कि सरासर ग़लत है।

जादू का एक हिस्सा सीखा, नजूमी काहिन है और काहिन जादूगर है और जादूगर काफ़िर है।[1] (रज़ीन)

यानी क़ुरआन पाक में तारों का बयान है कि उनसे अल्लाह तआला की क़ुदरत व हिक्मत मालूम होती है। उनसे आसमान की ख़ुबसूरती है और उनसे शैतान को मार-मार का भगा दिया जाता है।[2]

यह बयान नहीं है कि उन्हें क़ुदरत के कारख़ाने में दख़ल है। दुनिया की भलाई-बुराई इन्हीं के असरात हैं। अब अगर कोई तारों के पहले फ़ायदों को छोड़कर यह कहे कि उन्हीं की तासीरात आलम में कारफ़रमा हैं और ग़ैब का दावा करे, जिस तरह जाहिलियत में जिन्नों से पूछ-पूछ कर काहिन ग़ैब की बातें बयान किया करते थे, उसी तरह नजूमी तारों से मालूम करके बताते हैं, गोया काहिन, नजूमी, रुम्माल, जफ़्फ़ार सबकी एक ही राह है, काहिन जादूगरों की तरह जिन्नों से दोस्ती गांठता है और जिन्नों से दोस्ती उनको माने बग़ैर पैदा नहीं होती, जब उनको पुकारा जाए और भोग दिया जाए तो दोस्ती पैदा होती है, इसलिए ये कुफ़्र व शिर्क की बातें हैं। अल्लाह पाक मुसलमानों को शिर्क से बचाए रखे। आमीन।

नजूम और रमल पर ऐतक़ाद का गुनाह

أَخْرَجَ مُسْلِمٌ عَنْ حَفْصَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ مَنْ أَتٰى عَرَّافًا فَسَأَلَهُ عَنْ شَيْءٍ لَمْ تُقْبَلْ لَهُ صَلَاةٌ أَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً.

'उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो ख़बरें बताने वाले के पास आया और उससे कुछ पूछा तो उसकी चालीस दिन तक नमाज़ क़ुबूल नहीं होगी।'

—मुस्लिम

1. रज़ीन बिन मुआविया रहमतुल्लाहि अलैहि हदीस के माहिरों में से हैं। अपनी किताब में हदीस की छः किताबों के अलावा भी हदीसें लाए हैं। छठी सदी हिजरी में वफ़ात पाई। किताब का नाम है 'अत्तजरीदु फ़िल जमइ बैनस्सिहाह' है

2. क़ुरआन मजीद में सितारों के तीन फ़ायदे बयान हुए हैं— 1- आसमान ख़ूबसूरती, 2- शैतानों को मार भगाना और 3- ख़ुश्की और तरी में मुसाफ़िर की रहनुमाई।

यानी जो आदमी ग़ैब की बातें बताने का दावेदार है, अगर उससे किसी ने जाकर पूछ लिया तो उसकी चालीस दिन तक इबादत क़ुबूल नहीं रही, क्योंकि उसने शिर्क किया और शिर्क इबादतों का नूर मिटा देता है। नजूमी, रुम्माल, जफ़्फ़ार, फ़ाल खोलने वाले, नाम निकालने वाले और कश्फ़ वाले, सब अर्राफ़ में दाख़िल हैं।

शगून (शकुन) और फ़ाल कुफ़्र की रस्में हैं

أَخْرَجَ اَبُوْدَاوُدَ عَنْ قَطَنِ بْنِ قَبِيْصَةَ عَنْ أَبِيْهِ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ اَلْعِيَافَةُ وَالطُّرُقُ الطِّيَرَةُ مِنَ الْجِبْتِ۔

'हज़रत क़बीसा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि शगून लेने के लिए जानवर उड़ाना, फ़ाल निकालने के लिए कुछ डालना और बद शगूनी[1] कुफ़्र में से है।'

أَخْرَجَ أَبُوْدَاوُدَ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ قَالَ الطِّيَرَةُ شِرْكٌ الطِّيَرَةُ شِرْكٌ الطِّيَرَةُ شِرْكٌ۔

'हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, शगून लेना शिर्क है, शगून लेना शिर्क है। शगून लेना शिर्क है। (अबूदाऊद)

अरब में शगून लेने का बहुत रिवाज था और उनका शगून पर बड़ा एतक़ाद था, इसलिए आपने कई बार फ़रमाया कि यह शिर्क है, ताकि लोग बाज़ आ जाएं।

أَخْرَجَ أَبُوْدَاوُدَ عَنْ سَعْدِ بْنِ مَالِكٍ ؓ أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ لَا هَامَّةَ وَلَاعَدْوٰى وَلَاطِيَرَةَ وَإِنْ تَكُنِ الطِّيَرَةُ فِي شَيْءٍ فَفِي الدَّارِ وَالْفَرَسِ وَالْمَرْأَةِ۔

---

1. अल- इयाफ़ा परिंद या हिरन को छोड़ते, अगर वह दाएं तरफ़ जाए तो मुबारक ख़्याल करते, अगर बाईं तरफ़ जाए, तो मनहूस समझते और काम से रुकते। तयरा का भी यही मतलब है। तुरुक़ कंकड़ी फेंकते या रेत पर ख़त ख़ीचते थे ओर उससे नेक व बद शगून लेते थे।

'हज़रत साद बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, न उल्लू है, न किसी को किसी के मरज़ लगता है और न किसी चीज़ में नहूसत है और अगर नहूसत होती तो औरत, घर और घोड़े में होती।' —अबू दाऊद

अरब का अक़ीदा यह था कि जिस मक़्तूल का बदला न लिया जाए, उसकी खोंपड़ी से उल्लू निकल कर फ़रियाद करता फिरता है, उसको हामा कहा जाता था। आपने फ़रमाया कि यह बात बिल्कुल बे-बुनियाद है। मालूम हुआ कि तनासुख़ भी क़तई बे-बुनियाद है। अरब में कुछ बीमारियों जैसे खुजली, कोढ़ वग़ैरह के बारे में यह ख़्याल था कि एक दूसरे को लग जाते हैं, फ़रमाया यह बात भी ग़लत है। मालूम हुआ कि लोगों में जो यह बात आमतौर पर रिवाज पा गई है कि चेचक वाले से परहेज़ करते हैं और बच्चों को उसके पास जाने नहीं देते, ये कुफ़्र की रस्में हैं। इसको न मानना चाहिए (यानी यह अक़ीदा नहीं रखना चाहिए कि फ़्लां आदमी की बीमारी हमें अपने आप, बग़ैर अल्लाह के हुक्म के लग जाएगी, क्योंकि बीमारियां अल्लाह के हुक्म से लगती हैं, हां, डाक्टरी लिहाज़ से एहतियात करने में कोई हरज नहीं)

लोगों में यह बात भी मशहूर है कि फ़्लां काम फ़्लां को ना मुबारक है, रास नहीं आया, यह भी ग़लत है। फ़रमाया कि अगर इस बात का कुछ असर है तो तीन ही चीज़ों में है, घर, घोड़ा और औरत।' ये चीज़ें कभी ना मुबारक साबित होती है, मगर इनकी नामुबारकी मालूम करने की कोई राह नहीं बताई गई। यह जो लोगों में मशहूर है कि शेवां घर[2], सितारा पेशानी घोड़ा और कल जिभी औरत नहस होती है, बे-सनद बात है। मुसलमानों को इन बातों की परवाह नहीं करनी चाहिए। अगर नया मकान या घोड़ा ख़रीदा जाए या औरत से शादी की जाए तो अल्लाह ही से उसकी भलाई मांगे, बाक़ी और चीज़ों में यह ख़्याल न करे कि फ़्लां काम रास आया और फ़्लां रास नहीं आया।

---

1. दूसरी जगह इसे यों कहा, घर वह बुरा या मनहूस है जिसके पड़ोसी बुरे हों। औरत वह मनहूस या बुरी है जो कड़वे मिज़ाज की और बद-अख़्लाक़ हो, घोड़ा वह देखने के क़ाबिल नहीं जो शूरी और अड़ियल हो।

2. जो मकान आगे से खुला और पीछे से छोटा हो, उसे शेरवां कहते हैं। हिन्दी इसे मनहूस ख्याल करते थे।

أَخْرَجَ الْبُخَارِىُّ عَنْ أَبِى هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ لَاعَدْوٰى وَلَاهَامَةَ وَلَاصَفَرَ۔

'हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, न छूत-छात है, न उल्लू है और न सफ़र है।'

—बुख़ारी

अरब वाले जौउल कल्ब के रोगी के बारे में यह ख़्याल किया करते थे कि उसके पेट में कोई बला घुसी हुई है जो खाना चट कर जाती है, इसी लिए उस ग़रीब का पेट नहीं भरता, उस भूत का नाम सफ़र मशहूर था। आपने फ़रमाया कि यह सिर्फ़ वहम है, भूत वग़ैरह कुछ नहीं। मालूम हुआ कि बीमारियां बला के असरात से नहीं होतीं। कुछ लोग बुराइयों को बला का असर ख़्याल करते हैं, जैसे सीतला, मसानी, बराही[1] वग़ैरह, मगर यह बात ग़लत है। जाहिलियत में सफ़र[2] महीने को नहस ख़्याल करते थे और उसमें कोई काम नहीं करते थे, यह भी ग़लत है। मालूम हुआ कि सफ़र के तेरह दिनों को नहस समझना और अक़ीदा रखना कि इनमें बलाएं उतरती हैं, इसी वजह से इनका नाम भी तेरह तेज़ी रखा गया कि इनकी तेज़ी से काम बिगड़ जाते हैं, इसी तरह किसी चीज़ को या तारीख़ को या दिन को या साइत को नहस समझना सब शिर्क की बातें हैं।

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कोढ़ी का हाथ पकड़ कर उसे अपने साथ प्याले में रख कर फ़रमाया, अल्लाह पर एतमाद और भरोसा करके खाओ। (इब्ने माजा)

यानी हमारा एतमाद व तवक्कुल अल्लाह पर है, वह जिसे चाहे बीमार कर दे और जिसे चाहे, तन्दुरुस्त कर दे, हम किसी के साथ खाने से परहेज़ नहीं करते और बीमारी के लग जाने को नहीं मानते।

---

1. बराही हिन्दुओं में बीमारियों की एक देवी का नाम है, जिसकी पूजा की जाती है, ताकि बीमारियां दूर हो जाएं।

2. अरबी महीना

अल्लाह तआला को सिफ़ारिशी न बनाओ

أَخْرَجَ أَبُوْدَاوُدَ عَنْ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعَمٍ ﷺ قَالَ أَتَى رَسُوْلَ اللهِ ﷺ أَعْرَابِيٌّ فَقَالَ جُهِدَتِ الْأَنْفُسُ وَجَاعَ الْعِيَالُ وَهَلَكَتِ الْأَمْوَالُ فَاسْتَسْقِ اللهَ لَنَا فَإِنَّا نَسْتَشْفَعُ بِكَ عَلَى اللهِ وَنَسْتَشْفَعُ بِاللهِ عَلَيْكَ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ سُبْحَانَ اللهِ سُبْحَانَ اللهِ فَمَا زَالَ يُسَبِّحُ حَتَّى عُرِفَ ذٰلِكَ فِي وُجُوْهِ أَصْحَابِهِ ثُمَّ قَالَ وَيْحَكَ إِنَّهُ لَايُسْتَشْفَعُ بِاللهِ عَلَى أَحَدٍ شَأْنُ اللهِ أَعْظَمُ مِنْ ذٰلِكَ وَيْحَكَ أَتَدْرِىْ مَااللهُ إِنَّ عَرْشَهُ عَلَى سَمٰوَاتِهِ هٰكَذَا وَقَالَ بِأَصَابِعِهٖ مِثْلُ الْقُبَّةِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ لَيَئِطُّ بِهٖ أَطِيْطَ الرَّحْلِ بِالرَّاكِبِ۔

'हज़रत जुबैर बिन मुतइम रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास एक देहाती ने आकर कहा, लोग मशक़्क़त में पड़ गए, बच्चे भूख से बलबला रहे और जानवर हलाक हो गए। आप हमारे लिए अल्लाह से बारिश की दुआ मांगें। हम अल्लाह के पास आपको शफ़ीअ बनाना चाहते हैं और आपके पास अल्लाह तआला को, फ़रमाया, सुब्हानल्लाह, सुब्हानल्लाह यानी अल्लाह निराला है। आप इतनी देर तक अल्लाह तआला की पाकी बयान करते रहे कि सहाबा के चेहरों पर उसका असर महसूस होने लगा, फिर फ़रमाया, नादान! अल्लाह पाक किसी से सिफ़ारिश नहीं करता। उसकी शान इससे बुलन्द व बरतर है। नादान जानता है, अल्लाह क्या है, उसका अर्श उसके आसमानों पर इस तरह है और उंगलियों से गुम्बद की तरह बताया। उसकी वजह से वह चरचरा रहा है, जिस तरह ऊंट की काठी सवार के बोझ से चरचराती है।'

—अबूदाऊद

यानी एक बार अरब में अकाल पड़ गया, बारिश बन्द हो गई, एक देहाती ने आपके पास आकर लोगों की हालते ज़ार बयान की और आपसे दुआ के लिए कहा और यह भी कहा कि हम आपकी सिफ़ारिश अल्लाह के पास चाहते हैं और अल्लाह की सिफ़ारिश आपके पास चाहते हैं। यह सुन कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह तआला के रौब और ख़ौफ़ से कांपने लगे और आपकी ज़ुबान पर अल्लाह की बड़ाई के कलिमे आ गए। मज्लिस में हाज़िर लोगों के

चेहरों पर अल्लाह तआला की अज़्मत से तब्दीली के निशान पैदा हो गए। फिर आपने उस देहाती को समझाया कि अख़्तियार तो मालिक ही का है। अगर मालिक सिफ़ारिश की वजह से काम कर दे तो उसकी मेहरबानी है। जब यह कहा गया कि हम अल्लाह को पैग़म्बर के पास सिफ़ारिशी बना कर लाए, तो गोया मालिक व मुख़्तार पैग़म्बर को बना दिया गया, हालांकि यह शान अल्लाह की है, आगे इस क़िस्म का कलिमा ज़ुबान से न निकलाना। अल्लाह तआला की शान बहुत ही बड़ी है, तमाम नबी और वली उसके सामने एक ज़र्रे से भी कमतर हैं। तमाम आसमानों और ज़मीन को उसका अर्श एक गुम्बद की तरह केरे हुए है। अर्श, इसके बावजूद कि इतना बड़ा है, मगर फिर भी उस शहंशाह की अज़्मत को नहीं संभाल सकता और चरचरा रहा है। मख़्लूक़ के ख़्याल में उसकी अज़्मत नहीं आ सकती और वह उसकी अज़्मत को अपने-अपने ख़्यालों से अदा नहीं कर सकती। उसके काम में दख़ल देना और उसकी अज़ीम सल्तनत में हाथ डालना तो दूर की बात, वह शहंशाह बे-फ़ौज और लश्कर के, बल्कि वज़ीर व मुशीर के बग़ैर एक आन में करोड़ों कम कर देता है, भला वह किसी के पास आकर सिफ़ारिश क्यों करे? और कौन उसके सामने मुख़्तार बन सकता है? सुब्हान अल्लाह! तमाम इंसानों में सबसे अफ़ज़ल इंसान महबूबे इलाही अहमद मुज्तबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं और उनकी यह हालत कि एक देहाती के मुंह से एक नामाक़ूल बात निकल गई तो आपके दहश्त के मारे होश उड़ गए और आप अर्श से फ़र्श तक, अल्लाह की जो अज़्मत भरी हुई है, उसका बयान करने लगे, उन लोगों को क्या कहा जाए जो उससे भाई बन्दी का-सा या दोस्ती का सा रिश्ता समझ रहे हैं और बढ़-चढ़ कर बातें बनाते रहते हैं। कोई कहता है कि मैंने रब को एक कौड़ी में ख़रीद लिया, कोई कहता है मैं रब से दो वर्ष बड़ा हूं, कोई कहता है मेरा रब मेरे पीर की सूरत के अलावा और सूरत में ज़ाहिर हो तो मैं कभी उसे न देखूं और किसी ने यह शेर (पद) कहा—

दिल अज़ मेहरे मुहम्मद रेश दारम
रक़ाबत बा ख़ुदा -ए- ख्वेश दारम

(मेरा दिल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहम्ब्बत में ज़ख्मी है। मैं अपने रब से रक़ाबत रखता हूं)

और किसी ने कहा—

बा ख़ुदा दीवाना बाश व बा मुहम्मद होशियार

यानी रब के साथ दीवाना, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ होशियार रह। कोई मुहम्मद की हक़ीक़त को इलाही हक़ीक़त से अफ़ज़ल बताता है, अल्लाह की पनाह! अल्लाह की पनाह! इन मुसलमानों को क्या हो गया, क़ुरआन पाक के होते हुए उनकी अक़्लों पर पत्थर क्यों पड़ गए। ये गुमराहियां, ऐ अल्लाह! इनसे हमें महफ़ूज़ रख, आमीन।

किसी ने क्या ख़ूब कहा है—

अज़ ख़ुदा ख़्वाहीम तौफ़ीक़े अदब
बे अदब महरूमे ग्श्त अज़ फ़ज़्ले रब।

(हम अल्लाह से अदब की तौफ़ीक़ मांगते हैं। बे अदब रब के फ़ज़्ल से महरूम रह जाता है)

लोगों में एक ख़त्म मशहूर है, जिसमें यह कलिमा पढ़ा जाता है, या शेख अब्दुल क़ादिर जीलानी शैअल्लिल्लाह! यानी (ऐ शेख़! अल्लाह के वास्ते हमारी मुराद पूरी करो) यह शिर्क है और ख़ुला शिर्क।[1] अल्लाह पाक मुसलमानों को इससे बचाए, आमीन।

ऐसा लफ़्ज़ मुंह से न निकालो जिससे शिर्क टपकता हो या बेअदबी का पहलू निकलता हो। अल्लाह तआला की यह बहुत बड़ी शान है। वह बाकमाल और बे-ज़वाल शाहंशाह है, एक नुक्ते में पकड़ लेना और एक बात में बख़्श देना उसी का काम है। यह कहना सरासर बे-अदबी है कि देखने में बे अदबी का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया है और इससे कोई दूर के मानी मुराद हैं, क्योंकि अल्लाह तआला की ज़ात पहेलियों से बालातर है। अगर कोई आदमी अपने किसी बुज़ुर्ग से ठट्ठा करने लगे, तो उसे कितना बुरा समझा जाएगा, हंसी-मंज़ाक़ की बातें तो बेतकल्लुफ़ दोस्तों से होती हैं, बाप और बादशाह से नहीं।

1. रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस के हिसाब से दुआ से पहले और दुआ के आख़िर में दरूद शरीफ़ पढ़ना दुआ के क़ुबूल होने की वजह है। किसी के तुफ़ैल का वसीला पकड़ना फ़ज़ीलत वाले तीन ज़मानों और चारों इमामों से सही और वाज़ेह तरीक़े से साबित नहीं, इसलिए इससे भी बचना चाहिए।

अल्लाह तआला के नज़दीक सबसे प्यारे नाम

أَخْرَجَ مُسْلِمٌ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِنَّ أَحَبَّ أَسْمَاءِكُمْ عَبْدُ اللهِ وَعَبْدُ الرَّحْمٰنِ۔

'हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुम्हारे बहुत ही प्यारे नाम अब्दुल्लाह और अब्दुर्रहमान हैं।'
—मुस्लिम

अल्लाह का बन्दा या रहमान का बन्दा कितना प्यारा नाम है। इन्हीं नामों में अब्दुल क़ुद्दूस, अब्दुल जलील, अब्दुल ख़ालिक़, इलाही बख़्श, अल्लाह दिया, अल्लाह दाद वग़ैरह दाख़िल हैं, जिनमें अल्लाह की तरफ़ निस्बत ज़ाहिर होती है।

अल्लाह के नाम के साथ कुन्नियत न रखो

أَخْرَجَ أَبُوْدَاوُدَ وَالنَّسَآئِيُّ عَنْ شُرَيْحِ بْنِ هَانِئٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنْ أَبِيْهِ أَنَّهُ لَمَّا وَفَدَ إِلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ مَعَ قَوْمِهِ سَمِعَهُمْ يُكَنُّوْنَهُ بِأَبِي الْحَكَمِ فَدَعَاهُ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ فَقَالَ إِنَّ اللهَ هُوَ الْحَكَمُ وَإِلَيْهِ الْحُكْمُ فَلِمَ تُكَنّٰى أَبَا الْحَكَمِ۔

'हज़रत हानी रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि जब मैं अपनी क़ौम के वफ़्द के साथ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया, तो आपने उनसे सुना कि मुझे मेरे साथी अबुल हकम कह कर आवाज़ देते हैं। आपने मुझे बुला कर फ़रमाया, हकम अल्लाह ही है, हुक्म उसी का है। तुम्हारी कुन्नियत (उपनाम) अबुल हकम क्यों रखी गई है?'
—अबूदाऊद, नसई

यानी हर फ़ैसले का चुका देना और झगड़े का मिटा देना अल्लाह ही की शान है, जो आख़िरत में ज़ाहिर होगी कि वहां अगले-पिछले सारे झगड़े तै हो जाएंगे, ऐसी किसी मख़्लूक़ में ताक़त नहीं है। मालूम हुआ कि जो लफ़्ज़ अल्लाह ही की शान के लायक़ है, उसे किसी ग़ैर के लिए इस्तेमाल न किया जाए, जैसे शहंशाह अल्लाह तआला ही को कहा जाए, जो सारे जहान का रब है, जो चाहे कर डाले।

यह जुम्ला अल्लाह तआला ही की शान में बोला जा सकता है। इसी तरह माबूद, बड़ा दाना, बे-नियाज़ वग़ैरह लफ़्ज़ अल्लाह तआला ही की शान के लायक़ हैं।

सिर्फ़ माशअल्लाह कहो

أَخْرَجَ فِى شَرْحِ السُّنَّةِ عَنْ حُذَيْفَةَ رضي الله عنه عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ لَاتَقُوْلُوْا مَاشَآءَ اللهُ وَشَآءَ مُحَمَّدٌ وَقُوْلُوْا مَاشَآءَ اللهُ وَحْدَهٗ۔

'हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, यों न कहो जो अल्लाह और मुहम्मद चाहे, बल्कि यों कहो, जो अकेला अल्लाह चाहे।'

—शरहुस्सुन्नः

यानी अल्लाह की शान में किसी मख़्लूक़ का दख़ल नहीं, चाहे कितना ही बड़ा और कैसा ही मुक़र्रब क्यों न हो, जैसे यह न कहा जाए कि अल्लाह और रसूल चाहेगा तो काम हो जाएगा, क्योंकि दुनिया का सारा कारोबार अल्लाह ही के चाहने से होता है, रसूल के चाहने से कुछ नहीं होता या अगर कोई आदमी पूछे कि फ़्लां के दिल में क्या है या फ़्लां की शादी कब होगी या फ़्लां पेड़ पर कितने पत्ते हैं या आसमान में कितने तारे हैं, तो उसके जवाब में यह न कहे कि अल्लाह और रसूल ही जानें, क्योंकि ग़ैब की बात की ख़बर अल्लाह ही को है, रसूल को नहीं। मगर दीनी बातों में यो कह दिया जाए तो कोई हरज नहीं, क्योंकि अल्लाह ने अपने रसूल को दीन की हर बात बता दी है और लोगों को अपने रसूल की फ़रमांबरदारी का हुक्म दिया है।

ग़ैर-अल्लाह की क़सम शिर्क है।

أَخْرَجَ التِّرْمِذِىُّ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ مَنْ حَلَفَ بِغَيْرِ اللهِ فَقَدْ أَشْرَكَ۔

'हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना, फ़रमा रहे थे जिसने ग़ैर-अल्लाह की क़सम खायी, उसने शिर्क किया।'

—तिर्मिज़ी

أَخْرَجَ مُسْلِمٌ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ سَمُرَةَ ﷺ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ لَاتَحْلِفُوْا بِالطَّوَاغِىْ وَلَا بِاٰبَآئِكُمْ۔

'हज़रत अब्दुर्रहमान बिन समुरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बुतों की क़स्में न खाओ और न बापों की क़स्में खाओ।' —मुस्लिम

أَخْرَجَ الشَّيْخَانُ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ إِنَّ اللّٰهَ يَنْهَاكُمْ أَنْ تَحْلِفُوْا بِاٰبَآئِكُمْ مَنْ كَانَ حَالِفًا فَلْيَحْلِفْ بِاللّٰهِ أَوْ لِيَصْمُتْ۔

'हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह पाक तुमको बाप-दादा की क़स्में खाने से मना फ़रमाता है। जो आदमी क़सम खाए तो अल्लाह की खाए, वरना ख़ामोश रहे।' —बुख़ारी-मुस्लिम

أَخْرَجَ الشَّيْخَانُ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ مَنْ حَلَفَ فَقَالَ فِىْ حَلْفِهٖ بِاللَّاتِ وَالْعُزّٰى فَلْيَقُلْ لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ۔

'हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत की, आपने फ़रमाया, जिसने (सबक़ते लिसानी के तौर पर) लात व उज़्ज़ा की क़सम खाई, उसे ला इला-ह इल्लल्लाहु कह लेना चाहिए।'

—बुख़ारी व मुस्लिम

जाहिलियत के ज़माने में बुतों की क़स्में खाई जाती थीं। इस्लाम में अगर किसी मुसलमान के मुंह से आदत के मुताबिक़ ग़ैर-शऊरी तौर पर बुतों की क़सम निकल जाए तो फ़ौरन ला इला-ह इल्लल्लाहु पढ़ कर तौहीद का इक़रार कर ले। मालूम हुआ कि अल्लाह के सिवा किसी चीज़ की क़सम न खाई जाए। अगर ग़ैर-शऊरी तौर पर ग़ैर-अल्लाह की क़सम ज़ुबान से निकल जाए तो फ़ौरन तौबा की जाए, मुश्रिक़ों में जिनकी क़स्में खाई जाती हैं उनकी क़सम खाने से ईमान में ख़लल आता है।

नज़्रों के बारे में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़ैसला

أَخْرَجَ أَبُوْدَاوُدَ عَنْ ثَابِتِ بْنِ ضَحَّاكٍ ﷺ قَالَ نَذَرَ رَجُلٌ عَلٰى عَهْدِ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ أَنْ يَنْحَرَ إِبِلًا بِبَوَانَةَ فَأَتَى رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ فَأَخْبَرَهُ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ هَلْ كَانَ فِيْهَا وَثَنٌ مِنْ أَوْثَانِ الْجَاهِلِيَّةِ يُعْبَدُ قَالُوْا لَا قَالَ هَلْ كَانَ فِيْهَا عِيْدٌ مِنْ أَعْيَادِهِمْ قَالُوْا لَا فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ أَوْفِ بِنَذْرِكَ فَإِنَّهُ لَا وَفَاءَ لِنَذْرٍ فِيْ مَعْصِيَةِ اللّٰهِ۔

'हज़रत साबित बिन ज़ह्हाक रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि एक आदमी ने रिसालत के दौर में यह नज़्र मानी कि बवाना[1] जाकर ऊंट ज़िब्ह करूंगा, फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आकर आपको अपनी नज़्र की ख़बर दी। फ़रमाया, जाहिलयत के थानों में से कोई थान तो नहीं था? सहाबा ने कहा, नहीं! फ़रमाया, वहां कोई त्यौहार तो नहीं मनाया जाता था। बोले, नहीं। फ़रमाया, अपनी नज़्र को पूरा करो, क्योंकि उस नज़्र को पूरा करना मना है जिसमें अल्लाह की नाफ़रमानी होती हो।' (अबूदाऊद)

मालूम हुआ कि अल्लाह के सिवा किसी और की मन्नत मानना गुनाह है। ऐसी मन्नत को पूरा नहीं करना चाहिए, क्योंकि यह बात ख़ुद गुनाह है, फिर उसे पूरा करना और गुनाह पर गुनाह होगा। यह भी मालूम हुआ कि जिस जगह ग़ैर-अल्लाह के नाम पर जानवर चढ़ाए जाते हों या ग़ैर-अल्लाह की पूजा-पाठ होती हो या जमा होकर शिर्क किया जाता हो, वहां अल्लाह के नाम का भी जानवर न ले जाया जाए और उनमें शिर्कत नहीं करनी चाहिए, भले ही अच्छी नीयत हो या बुरी, क्योंकि उनमें शिर्क ख़ुद मुस्तक़िल बुरी बात है।

अल्लाह को सज्दा और पैग़म्बर अलैहिस्सलाम की ताज़ीम

أَخْرَجَ أَحْمَدُ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ كَانَ فِيْ نَفَرٍ مِنَ الْمُهَاجِرِيْنَ وَالْأَنْصَارِ فَجَاءَ بَعِيْرٌ فَسَجَدَ لَهُ فَقَالَ أَصْحَابُهُ يَارَسُوْلَ

1. एक जगह का नाम है।

اللهِ يَسْجُدُ لَكَ الْبَهَائِمُ وَالشَّجَرُ فَنَحْنُ أَحَقُّ أَنْ نَسْجُدَ لَكَ فَقَالَ اعْبُدُوا رَبَّكُمْ وَاكْرِمُوا أَخَاكُمْ۔

'हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० मुहाजिरीन व अंसार की एक जमाअत में तशरीफ़ रखते थे कि एक ऊंट ने आकर आपको सज्दा किया। सहाबा ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! आपको जानवर और पेड़ सज्दा करते हैं, उनसे ज़्यादा तो हमारा हक़ है कि हम आपको सज्दा करें। फ़रमाया, अपने रब की इबादत करो और अपने भाई की ताज़ीम करो।'

(मुस्नद अहमद)

यानी तमाम इंसान आपस में भाई-भाई हैं, जो बहुत बुज़ुर्ग हो, वह बड़ा भाई है, उसकी बड़े भाई की-सी ताज़ीम करो। सबका मालिक अल्लाह है, इबादत उसी की करनी चाहिए। मालूम हुआ कि जितने अल्लाह के मुक़र्रब बन्दे हैं, चाहे नबी हों या वली, वे सब के सब अल्लाह के बेबस बन्दे हैं और हमारे भाई हैं, मगर अल्लाह तआला ने उन्हें बड़ाई बख़्शी तो हमारे बड़े भाई की तरह हुए। हमें उनकी फ़रमांबरदारी का हुक्म है, क्योंकि हम छोटे हैं, इसलिए उनकी ताज़ीम इंसानों की सी करो और उन्हें इलाह न बनाओ और यह भी मालूम हुआ कि कुछ बुज़ुर्गों की ताज़ीम पेड़ जानवर भी करते हैं, चुनांचे कुछ दरगाहों पर शेर, कुछ पर हाथी और कुछ पर भेड़िए हाज़िर होते हैं, लेकिन इंसानों को उनकी रेस नहीं करनी चाहिए। इंसान अल्लाह तआला की बताई हुई ताज़ीम कर सकता है, इससे आगे नहीं बढ़ सकता, जैसे क़ब्रों पर मुजाविर बन कर रहना शरअ़ शरीफ़ में नहीं है, इसलिए हरगिज़ हरगिज़ मुजाविर न बना जाए, गो उस क़ब्र पर दिन-रात शेर बैठा रहता हो, क्योंकि आदमी को जानवर की नक़ल करना मुनासिब नहीं है।

أَخْرَجَ أَبُوْدَاؤُدَ عَنْ قَيْسِ بْنِ سَعْدٍ ﷺ قَالَ أَتَيْتُ الْحِيْرَةَ فَرَأَيْتُهُمْ يَسْجُدُوْنَ لِمَرْزُبَانٍ لَهُمْ فَقُلْتُ لِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ أَحَقُّ أَنْ يُسْجَدَ لَهُ فَأَتَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ فَقُلْتُ إِنِّيْ أَتَيْتُ الْحِيْرَةَ فَرَأَيْتُهُمْ يَسْجُدُوْنَ لِمَرْزُبَانٍ لَهُمْ فَأَنْتَ أَحَقُّ أَنْ نَسْجُدَ لَكَ فَقَالَ لِيْ أَرَأَيْتَ لَوْ مَرَرْتَ بِقَبْرِيْ أَكُنْتَ تَسْجُدُ لَهُ فَقُلْتُ لَافَقَالَ لَاتَفْعَلُوا۔

'हज़रत क़ैस बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि शहर हियरा में गया। मैंने वहां के लोगों को अपने राजा को सज्दा करते हुए देखा। मैंने दिल में कहा, बेशक अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सज्दा किए जाने के ज़्यादा हक़दार हैं। चुनांचे मैंने आपके पास आकर कहा, मैंने हियरा में लोगों को राजा को सज्दा करते हुए देखा, आप इस बात के ज़्यादा हक़दार हैं कि हम आपको सज्दा करें। फ़रमाया, भला बता तो सही कि अगर तू मेरी क़ब्र पर गुज़रे तो क्या उस पर सज्दा करेगा। मैंने कहा, नहीं, फ़रमाया, यह काम भी न करो।'

—अबूदाऊ

यानी एक न एक दिन मैं भी फ़ौत होकर क़ब्र की गोद में जा सोऊंगा[1], फिर मैं सज्दे के लायक़ न रहूंगा। सज्दे के लायक़ वही पाक ज़ात है जिसे ज़वाल नहीं। मालूम हुआ कि सज्दा न ज़िंदा को सही है और न किसी थान को, क्योंकि ज़िंदा एक दिन मरने वाला है और मरा हुआ भी कभी ज़िंदा था और बशर था, फिर मर कर इलाह नहीं हुआ, बन्दा ही है।

किसी को अपना बन्दा या बन्दी कहना जायज़ नहीं

أَخْرَجَ مُسْلِمٌ عَنْ أَبِىْ هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ لَايَقُوْلَنَّ
أَحَدُكُمْ عَبْدِىْ وَأَمَتِىْ كُلُّكُمْ عَبِيْدُ اللهِ وَكُلُّ نِسَاءِكُمْ إِمَاءُ اللهِ. وَلَايَقُلِ
الْعَبْدُ لِسَيِّدِهِ مَوْلَائِىْ فَإِنَّ مَوْلَاكُمُ اللهُ.

'हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुममें से कोई अब्दी या अमती (मेरा बन्दा, मेरी बन्दी) न कहे। तुम सब अल्लाह के बन्दे हो और तुम्हारी सारी औरतें अल्लाह की बन्दियां हैं। ग़ुलाम अपने सैयद को अपना मालिक न कहे, क्योंकि तुम सबका मालिक अल्लाह है।'

—मुस्लिम

मालूम हुआ कि ग़ुलाम को भी आपस में ऐसी बात-चीत से बचना चाहिए कि मैं फ़्लां का बन्दा हूं और फ़्लां मेरा मालिक है, फिर ख़ामख़ाही बन्दा बनना

---

1. नबी के जिस्मों को मिट्टी नहीं खाती। हदीस में है, 'अल्लाह तआला ने ज़मीन पर हराम कर दिया है कि वह नबियों के जिस्म को खाए।' मतलब यह है कि जिस पर मौत छा सके, वह सज्दे का हक़दार नहीं।

अब्दुन्नबी, बन्दा अली, बन्दा हुज़ूर, परस्तारे ख़ास, अमरद परस्त, ज़न परस्त, परीपरस्त, ख़ुद को कहलवाना और हर किसी को ख़ुदावन्दे ख़ुदायगान और दाता कह देना कितना बेजा है और कितनी बड़ी गुस्ताख़ी है। ज़रा-ज़रा-सी बात में कहना कि तुम हमारी जान और माल के मालिक हो, हम तुम्हारे बस में हैं, जो चाहो, ये सब बातें सिर्फ़ झूठ और शिर्क पर टिकी हुई हैं।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में उस्वा-ए-हस्ना

أَخْرَجَ الشَّيْخَانُ عَنْ عُمَرَ ﷺ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ لَاتَطْرُوْنِىْ كَمَا أَطْرَتِ النَّصَارٰى عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ فَإِنَّمَا أَنَا عَبْدُهُ فَقُوْلُوْا عَبْدُ اللهِ وَرَسُوْلُهُ.

'हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुझे हद से मत बढ़ाना जैसे ईसाइयों ने हज़रत ईसा अलै० को हद से बढ़ा दिया। मैं तो उसका सिर्फ़ बन्दा ही हूं। तुम मुझे अल्लाह का बन्दा और रसूल कहो।'

—बुख़ारी-मुस्लिम

यानी अल्लाह तआला ने मुझे जिन ख़ूबियों और कमालों से नवाज़ा है, वह सब बन्दा और रसूल के कह देने में आ जाता है, क्योंकि बशर के लिए रिसालत से बढ़ कर क्या दर्जा होगा। सारे दर्जे उसके नीचे हैं, मगर बशर रसूल बन कर भी बशर ही रहता है। बन्दा होना ही उसके लिए फ़ख़्र की वजह है। नबी बन कर बशर में अल्लाह की शान नहीं आ जाती और वह अल्लाह की ज़ात में नहीं मिल जाता। बशर को बशर ही के मक़ाम पर रखो, ईसाइयों की तरह न बनो कि उन्होंने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को बशरियत से निकाल कर अल्लाह होने का जामा पहनाया, जिससे ये लोग काफ़िर और मुश्रिक बन गए और अल्लाह का क़हर व इताब उन पर नाज़िल हुआ, इसी लिए पैग़म्बरे इस्लाम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने अपनी उम्मत से फ़रमाया कि ईसाइयों की चाल न चलना और मेरी तारीफ़ में हदसे आगे न बढ़ जाना कि अल्लाह न करे मर्दूदे बारगाहे इलाही हो जाओ, लेकिन अफ़सोस कि इस उम्मत के बे अदबों ने आपका कहा न माना और

ईसाइयों की सी चाल चलना शुरू कर दिया। ईसाई हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को कहते थे कि अल्लाह तआला उनके रूप में ज़ाहिर हुआ था। वह एक तरह से रब हैं। कुछ गुस्ताख़ों ने सरकारे रिसालत की शान में ठीक ऐसा ही कहा है—

'पैग़म्बरों के रूप में हर ज़माने में रब ही आता जाता रहा। आख़िर में वह अरब जैसी शक्ल में आकर, किसी ने यह कहा— दुनिया का बादशाह बन गया।'

'आप हादिस भी हैं और क़दीम भी, मुम्किन भी हैं और वाजिब भी।' ला हौ-ल वला क़ुव-त इल्ला बिल्लाहि। ऐसे शिर्क भरे कलिमे बोले जाते हैं जो न आसमान से उठ सकें, और न ज़मीन से, अल्लाह पाक मुसलमानों को समझ दे। आमीन

बल्कि कुछ झूठों ने एक हदीस गढ़ कर ख़ुद पैग़म्बरे इस्लाम अलैहिस्सलाम की तरफ़ जोड़ दी कि आपने फ़रमाया 'अना अहमद बिला मीम'[1] (मैं बिना मीम के अहमद हूं) यानी मैं अहद हूं (अकेला) हूं। इसी तरह लोगों ने एक लम्बी-चौड़ी अरबी इबारत का नाम -'ख़ुत्बतुलइफ़्तिख़ार' रखा और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ जोड़ दिया, 'सुबहा-न-क हाज़ा बुहतानुन अज़ीम' (ऐ रब : तू हर तरह के शिर्क से पाक है तुझ पर बड़ा भारी बहुतान लगाया गया है।) या 'रब हक़्क़ का बोल बाला और झूठों का मुंह काला हो।' आमीन

जैसे ईसाइयों का यह अक़ीदा है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को दोनों जहान का अख़्तियार है। अगर कोई उनको मान कर उनसे इल्तिजा करता है तो उसे अल्लाह तआला की इबादत की ज़रूरत नहीं। गुनाह उसके ईमान में ख़लल नहीं डालता। उसके हक़्क़ में हराम व हलाल का फ़र्क़ उठ जाता है, वह अल्लाह तआला का सांड बन जाता है जो चाहे करे। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आख़िरत में उसकी सिफ़ारिश करके अल्लाह तआला के अज़ाब से छुड़ा लेंगे। जाहिल मुसलमान ठीक यही अक़ीदा पैग़म्बरे इस्लाम अलैहिस्सलाम के बारे में रखते हैं, बल्कि इमामों और वलियों के हक़्क़ में भी उनका यही अक़ीदा है, बल्कि हर पीर और शेख़ के हक़्क़ में उनका यही अक़ीदा है, अल्लाह तआला हिदायत दे।

---

1. यह हदीस यक़ीनन मौज़ु है।

أَخْرَجَ اَبُوْدَاوُدَ عَنْ مُطَرِّفِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ الشِّخِّيْرِ رضي الله عنه قَالَ اِنْطَلَقْتُ
فِيْ وَفْدِ عَامِرٍ اِلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقُلْنَا اَنْتَ سَيِّدُنَا فَقَالَ السَّيِّدُ اللهُ
فَقُلْنَا وَاَفْضَلُنَا فَضْلًا وَاَعْظَمُنَا طَوْلًا فَقَالَ قُوْلُوْا قَوْلَكُمْ اَوْ بَعْضَ
قَوْلِكُمْ وَلَا يَسْتَجْرِيَنَّكُمُ الشَّيْطَانُ۔

'हज़रत मुत्तरिफ़ बिन अब्दुल्लाह बिन शख़्ख़ीर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि क़बीला बनू आमिर के वफ़्द के साथ मैं भी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। हमने कहा, आप हमारे सैयद हैं। फ़रमाया, सैयद अल्लाह है। फिर हमने कहा, आप हममें अफ़ज़ल हैं और बड़े हैं और ज़्यादा सख़ी हैं। फ़रमाया, हां ये सारी या कुछ बातें कह सकते हो, कहीं शैतान तुमको गुस्ताख़ न बना दे।' —अबूदाऊद

यानी किसी बुज़ुर्ग की शान में ज़ुबान संभाल कर बात करनी चाहिए। उसकी इंसान ही की-सी तारीफ़ करो, बल्कि उसमें भी कमी करो। मुंह ज़ोर घोड़े की तरह मत दौड़ो, कहीं अल्लाह की शान में बे-अदबी न हो जाए।

लफ़्ज़ 'सैयद' के दो मानी

सैयद के दो मानी हैं—

1. ख़ुद मुख़्तार, मालिके कुल, जो किसी का महकूम न हो, आप जो चाहे करे, यह शान अल्लाह तआला ही की है। इस मानी के लिहाज़ से अल्लाह तआला के अलावा कोई सैयद नहीं।

2. पहले हाकिम का हुक्म उसके पास आए और फिर उसकी ज़ुबानी दूसरों तक पहुंचे, जैसे चौधरी, ज़मीदार, इस मानी के लिहाज़ से हर नबी अपनी उम्मत का सरदार है, हर इमाम अपने ज़माने के लोगों का, हर मुज्तहिद अपने मानने वालों का, हर बुज़ुर्ग अपने अक़ीदतमंदों का और आलिम अपने शागिर्दों का सैयद है कि ये बड़े-बड़े लोग पहले हुक्म पर ख़ुद अमल करते हैं, फिर अपने छोटों को सिखाते-पढ़ाते हैं, इस पहलू से हमारे महबूब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तमाम जहान के सैयद हैं। अल्लाह तआला की निगाह में आपका रुत्बा सबसे बड़ा है। आप सबसे ज़्यादा शरई हुक्मों के पाबन्द थे और अल्लाह तआला का दीन सीखने में लोग आप ही के मुहताज हैं। इस मानी के लिहाज़ से आपको सारे जहान का सरदार कहा जा

सकता है, बल्कि कहना चाहिए और पहले मानी के लिहाज़ से एक चींटी का सरदार भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को न माना जाए, क्योंकि आप अपनी तरफ़ से एक चींटी में तसर्रुफ़ करने के मुख़्तार नहीं।

तस्वीर के बारे में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद

أَخْرَجَ الْبُخَارِئُ عَنْ عَائِشَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا أَنَّهَا اِشْتَرَتْ نَمْرَقَةً فِيْهَا تَصَاوِيْرُ فَلَمَّا رَاٰهَا رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ قَامَ عَلَى الْبَابِ فَلَمْ يَدْخُلْ فَعَرَفْتُ فِىْ وَجْهِهِ الْكَرَاهَةَ قَالَتْ فَقُلْتُ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ اَتُوْبُ إِلَى اللّٰهِ وَإِلَى رَسُوْلِهٖ مَاذَا اَذْنَبْتُ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ مَابَالُ هٰذِهِ النَّمْرَقَةِ قَالَتْ قُلْتُ اشْتَرَيْتُهَا لَكَ لِتَقْعُدَ عَلَيْهَا وَتَوَسَّدُهَا فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ إِنَّ اَصْحَابَ هٰذِهِ الصُّوَرِ يُعَذَّبُوْنَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَيُقَالُ لَهُمْ أَحْيُوا مَا خَلَقْتُمْ وَقَالَ إِنَّ الْبَيْتَ الَّذِىْ فِيْهِ الصُّوَرُ لَاتَدْخُلُهُ الْمَلَائِكَةُ۔

'हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा का बयान है कि उन्होंने एक ग़ालीचा ख़रीदा, जिसमें तस्वीरें थीं। जब उसको अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने देखा तो आप दरवाज़े पर ही खड़े रहे, अन्दर नहीं आए। फ़रमाती हैं, मैंने आपके चेहरे से कराहत महसूस की, मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मेरी तौबा है, मैंने क्या गुनाह किया है? फ़रमाया, यह ग़ालीचा कैसा? फ़रमाती हैं, मैंने कहा, मैंने इसको आपके लिए ख़रीदा है ताकि आप इस पर बैठें, और तकिया बनाएं। फ़रमाया, इन तस्वीर वालों पर क़ियामत के दिन यह अज़ाब होगा कि इनसे कहा जाएगा कि अपनी बनाई हुई तस्वीरों को ज़िंदा करो। फ़रमाया, जिस घर में तस्वीरें होती हैं उसमें फ़रिश्ते नहीं आते।'

—बुख़ारी

चूंकि अक्सर मुश्रिक मुर्तियां पूजते हैं, इसलिए फ़रिश्तों और नबियों को तस्वीरों से घिन आती है, इसलिए फ़रिश्ते नहीं आते। तस्वीर बनाने वालों पर अज़ाब होगा कि बुत परस्ती का सामान मुहैया कराते हैं। मालूम हुआ तस्वीर चाहे पैग़म्बर की हो या इमाम की, वली की हो या क़ुतुब की और पीर की हो या मुरीद की, बनानी हराम है और उसका रखना भी हराम है। जो लोग अपने

बुज़ुर्गों की तस्वीरों की ताज़ीम करते हैं और तबर्रुक के तौर पर अपने पास रखते हैं, वे सरासर गुमराह और मुश्रिक हैं।

पैग़म्बर और फ़रिश्ते उनसे घिन करते हैं। मुसलमानों का फ़र्ज़ है कि वे हर क़िस्म की तस्वीर को गन्दा समझ कर अपने घर से दूर कर दें, ताकि रहमत के फ़रिश्ते भी उस घर में आएं-जाएं और घर में बरकत हो।

पांच सबसे सख़्त गुनाह

أَخْرَجَ الْبَيْهَقِيُّ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ أَشَدُّ النَّاسِ عَذَابًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَنْ قَتَلَ نَبِيًّا أَوْ قَتَلَهُ نَبِيٌّ أَوْ قَتَلَ اَحَدُ وَالِدَيْهِ وَالْمُصَوِّرُوْنَ وَعَالِمٌ لَّا يَنْتَفِعُ بِعِلْمِهٖ.

'हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना, आप फ़रमा रहे थे, क़ियामत के दिन सबसे ज़्यादा अज़ाब उस आदमी को होगा जिसने नबी को या जिसको नबी ने क़त्ल किया या जिसने अपने बाप को या मां को क़त्ल किया और तस्वीरें बनाने वाले को और उस आलिम को भी जो अपने इल्म से फ़ायदा न उठाए।'—बैहक़ी

यानी तस्वीर बनाने वाला भी उन बड़े-बड़े गुनाहों में दाख़िल है, तो जो गुनाह पैग़म्बर के क़ातिल को होगा, वही गुनाह तस्वीरें बनाने वालों को होगा।

أَخْرَجَ الشَّيْخَانُ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ قَالَ اللهُ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذَهَبَ يَخْلُقُ كَخَلْقِيْ فَلْيَخْلُقُوا ذَرَّةً أَوْ لِيَخْلُقُوا حَبَّةً أَوْ شَعِيْرَةً.

'हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० से सुना, आप फ़रमा रहे थे कि अल्लाह ने फ़रमाया है, उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा ज़ो मेरी तरह पैदा करने की कोशिश करे, सो भला एक ज़र्रा या एक दाना या एक जौ तो पैदा करके दिखाएं।' —बुख़ारी-मुस्लिम

यानी तस्वीरें बनाने वाला परदे के पीछे से अल्लाह होने का दावा करता है कि अल्लाह के पैदा करने की तरह चीज़ें पैदा करना चाहता है। यह बड़ा गुस्ताख़

और झूठा है, एक दाना तक बनाने की क़ुदरत नहीं, नक़्ल उतारता है, नक़्ल करने वाले मलऊन पर अल्लाह की लानत है।

अपने बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद

أَخْرَجَ رَزِيْنٌ عَنْ أَنَسٍ ﷺ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ إِنِّىْ لَا أُرِيْدُ أَنْ تَرْفَعُوْنِىْ فَوْقَ مَنْزِلَتِىْ الَّتِىْ أَنْزَلَنِيْهَا اللّٰهُ تَعَالٰى أَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللّٰهِ عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔

'हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मैं नहीं चाहता कि तुम मुझे मेरे उस मर्तबे से आगे बढ़ाओ, जिस पर अल्लाह पाक ने मुझे रखा है, मैं मुहम्मद हूं, अब्दुल्लाह का बेटा हूं, अल्लाह का बन्दा हूं और उसका रसूल हैं।[1]' —रज़ीन

यानी जिस तरह और बड़े लोग अपनी तारीफ़ में मुबालग़े से ख़ुश होते हैं, मुझे अपनी तारीफ़ में मुबालग़ा ज़र्रा बराबर भी पसन्द नहीं। इन लोगों को तो मुबालग़ा करने वालों के दीन से कोई वास्ता नहीं होता, चाहे दीन रहे या न रहे,

---

1. इस मज़्मून की रिवायतें मुस्नद अहमद और तबरानी वग़ैरह में मौजूद हैं। मुस्नद अहमद की हदीस के लफ़्ज़ ये हैं—

'एक आदमी ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि आप हमारे सरदार हैं और सरदार के बेटे हैं, तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम ऐसा कह सकते हो, लेकिन ख़बरदार रहना, ऐसा न हो कि शैतान तुम्हें इससे ज़्यादा बढ़ा-चढ़ा कर कहने में ले डूबे। मैं मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह हूं और अल्लाह की क़सम! मुझे यह बात क़तई तौर पर पसन्द नहीं है कि तुम (मेरी तारीफ़ बढ़ा-चढ़ा कर करते हुए) मुझे उस दर्जे से भी बुलन्द कर दो, जो कि अल्लाह तआला ने मुझे अता फ़रमाया है। —अल-बिदाया वन्निहाया, इब्ने कसीर पृ० 420-44

तबरानी की रिवायत के लफ़्ज़ ये हैं—

'हुसैन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया, मुझे मेरे दर्जे से ज़्यादा बुलन्द न करो, क्योंकि अल्लाह तआला ने मुझे अपना रसूल बनाने से पहले मुझे अपना बन्दा बनाया है।' (मालूम हुआ कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नज़दीक 'अब्दियत का मक़ाम' 'रिसालत के मक़ाम' से ज़्यादा बुलन्द दर्जा रखता है।)

—मज्मउज़्ज़वाइद, भाग 9, पृ० 22

लेकिन पैग़म्बरे इस्लाम अलैहिस्सलातु वस्सलामु अपनी उम्मत पर बड़े शफ़ीक़ व मेहरबान हैं। आपको रात-दिन यही फ़िक्र लगा रहता था कि उम्मत का दीन संवर जाए, जब आपको मालूम हुआ कि मेरे उम्मत के लोग मुझसे बड़ी मुहब्बत करते हैं और मेरे बड़े ही एहसानमंद हैं और यह भी मालूम था कि मुहिब्ब (मुहब्बत करने वाला) महबूब (जिससे मुहब्बत की जाए) को ख़ुश करने के लिए आसमान व ज़मीन के क़ुलाबे मिलाया करता है, ऐसा न हो ये तारीफ़ में हद से बढ़ जाएं, जिससे अल्लाह तआला की शान में बे अदबी हो जाए, जिससे उनका दीन ग़ारत हो जाए और मेरी नाराज़ी भी वाजिब हो जाए, इसलिए आपने फ़रमाया कि मुझे मुबालग़ा पसन्द नहीं। मेरा नाम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है, मैं पैदा करने वाला या पालने वाला नहीं, मैं आम लोगों की तरह अपने बाप ही से पैदा हुआ हूं और मेरा शरफ़ बन्दा होने में ही है। अलबत्ता अवाम से मैं इस बात में जुदा हूं कि मैं अल्लाह के अह्काम को जानता हूं, लोग नहीं जानते, इसलिए उन्हें मुझसे अल्लाह का दीन सीखना चाहिए।

ऐ हमारे आक़ा! रहमतुल्लिल आलमीन पर रहमत व सलामती की बारिश फ़रमा, जिस तरह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने 'हम जैसे जाहिलों को दीन सिखाने के लिए सर तोड़ कोशिशें कीं, उनकी क़द्रदानी करने वाला तू ही है, ऐ बुलन्द व बरतर मालिक! हम तेरे आजिज़ ओर बेबस बन्दे हैं, हमारे अख़्तियार में कुछ नहीं। जिस तरह तूने हमें अपने फ़ज़्ल व करम से शिर्क व तौहीद का मतलब ख़ूब समझाया, ला इला-ह इल्लल्लाहु के तक़ाज़ों से ख़ूब ख़बरदार किया और मुश्रिकों से निकाल कर तौहीद परस्त और पाक व साफ़ बनाया, उसी तरह अपने फ़ज़्ल व करम से हमें बिदअत व सुन्नत के मानी अच्छी तरह समझा, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह के कलिमे के तक़ाज़ों से आगाह फ़रमा और बिदअतियों और मुलहिदों से निकाल कर हमें पाक सुन्नी और हदीस व क़ुरआन का फ़रमांबरदार व ताबेदार बना, आमीन, सुम-म आमीन,

व आख़िरु दावाना अनिल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन०

ईमान के दो हिस्से हैं— 1. अल्लाह को इलाहे मुतलक़ समझना, 2. रसूल को रसूल तस्लीम करना, अल्लाह को इलाहे मुतलक़ समझने का मतलब यह है कि उसके साथ किसी को शरीक न किया जाए और रसूल तस्लीम करना यह है कि उन्हीं की राह इख़्तियार की जाए। पहला हिस्सा तौहीद और दूसरा हिस्सा सुन्नत की पैरवी है। तौहीद का उल्टा शिर्क है और सुन्नत का उल्टा बिदअत है। हर मुसलमान का फ़र्ज़ है कि तौहीद और सुन्नत की पैरवी पर मज़बूती से क़ायम रहे, उन्हें सीने से लगाए रखे और शिर्क और बिदअत से बचता रहे।

तक़्वीयतुल ईमान हज़रत शाह इस्माईल शहीद (रह०) की तौहीद के मौज़ूअ पर लिखी गई बहुत ही मशहूर किताब है। उन्होने अक़ीदा व अमल की उन तमाम भयानक गलतियों को, जो इस्लामी तौहीद की तालीम के ख़िलाफ़ थीं अलग-अलग उन्वानों के तहत जमा कर दिया है। इसमें क़ुरआन व हदीस की तर्जुमानी के साथ ख़ालिस इस्लामी अक़ीदे को बयान किया गया है, और किताब व सुन्नत ही की रौशनी में इन तमाम बिदअतों और रस्मों को जिहालत की जड़ क़रार देते हुए मुसलमानों को उससे बचने की हिदायत फ़रमाई गई है।

मौजूदा किताब को मौलवी गुलाम रसूल मेह्र (मरहूम) के ख़्यालात के साथ ही उसकी तमाम पिछली ख़ूबियों के साथ छापा जा रहा है, अलबत्ता आज के दौर की ज़रुरत को देखते हुए कहीं-कहीं लफ़्ज़ और बयान की कुछ तब्दीलियां की गई हैं, और इसको ज़्यादा से ज़्यादा ख़ूबसूरत और दिलनशीं बनाने की कोशिश की गई है।

ISBN 81-7101-534-4 www.idara.co
9 788171 015344 ₹ 45000